शस्त्र पूजन : वीडियो-तस्वीरें वायरल-पिस्टल, रिवॉल्वर, 12 बोर बंदूक, राइफल और थर्टी कार्बाइन जैसे हथियार चमके

अब हथियारों का जखीरा सजाकर दिया 'जवाब'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

प्रतापगढ़. उत्तर प्रदेश के बाहुबली विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया ने विजयादशमी के पावन अवसर पर बेंती महल में शस्त्र पूजन की परंपरा निभाई।

पूजा में करीब 200 से अधिक देशी-विदेशी हथियारों को मेज पर सजाकर जनता के सामने प्रदर्शित किया गया, जो उनकी पत्नी भानवी सिंह के हालिया आरोपों का प्रत्यक्ष जवाब माना जा रहा है। वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं, जिसमें पिस्टल, रिवॉल्वर, 12 बोर बंदूक, राइफल और थर्टी कार्बाइन जैसे हथियारों की चमक साफ नजर आ रही है।

हर वर्ष दशहरे पर शस्त्रागार के हथियारों की करते हैं पूजा

राजा भैया हर वर्ष दशहरे पर अपने शस्त्रागार के हथियारों की पूजा करते हैं, जो क्षत्रिय राजपरंपरा का हिस्सा है। इस बार भी बेंती महल में आयोजित पूजा में हथियारों को विशेष रूप से सजाया गया। सोशल मीडिया पर साझा की गई तस्वीरों में एक लंबी मेज पर हथियारों की पंक्तियां नजर आ रही हैं, जो पूजा के बाद जनता के लिए खोली गईं। राजा भैया के करीबी कुंवर अक्षय प्रताप सिंह उर्फ गोपाल ने कहा, ''सभी हथियार वैध लाइसेंस वाले हैं। जो देखना चाहे, दशहरे पर आ जाए।'' यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है, जब क्षत्रिय शासक शत्रुओं पर विजय के लिए शस्त्रों की आराधना करते थे।

हथियारों की तस्वीरें फेक : राजा भैया के भाई और करीबी अक्षय प्रताप सिंह ने सभी आरोपों को 'बेबुनियाद और एडिटेड' बताया। उन्होंने कहा कि भानवी द्वारा दिखाई गई हथियारों की तस्वीरें AI से बनी फेक हैं, क्योंकि वे दशकों से अलग हैं। 'राजा भैया का कोई नौकर भी बिना लाइसेंस के हथियार नहीं रखता। दशहरे पर हम इनकी पूजा करते हैं– सभी लीगल शस्त्र हैं,' गोपाल ने यह बात जोर देकर कही।

वीडियो पर सीधी प्रतिक्रिया

यह पूजा भानवी सिंह के 18 सितंबर को जारी किए गए वीडियो पर सीधी प्रतिक्रिया है, जिसमें उन्होंने राजा भैया पर अवैध हथियारों के जखीरे रखने का गंभीर आरोप लगाया। वीडियो में भानवी ने दावा किया कि उनके पति के पास ऐसे विदेशी हथियार हैं, जो 'मास डिस्ट्रक्शन' का खतरा पैदा कर सकते हैं और जन सुरक्षा व आंतरिक शांति के लिए खतरा हैं। इससे पहले, 3 जून 2025 को भानवी ने प्रधानमंत्री कार्यालय में शिकायत पत्र सौंपा था, जिसमें राजा भैया पर अवैध हथियार जमा करने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए गए। पीएमओ ने मामले की गंभीरता को देखते हुए गृह मंत्रालय को जांच के निर्देश दिए हैं। भानवी ने कहा कि वे 10 साल से अलग रह रही हैं, फिर भी हथियारों की तस्वीरें कैसे आईं, यह सवाल उठाया।

राजा भैया और भानवी सिंह के बीच विवाद कई वर्षों से चला आ रहा है, जो अब सोशल मीडिया और अदालत तक पहुंच चुका है।

गोपूजन कर सीएम योगी ने की गोसेवा

गोरखपुर @ पत्रिका. गोरखनाथ मंदिर में विजयादशमी के विशिष्ट पूजन के क्रम में गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को मंदिर की गोशाला में गोपूजन किया। गोमाता के माथे पर तिलक लगाकर आशीर्वाद लिया। पूजनोपरांत मुख्यमंत्री ने गोमाता को प्रेम और श्रद्धाभाव से गुड़, पूड़ी और चावल का लड्डू खिलाकर सेवा की। गोसेवा के प्रति योगी बेहद संवेदनशील रहते हैं। उनका गोमाता और गोवंश से आत्मीय लगाव है। विजयादशमी अनुष्ठान के दौरान गोरक्षपीठाधीश्वर ने भीम सरोवर का पूजन कर इसमें रहने वाली मछलियों को भी लाई खिलाई।

दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान नदी में डूबे

आगरा @ पत्रिका. आगरा के खेरागढ़ थाना क्षेत्र की डूंगरवाला उंटगन नदी में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान बड़ा हादसा हो गया। नदी में उतरने वाले 7 युवक तेज बहाव में बह गए। जिससे मौके पर चीख-पुकार मच गई। सूचना मिलते ही खेरागढ़ थाना प्रभारी मदन सिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। मदन सिंह ने वर्दी उतारकर खुद नदी में छलांग लगाई और युवक भोला को नदी से बाहर निकाल लिया। हालांकि उसकी स्थिति गंभीर बताई जा रही है। 6 अन्य युवक अभी लापता हैं। घाट पर मौजूद परिवार की महिलाएं और लड़कियां मां दुर्गा की प्रतिमा को पकड़कर आंसू बहाती रहीं।

बहराइच : नदी में डूबा बुजुर्ग मछुआरा

बहराइच @ पत्रिका. जिले के मोतीपुर अंतर्गत ग्रामसभा गिरगिट्टी के मजरा ठोकरपुरवा गांव निवासी बुजुर्ग मछुआरे की घाघरा नदी में डूबने से मृत्यु हो गई। 65 वर्षीय मानिकचंद पुत्र विंध्याचल की मछली का शिकार करने के दौरान घाघरा नदी में मौत हो गई। शव गुरुवार सुबह ठोकरपुरवा के पास बरामद हुआ। मानिकचंद जालिमनगर क्षेत्र में मछली पकड़ने गए थे, लेकिन नदी में कुछ हादसा होने से वे लापता हो गए थे। नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फोर्स, गोताखोर और प्रशासन ने खोजबीन प्रयास किए।

नकली करेंसी की बरामद, दो गिरफ्तार

बुलंदशहर @ पत्रिका. जिले की खुर्जा कोतवाली नगर पुलिस ने नकली करेंसी छापने वाले दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से डेढ़ लाख रुपए की नकली करेंसी बरामद करने का दावा किया है। बीती रात सूचना के आधार पर खुर्जा नगर के ढांकर रोड पर चेकिंग के दौरान बाइक सवार दो युवकों ने तलाशी के दौरान उनके कब्जे से 200-200 रुपए के 400 नोट और 100-100 रुपए के 705 नकली नोट बरामद किए गए। गिरफ्तार अभियुक्तों का नाम और पता थाना खुर्जा नगर क्षेत्र के ग्राम सिकरी निवासी मुबीन एवं थाना खुर्जा देहात क्षेत्र के ग्राम बिचौला निवासी अंकित के रूप में हुई।

महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनाई

बापू-शास्त्री के सपने साकार कर रही डबल इंजन सरकार

सीएम योगी बोले : राष्ट्रपिता और पूर्व प्रधानमंत्री का राष्ट्रहित में रहा है अविस्मरणीय योगदान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

गोरखपुर. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को दोनों विभूतियों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

गोरखनाथ मंदिर के आवासीय भवन के प्रथम तल पर देश के दोनों महान विभूतियों के चित्र पर पुष्प अर्पित करने के बाद मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपिता और पूर्व प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व और राष्ट्रहित में उनके अविस्मरणीय योगदान को याद करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार बापू और शास्त्री के सपनों को साकार कर रही है।

दिनचर्या का हिस्सा बन रही है खादी: सीएम योगी ने कहा कि स्वदेशी केवल खादी तक सीमित नहीं है बल्कि वर्तमान समय में भारत की दिनचर्या का हिस्सा बन रही है। पीएम मोदी के उद्घोष के अनुरूप स्वदेशी भारत में चिप से लेकर शिप तक आत्मनिर्भरता की गारंटी बन रही है।

मोदी ने स्वच्छता को दी नई ऊंचाइयां : महात्मा गांधी को स्वच्छता सर्वाधिक पसंद थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन के जरिए स्वच्छता को एक नई ऊंचाई दी है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत देश में 12 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं। इससे नारी गरिमा को सम्मान मिला है, साथ ही बीमारियों से बचाव और लोगों को लोगों की आर्थिक बचत भी हुई है। स्वच्छता हमारी पहचान और भारत का ब्रांड है।

स्वाधीनता आंदोलन के अग्रणी पंक्ति के सेनानी थे शास्त्री: सीएम योगी ने लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि शास्त्री स्वाधीनता आंदोलन के अग्रणी पंक्ति के सेनानी थे। वह बापू के प्रखर अनुयायी तथा स्वदेशी से स्वावलंबन के पक्षधर थे। कृषि क्षेत्र की आत्मनिर्भरता का एक मॉडल शास्त्री जी ने दिया था। उन्होंने जय जवान जय किसान का नारा देकर खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के संकल्प को मजबूत किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को दोनों विभूतियों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

स्वदेशी ब्रांड में उत्तर प्रदेश की प्रगति का किया उल्लेख

सीएम योगी ने बताया कि 25 से 29 सितंबर तक ग्रेटर नोएडा में राज्य सरकार ने यूपी के उत्पादों को प्लेटफार्म देने और उन्हें वैश्विक बाजार तक पहुंचाने के लिए उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो का आयोजन किया था। उन्होंने स्वदेशी ब्रांड में उत्तर प्रदेश की प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा कि आज यूपी के डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग कॉरिडोर में ब्रह्मोस मिसाइल बन रही है। एके रायफल का निर्माण हो रहा है। हरदोई में बब्ले स्कॉट पिस्टल का उत्पादन प्रारम्भ हो गया है। स्वदेशी के मामले में उत्तर प्रदेश ने ऊंची छलांग लगाई है।

गांधी के मूल्यों और आदर्शों में स्वदेशी का महत्वपूर्ण स्थान

राष्ट्रपिता की स्मृतियों को नमन करते हुए सीएम ने कहा कि सत्य और अहिंसा की ताकत क्या होती है, इसका अहसास स्वाधीनता आंदोलन में गांधी के नेतृत्व में भारत ने पूरी दुनिया को कराया। गांधी के मूल्यों और आदर्शों में स्वदेशी का महत्वपूर्ण स्थान रहा। विदेशी हुकूमत को उखाड़ फेंकने में सत्य अहिंसा मार्ग के साथ स्वदेशी एकता सूत्र में बांधा।

स्वदेशी मेला आयोजित करने के निर्देश

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि स्वदेशी को और बढ़ावा देने के लिए उन्होंने दीपावली के पूर्व प्रदेश के प्रत्येक जनपद में उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो की तर्ज पर स्वदेशी मेला आयोजित करने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही आज से प्रदेश में खादी वस्तुओं के क्रय पर 25 प्रतिशत छूट का भी शुभारंभ हो रहा है।

नोएडा में वायरल पोस्टर पर सियासी संग्राम तेज

सपा कार्यकर्ताओं ने थाने के सामने किया विरोध-प्रदर्शन

'एक्स' पर वायरल पोस्टर ने गर्मा दिया राजनीतिक माहौल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नोएडा. विजयादशमी अवसर पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर वायरल पोस्टर ने राजनीतिक माहौल को गर्मा दिया है। समाजवादी पार्टी (ने इस पोस्टर को बेहद आपत्तिजनक करार देते हुए थाना सेक्टर-24 में विरोध दर्ज कराया। पार्टी कार्यकर्ताओं ने थाने के बाहर नारेबाजी की और आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग को लेकर पुलिस को शिकायत पत्र सौंपा।

मामला एक ऐसे पोस्टर से जुड़ा है जो एक्स पर वायरल हो रहा है। पोस्टर में प्रधानमंत्री को हवन करते दर्शाया गया है, उसके ऊपरी हिस्से में लिखा है, "जब-जब धर्म की स्थापना होती है, तब-तब असुरों को परेशानी होती है।'' ठीक ऊपर राहुल गांधी, अखिलेश यादव और ममता बनर्जी की तस्वीरों को कथित रूप से 'राक्षस रूप' में प्रदर्शित किया गया है।

लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी हमला: कार्यकर्ताओं ने पुलिस स्टेशन के बाहर जमकर नारेबाजी की और कहा कि इस तरह के पोस्टर समाज में नफरत फैलाने का काम करते हैं। यह न केवल विपक्षी नेताओं का अपमान है बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी हमला है। पुलिस को सौंपे गए ज्ञापन में बताया कि यह पोस्टर कथित तौर पर नोएडा के चौड़ा गांव निवासी एक युवक द्वारा बनाया और शेयर किया गया है।

पुलिस ने दिया जांच का आश्वासन : सपा कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं की गई तो वे व्यापक आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। उनका कहना है कि राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हैं, परंतु मर्यादा का उल्लंघन किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

मुठभेड़ : आत्मरक्षा में पुलिस ने की फायरिंग

रामपुर : रेप का आरोपी तांत्रिक घायल, पुलिस ने किया गिरफ्तार

मुठभेड़ के दौरान रेप के आरोपी तांत्रिक गुलफाम को किया गिरफ्तार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रामपुर . उत्तर प्रदेश में रामपुर जिले की स्वार कोतवाली पुलिस ने बुधवार देर रात एक मुठभेड़ के दौरान रेप के आरोपी तांत्रिक गुलफाम को गिरफ्तार कर लिया। यह मुठभेड़ नरपत नगर के जंगल में गुलड-पीपलसाना मार्ग पर हुई। पुलिस की जवाबी फायरिंग में गुलफाम के पैर में गोली लगी, जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर जिला अस्पताल में इलाज के लिए भेजा गया।

गंभीर धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज: पुलिस के अनुसार, मिलक खानम का निवासी गुलफाम तांत्रिक का काम करता है। उस पर एक महिला से रेप, अश्लील वीडियो बनाने और उसका इस्तेमाल कर बार-बार शारीरिक शोषण करने का आरोप है। पीड़िता की शिकायत पर स्वार कोतवाली में गंभीर धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। इसके बाद से पुलिस गुलफाम की तलाश में जुटी थी। बुधवार रात करीब 11 बजे पुलिस गश्त पर थी, तभी गुलफाम मोटरसाइकिल पर दिखाई दिया। पुलिस ने उसे रोकने का इशारा किया, लेकिन उसने भागने की कोशिश की और पुलिस पर अवैध तमंचे से गोली चलाई। आत्मरक्षा में पुलिस ने जवाबी फायरिंग की, जिसमें गुलफाम के पैर में गोली लगी और वह घायल हो गया। पुलिस ने उसे तुरंत हिरासत में लिया और मौके से तमंचा व मोटरसाइकिल बरामद की।

घायल गुलफाम जिला अस्पताल में भर्ती

घायल गुलफाम को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है। स्वार कोतवाली पुलिस ने उसके खिलाफ हत्या का प्रयास और अन्य धाराओं में भी मामला दर्ज किया है। पुलिस अब यह जांच कर रही है कि गुलफाम के खिलाफ और कितने मामले दर्ज हैं।

बुलडोजर कार्रवाई की निंदा | 'आई लव मोहम्मद' लिखने या पोस्टर लगाने से कोई गलत संदेश नहीं

सपा सांसद का 'आई लव मोहम्मद' पोस्टर पर समर्थन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

संभल. उत्तर प्रदेश के संभल से समाजवादी पार्टी के सांसद जिया उर रहमान बर्क ने विवाद के बीच 'आई लव मोहम्मद' पोस्टर का समर्थन किया है।

उन्होंने कहा कि 'आई लव मोहम्मद' जैसे शब्दों में कुछ भी गलत नहीं है। इस पोस्टर से किसी की आस्था प्रभावित नहीं होती है और न ही इससे कोई गलत संदेश जाता है।

सभी को मजहब-समाज के लिए करना चाहिए काम

सांसद जिया उर रहमान बर्क ने बरेली हंगामे की घटना पर कहा, ''पैगंबर मोहम्मद का संदेश यही था कि कहीं भी शांति व्यवस्था भंग नहीं होनी चाहिए। सभी को सुकून के साथ अपने मजहब और समाज के लिए काम करना चाहिए। बरेली की घटना को लेकर मैंने अपील की थी कि शांति व्यवस्था कायम रहे। प्रशासन से भी अपील की थी कि दबाव में आकर कोई ऐसी कार्रवाई न हो, जिससे मासूम लोगों की गिरफ्तारी न हो।''

'आई लव मोहम्मद' पोस्टर विवाद पर उन्होंने कहा कि हम अपने मजहब से मोहब्बत करते हैं, जैसे हम देश से मोहब्बत करते हैं। 'आई लव मोहम्मद' लिखने या पोस्टर लगाने से कोई गलत संदेश नहीं जाता है। सपा सांसद ने यह भी कहा कि हम लोग संविधान पर विश्वास रखने वाले लोग हैं।

बुलडोजर एक्शन कार्रवाई ठीक नहीं

इस दौरान, बुलडोजर एक्शन पर जिया उर रहमान बर्क ने कहा कि इस तरह की कार्रवाई बिल्कुल ठीक नहीं है। सुप्रीम कोर्ट भी ऐसे मामलों में टिप्पणी कर चुका है, लेकिन उत्तर प्रदेश में सरकार के आदेश पर बुलडोजर कार्रवाई हो रही है, जो गलत है। वर्क ने सवाल उठाया कि जिन लोगों ने मकबरे पर पुलिस के सामने हंगामा किया, उनके खिलाफ समान कार्रवाई क्यों नहीं हुई? अगर बुलडोजर चलना है, तो सबके खिलाफ चले। कानून एक है तो कार्रवाई भी समान होनी चाहिए।

दिलों के रावण को भी जलाना चाहिए

दशहरा के पर्व को लेकर सपा सांसद जिया उर रहमान बर्क ने कहा, ''जिस तरह हर साल रावण दहन करके दशहरा मनाया जाता है, यह सिर्फ बाहरी नहीं है, सभी को अपने दिलों के भीतर के रावण को भी जलाना चाहिए। कुछ लोग हैं, जिनकी मानसिकता बिल्कुल अलग है। अगर वे सही रास्ते चलें, वाकई उनके अंदर देशभक्ति की भावना है और अपने धर्म के प्रति वफादार हैं तो यह चीजें तभी लागू होंगी, जब वे सर्व धर्म के साथ-साथ देश के लिए काम करेंगे।''

गांधी-शास्त्री जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर नमन किया

गांधी की सत्य-अहिंसा के विचार आज भी विश्व के मार्गदर्शक : सीएम सोरेन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रांची. झारखंड में गांधी जयंती के अवसर पर राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं विधायक कल्पना सोरेन ने मोरहाबादी स्थित बापू वाटिका में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री सोरेन ने कहा कि महात्मा गांधी के विचार, उनकी अहिंसा एवं सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा आज भी पूरे देश और विश्व के लिए मार्गदर्शक हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज का दिन भारत के इतिहास का स्वर्णिम दिवस है। गांधी जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनकी शिक्षा और सिद्धांतों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी बल्कि आजादी के बाद भी लोकतंत्र को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई।

उन्होंने कहा कि ऐसे महान विभूतियों के आदर्श और त्याग ही हैं जिनकी वजह से आज भारत एक सशक्त और गौरवशाली लोकतंत्र के रूप में दुनिया के सामने खड़ा है।

रांची के मोहराबादी स्थित बापू वाटिका में राष्ट्रपिता की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित करते राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार, सीएम हेमंत सोरेन और उनकी विधायक पत्नी कल्पना सोरेन।

'जय जवान, जय किसान' आज भी देशवासियों के लिए प्रेरणा

मुख्यमंत्री सोरेन ने देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर भी उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी सादगी, ईमानदारी एवं कर्मठता की मिसाल थे। उनके दिए गए नारे 'जय जवान, जय किसान' आज भी देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी के जीवन से हमें कर्तव्यपरायणता, देशभक्ति और जनसेवा की सीख मिलती है, जिसे आत्मसात कर हम झारखंड और भारत को और सशक्त बना सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर समस्त राज्यवासियों से आह्वान किया कि हम सभी अपने जीवन में पूरी संजीदगी से बापू के सिद्धांतों को अपनाएं और समाज में शांति, भाईचारा एवं एकता के माहौल को और मजबूती दें।

सांप के काटने से बच्चे की मौत

छपरा @ पत्रिका. बिहार में सारण जिला के दरियापुर थाना क्षेत्र में बुधवार देर शाम सांप के काटने से एक बच्चे की मौत हो गई। सरैया टोला गांव निवासी लक्ष्मण महतो का पुत्र रत्नेश कुमार महतो (7) खेतों की तरफ टहलते हुए चला गया था, किसी विषैले सांप ने उसे काट लिया। परिजन उसे इलाज के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले गये, जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया।

ट्रेन से कट कर युवक की मौत

छपरा @ पत्रिका. बिहार में सारण जिला के छपरा जंक्शन रेलवे स्टेशन से पश्चिम मुफस्सिल थाना क्षेत्र में बुधवार देर शाम ट्रेन से कटकर एक युवक की मौत हो गई है। मिश्रवलिया गांव निवासी भोला मांझी का पुत्र संजय मांझी (24) हिरानी बाग के समीप रेलवे लाइन पार करने के दौरान ट्रेन की चपेट में आ गया, जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई। वहां रास्ते से गुजर रहे लोगों ने घटना की सूचना पुलिस थाने को दी।

शास्त्रीनगर पार्क व गांधी मैदान में आयोजन

गांधी-शास्त्री के कृतित्व व व्यक्तित्व को किया नमन

बिहार के गांधी पार्क में महात्मा गांधी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करते मुख्यमंत्री नीतीश कुमार।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पटना. बिहार में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उनकी जीवनी से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया। राजधानी पटना के शास्त्रीनगर पार्क में राजकीय जयंती समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शास्त्रीनगर पार्क में स्थापित लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

इधर, राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गांधी मैदान स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उनके व्यक्तितत्व एवं कृतित्व का स्मरण किया। मुख्यमंत्री कुमार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों को जीवन में उतारने का संकल्प भी लिया।

स्कॉर्पियो कंटेनर से टकराई, 3 की मौत

7 गंभीर रूप से घायल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पटना. कैमूर एनएच 19 पर दुर्गावती थाना क्षेत्र के चिपली गांव के समीप सड़क हादसे में महिला समेत तीन लोगों की मौत हो गई।

बताया जा रहा है कि तेज रफ्तार स्कॉर्पियो पहले से खड़े कंटेनर से जा टकराई। हादसा इतना भीषण था कि मौके पर ही तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि सात अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही दुर्गावती थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया। घायलों को स्थानीय अस्पताल लाया गया, जहां से प्राथमिक इलाज के बाद वाराणसी ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार तीनों मृतकों में झारखंड निवासी मुस्लिम अंसारी उम्र 45 और रोहतास निवासी मुन्ना अंसारी उम्र 43 और रजिया खातून उम्र 60 के रूप में की गई है। वहीं घायल रोहतास के तिरकुलिया के रहने वाले हैं।

घटना के बाद गांव में पसरा मातम

पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती करवा, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। घटना के बाद मृतकों के गांवों में मातम पसरा हुआ है। दुर्गावती थाना अध्यक्ष गिरीश कुमार ने बताया कि दुर्गावती थाना क्षेत्र के छज्जूपुर पोखरे के समीप एक कंटेनर में पीछे से स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी है। इस घटना में एक महिला सहित तीन की मौत हुई है। बाकी अन्य सात लोग घायल हैं। जिनका इलाज चल रहा है। सभी तीनों शव को कब्जे में कर पंचनामा करने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

'समाज के विघटनकारी शक्तियों से रहें सतर्क'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रांची. झारखंड में सोमा टाना भगत स्मारक समिति के तत्वावधान में बीजुपाड़ा चौक पर महात्मा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री एवं सोमा टाना भगत जयंती समारोह का आयोजन किया गया।

इस समारोह में कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, पूर्व मंत्री बंधु तिर्की, स्मारक समिति के पदाधिकारी सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र की जनता मौजूद रही। कृषि मंत्री ने सामाजिक कार्यकर्ता, जन जनप्रतिनिधि, मूर्तिकार, शिल्पकारों को सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में मनीष उरांव भी शामिल था, जिसने पिछले दिनों भारी बारिश के बाद बांध में बह रहे अपने दो साथियों की जान बचाई।

दशहरा पर बिहार भाजपा को झटका

जनार्दन ने छोड़ा भाजपा का साथ, जनसुराज में हो गए शामिल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पटना. बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी घमासान जारी है। जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर लगातार भाजपा पर हमलावर हैं। पिछले कुछ दिनों से उन्होंने भाजपा के शीर्ष नेताओं के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। अब उन्होंने भाजपा को बड़ा झटका दिया है।

पार्टी के वरिष्ठ नेता और चार बार के विधायक रहे जनार्दन यादव को अपने साथ कर लिया है। जनार्दन यादव ने भाजपा का साथ छोड़ दिया है। उन्होंने प्रशांत किशोर का हाथ थाम लिया और जनसुराज में शामिल हो गए। प्रशांत किशोर ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई।

जनार्दन यादव का स्वागत करते जनसुराज के प्रशांत किशोर।

भाजपा विधायक जनता से असंतुष्ट-जनार्दन यादव: इधर, अररिया जिले की राजनीति में मजबूत पकड़ रखने वाले जनार्दन यादव ने एनडीए सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। उन्होंने कहा राज्य में पलायन, अपराध और भ्रष्टाचार चरण पर है। भाजपा विधायक के जनता असंतुष्ट है।

दुर्गाबाड़ी, कोकर, बारीडीह, अपर बाजार, लालपुर के पंडाल में आयोजन

सिंदूर खेला कर माता दुर्गा को दी विदाई

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रांची. विजयादशमी पर्व केवल बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक नहीं, बल्कि मां दुर्गा के विदाई का दिन भी माना जाता है। इस अवसर पर बंगाली समुदाय की महिलाओं द्वारा परंपरागत ढंग से सिंदूर खेला की रस्म निभाई गई। राजधानी रांची के दुर्गाबाड़ी दुर्गा स्थान, कोकर, बारीडीह, अपर बाजार, लालपुर और शहर के अन्य प्रमुख पूजा पंडालों में महिलाओं का उत्साह देखते ही बन रहा था। सुहागिन महिलाएं परंपरागत सफेद साड़ी में लाल बॉर्डर पहनकर पूजा पंडाल पहुंचीं।

उनके हाथों में थाल सजाए गए थे, जिसमें सिंदूर, मिठाई और पूजा की सामग्री रखी हुई थी। सबसे पहले महिलाओं ने मां दुर्गा की प्रतिमा को सिंदूर अर्पित किया और फिर एक-दूसरे को सिंदूर लगाकर सौभाग्य और समृद्धि की मंगलकामना की। इस दौरान पूरे मंडप में "जय माँ दुर्गा" और ढाक-ढोल की गूंज से वातावरण भक्तिमय हो उठा।

भावुक महिलाओं के छलक उठे आंसू

दुर्गा पूजा पंडाल में एक दूसरे को सिंदूर लगाती महिलाएं।

रांची के साथ-साथ हजारीबाग शहर के झंडा चौक स्थित बंगाली दुर्गा मंडप में भी सिंदूर खेला का आयोजन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। यहां सुबह से ही महिलाओं और श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी रही। मां दुर्गा की विदाई के क्षण आते ही महिलाएं भावुक हो उठीं। कई महिलाएं एक-दूसरे को गले लगाकर आंसू पोंछती दिखीं।

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

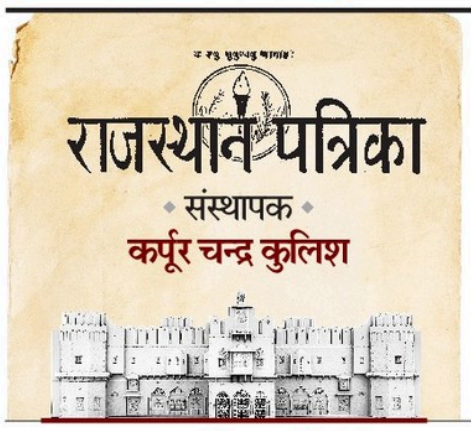

रिजर्व बैंक के सुधार पैकेज से बाजार को नई ऊर्जा

रिजर्व बैंक ने बुधवार को जिस व्यापक सुधार पैकेज की घोषणा की है, वह न केवल बैंकिंग क्षेत्र की दिशा बदलने वाला है, बल्कि कॉर्पोरेट ऋण, पूंजी बाजार और वित्तीय पारदर्शिता की पूरी संरचना को नया आकार देगा। एक दशक से अधिक समय बाद रिजर्व बैंक ने ऐसा बड़ा कदम उठाया है, जिसमें बैंकों को अधिक लचीलापन, कंपनियों को सस्ता ऋण और पूंजी बाजार को नई ऊर्जा देने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रुपए को मजबूत करने का स्पष्ट संदेश नजर आ रहा है। इन उपायों का मुख्य उद्देश्य 10,000 करोड़ रुपए से अधिक के बैंक ऋण वाली कंपनियों के लिए ऋण के नियमों को आसान बनाना है, जिसमें पिछली सीमा और अतिरिक्त पूंजी आवश्यकताओं को हटा दिया गया है, जिससे ऋण देना महंगा हो गया था।

नए सुधारों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि ऋण की पहुंच का विस्तार होगा। आइपीओ फाइनेंसिंग की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 25 लाख रुपए और शेयरों पर ऋण सीमा 20 लाख से बढ़ाकर एक करोड़ रुपए कर दी गई है। सूचीबद्ध ऋण प्रतिभूतियों (लिस्टेड डेट सिक्योरिटीज) पर ऋण की सीमा हटाना एक और साहसिक कदम है, जिससे निवेशकों और कंपनियों दोनों को नया सहारा मिलेगा। अब तक भारतीय बैंक कॉर्पोरेट अधिग्रहण या इक्विटी-आधारित फाइनेंसिंग से दूरी बनाए रखते थे। इस कारण भारतीय कंपनियों को महंगे एनबीएफसी, प्राइवेट इक्विटी फंडों या विदेशी कर्जदाताओं पर निर्भर रहना पड़ता था। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र अधिग्रहण वित्तपोषण की वैश्विक दौड़ से पिछड़ गया। दो दशक के अंतराल के बाद नए शहरी सहकारी बैंकों के लिए लाइसेंसिंग फिर शुरू करना भी महत्त्वपूर्ण है। यह कदम छोटे शहरों और कस्बों में बैंकिंग पहुंच को बढ़ाएगा और वित्तीय समावेशन को मजबूत करेगा। इस सुधार पैकेज को केवल बैंकिंग या वित्तीय क्षेत्र की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की गति, पूंजी बाजार की गहराई और वैश्विक प्रतिस्पर्धा, खासकर 'ट्रंप टैरिफ' के बाद उत्पन्न हुए आर्थिक परिदृश्य में देश की स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था को अगले दशक में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की आधारशिला साबित हो सकता है।

हालांकि, इन सुधारों के साथ जोखिम भी जुड़े हुए हैं। लीवरेज्ड बायआउट जैसे मॉडल पश्चिमी देशों में सफल रहे हैं, लेकिन उनके साथ डिफॉल्ट और वित्तीय संकट के खतरे भी रहे हैं। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट की जड़ें भी आंशिक रूप से आक्रामक अधिग्रहण वित्तपोषण से जुड़ी थीं। इसलिए, भारतीय संदर्भ में यह आवश्यक है कि निगरानी और जोखिम प्रबंधन के सख्त ढांचे लागू हों। यदि इन सुधारों को अविवेकपूर्ण तरीके से लागू किया गया तो परिणाम उल्टा भी हो सकता है। रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा है कि अलग-अलग बैंकों के स्तर पर ऋणों की निगरानी जारी रहेगी और आवश्यकता पड़ने पर प्रणालीगत सुरक्षा उपाय अपनाए जाएंगे। यह भरोसा दिलाता है कि सुधारों के साथ-साथ विवेक भी बरता जाएगा।

अमरीका में संकट: भारत का लोकतांत्रिक ढांचा कई अर्थों में अमरीका से कहीं अधिक व्यावहारिक है

लोकतंत्र के कमजोर पक्ष को उजागर करता 'शटडाउन'

डॉ. मिलिंद कुमार शर्मा
प्रोफेसर, एमबीएम विवि, जोधपुर
@patrika.com

भारत में शटडाउन जैसी स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हो सकती है। यहां बजट पारित होना केवल आर्थिक निर्णय नहीं, बल्कि सरकार के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। यदि बजट संसद में पारित नहीं होता, तो यह सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव माना जाता है।

अमरीका इस समय जिस समस्या का सामना कर रहा है, उसे शटडाउन कहा जाता है। शटडाउन अर्थात सरकार का बजट तय समय पर पारित न होने के कारण सरकारी कामकाज रुक जाना। जब अमरीकी संसद 'कांग्रेस' और राष्ट्रपति प्रशासन परस्पर सहमति से खर्चों और नीतियों पर निर्णय नहीं कर पाते, तब सरकारी संस्थाओं को धन नहीं मिल पाता जिसके फलस्वरूप वे सेवाएं प्रदान करना बंद कर देती हैं। इससे लाखों कर्मचारी प्रभावित होते हैं, अनेक विभाग बंद हो जाते हैं और जनता को मूलभूत सेवाओं से वंचित होना पड़ता है। निःसंदेह इस शटडाउन ने वहां राजनीति, अर्थव्यवस्था व व्यापार को गहराई से प्रभावित किया है। वहां अतिआवश्यक सेवाओं के अतिरिक्त सभी सेवाएं ठप पड़ गई हैं।

अमरीकी शटडाउन का सबसे पहला प्रभाव सरकारी कर्मचारियों व मध्यम वर्ग पर पड़ता है। हजारों कर्मचारी महीनों तक बिना वेतन के घर पर बैठने को बाध्य हो जाते हैं। कर्मचारी कटौती 'फरलो और लेऑफ' सभी सेवाओं में घोषित किया जा चुका है। इससे उनका दैनिक जीवन व गतिविधियां प्रभावित हो क्रय शक्ति घट जाती है। फलस्वरूप जिसके बाजार मांग घट जाती है। मांग कम होने से उत्पादन पर दुष्प्रभाव पड़ता है और पूरी अर्थव्यवस्था धीमी होने की आशंका रहती है। अमरीका में तकनीक के कई छोटे और मध्यम उद्योगों को सरकार से लाइसेंस और अनुमतियां लेनी होती हैं। जब सरकारी विभाग बंद हो जाते हैं, तब ये प्रक्रियाएं रुक जाती हैं। जिन कंपनियों को नए प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए अनुमति चाहिए, उन्हें महीनों प्रतीक्षारत रहना पड़ता है। इससे उद्योगों को भारी क्षति होती है। साथ ही बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों पर भी दबाव बढ़ जाता है। पर्यटन, हवाई यात्रा और खुदरा व्यापार जैसे क्षेत्र तो तुरंत प्रत्यक्ष प्रभावित होते हैं क्योंकि इनमें उपभोक्ताओं की क्रयशक्ति में कटौती हो जाती है।

विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण इस शटडाउन का प्रभाव केवल अमरीका तक सीमित नहीं रहता, अपितु पूरे विश्व तक पहुंचता है। अंतरराष्ट्रीय निवेशक अमरीकी स्थिति देखकर चिंतित हो जाते हैं। डॉलर की स्थिरता पर प्रश्न खड़े होने लगते हैं और विदेशी निवेशक अपने धन सुरक्षित रखने के लिए अन्य विकल्प खोजने लगते हैं। जिन देशों की अर्थव्यवस्था अमरीका के व्यापार पर अधिक निर्भर है, वे भी अछूते नहीं रह पाते हैं। विपक्षी डेमोक्रेटिक दल के स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा के मदों में रिपब्लिकन दल की सरकार द्वारा प्रस्तावित कटौतियां इस राजनीतिक गतिरोध का प्रमुख कारण बना हुआ है। इसके अतिरिक्त रिपब्लिकन दल के भीतर भी एक धड़ा सख्त खर्च कटौती की मांग करता है, जबकि दूसरा धड़ा इसे अव्यावहारिक मानता है। सामान्यतः बहुमत वाला दल अपने अनुरूप बजट पारित करा सकता है, किंतु किसी भी प्रस्ताव को अमरीकी कांग्रेस में पारित कराने के लिए साठ प्रतिशत से अधिक सदस्यों का समर्थन आवश्यक होता है, जिसे वहां की शब्दावली में 'सिक्सटी प्लस रूल' कहते हैं। रिपब्लिकन दल में आंतरिक मतभेदों व विपक्षी दल के भारी विरोध के चलते एकमत नहीं हो पाने के फलस्वरूप कांग्रेस में बजट पारित नहीं हो पाने के कारण पूरी सरकारी कामकाज व्यवस्था ठप-सी प्रतीत दिख पड़ती है।

यह विश्व के सबसे पुराने लोकतंत्र के कमजोर पक्ष को भी उजागर करता है कि बहुमत होने के बाद भी राजनीतिक ध्रुवीकरण प्रशासन को पंगु बना देता है। यदि हम भारत के लोकतंत्र की ओर देखें तो यहां स्थिति बिल्कुल भिन्न है। भारत में संसद की संसदीय प्रणाली ऐसी बनाई गई है कि वहां शटडाउन जैसी स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हो सकती है। यहां बजट पारित होना केवल आर्थिक निर्णय नहीं, बल्कि सरकार के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। यदि बजट संसद में पारित नहीं होता, तो यह सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव माना जाता है। इसका सीधा अर्थ है कि सरकार को सत्ता से हटना पड़ेगा और नई सरकार का गठन होगा। इस कारण सभी राजनीतिक दल यह सुनिश्चित करते हैं कि बजट समय पर पारित हो और जनता के कामकाज में कोई व्यवधान न आने पाए। भारत की व्यवस्था की यही सबसे बड़ी विशेषता है कि राजनीतिक मतभेद कितने भी हों, जनता से जुड़े काम कभी ठप नहीं पड़ते। भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दल वाद-विवाद और विरोध करते हैं, लेकिन अंततः राष्ट्रीय हित और जनता की सुविधाओं को प्राथमिकता दी जाती है। यही कारण है कि भारत में प्रशासनिक कामकाज निरंतर चलता रहता है और शटडाउन जैसी स्थिति कभी पैदा नहीं होती वहीं अमरीका में गत कुछ वर्षों में ही यह घटना तीसरी बार देखी गई है। इसके अतिरिक्त भारतीय प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में बहुमत का सम्मान किया जाता है। यदि सरकार के पास बहुमत है तो शेष दल विरोध के उपरांत भी बजट को पूरी तरह रोकने की स्थिति में नहीं आ सकते हैं। साथ ही यदि जनता के हितार्थ विषयों पर बहुमत वाली पार्टी समझौता न करे तो उसे सत्ता से हाथ भी धोना पड़ सकता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि हमारी लोकतान्त्रिक प्रणाली अमरीकी लोकतंत्र से कहीं अधिक स्थिर और व्यावहारिक सिद्ध दिखाई पड़ती है।

अमरीका का वर्तमान शटडाउन यह दिखाता है कि जब राजनीतिक दल अपनी विचारधाराओं और स्वार्थों को राष्ट्रीय हित से ऊपर रख देते हैं तो पूरा सरकारी तंत्र प्रभावित होता है। वहीं भारत का लोकतंत्र यह संदेश देता है कि असहमति और वाद-विवाद लोकतंत्र की शक्ति हैं, लेकिन इन असहमतियों के कारण जनता के हितों पर कुठाराघात नहीं होना चाहिए। स्पष्ट है कि भारत का लोकतांत्रिक ढांचा कई अर्थों में अमरीका से अधिक व्यावहारिक है जहां कि राजनीतिक अस्थिरता के उपरांत भी प्रशासनिक स्थिरता बनाए रखी जा सकती है।

प्रसंगवश

चिंताजनक है बढ़ते सड़क हादसों की भयावह तस्वीर

हादसे रोकने के लिए आमजन का सहयोग होना बेहद जरूरी

गिलास आधा खाली है या आधा भरा, यह अवधारणा हर किसी ने अपने-अपने हिसाब से समझी है। सच तो यह है कि दोनों ही परिस्थितियां मौजूद हैं। एनसीआरबी यानी राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के हाल में जारी 2023 के आंकड़े राजस्थान की सड़क सुरक्षा की भयावह तस्वीर पेश करते हैं। इनको लेकर प्रदेश की पुलिस का कहना है कि ब्यूरो के आंकड़े दो साल पुराने हैं, जबकि पुलिस मुख्यालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार अपराधों में कमी आई है। खैर, आंकड़े चाहे पुराने हों या ताजा, चिंता की बात यह है कि प्रदेश की सड़कें सुरक्षित नहीं हैं। एनसीआरबी रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में हर 44 मिनट में एक व्यक्ति सड़क हादसे में अपनी जान गंवा देता है। सबसे अधिक डराने वाला तथ्य यह है कि प्रदेश में सर्वाधिक हादसे जयपुर में हो रहे हैं। जब राजधानी ही हादसों में नंबर वन है, तो बाकी हिस्सों की स्थिति सहज ही कल्पना की जा सकती है।

बढ़ते हादसों के पीछे कई कारण हैं। कई सड़कें संकरी, टूटी-फूटी या गड्ढों से भरी हैं। हाइवे और ग्रामीण सड़कों पर डिवाइडर, संकेतक, स्पीड ब्रेकर और स्ट्रीट लाइट जैसी सुविधाओं का अभाव है। चालक स्पीड लिमिट का पालन नहीं करते और ओवरस्पीडिंग तथा ओवरटेकिंग सामान्य हैं। शराब पीकर वाहन चलाने के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग कम होता है। ट्रैफिक पुलिस की निगरानी सीमित रहती है और चालान कार्रवाई कई बार औपचारिक होती है। पुराने वाहन बिना फिटनेस टेस्ट के सड़क पर दौड़ते हैं। दुर्घटना के बाद एम्बुलेंस या ट्रोमा सेंटर तक समय पर पहुंचना मुश्किल होता है, जिससे 'गोल्डन आवर' का लाभ नहीं मिल पाता। इस तरह के हालात में सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार और प्रशासन को सड़क निर्माण, मरम्मत, ट्रैफिक नियमों का पालन और मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर सुधारना होगा जबकि यातायात पुलिस को सतत निगरानी, चालान और जागरूकता अभियान चलाना आवश्यक है। हादसे रोकना सिर्फ प्रशासन या पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सभी के सहयोग और सामंजस्य से ही सड़क हादसों में कमी लाई जा सकती है।

- महेन्द्र सिंह शेखावत
mahendra.shekhawat@in.patrika.com

बुक इनसाइट

रोचकता से भरपूर 'वी सॉल्व मर्डर्स'

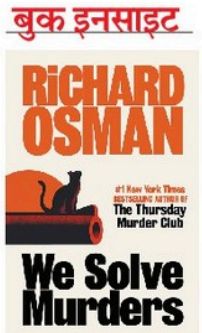

रिचर्ड ओस्मान की नई किताब वी सॉल्व मर्डर्स भारतीय पाठकों के लिए एक रोमांचक और मनोरंजक उपहार है। यह किताब ओस्मान की लोकप्रिय 'द थर्सडे मर्डर क्लब' शृंखला का हिस्सा है। कहानी में एक समूह है, जो अपराधों को सुलझाने में माहिर है। पात्रों का चित्रण इतना जीवंत है कि पाठक उनके साथ जुड़ाव महसूस करता है। ओस्मान की लेखनी में हास्य और गहराई का मिश्रण है, जो इसे साधारण रहस्य कहानी से अलग बनाता है। किताब में अपराध की जटिलताओं को सरल भाषा में पेश किया गया है। किताब की दिलचस्प शुरुआत से पाठक तुरंत पात्रों और घटनाओं से जुड़ सकेंगे। इसमें हत्या की गुत्थियां, रहस्यमयी परिस्थितियां हैं और ऐसे सुराग हैं, जो पाठक को रोचक लगेंगे।

ओस्मान की खासियत यह है कि वे अपराध कथा को केवल रहस्य तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसमें हास्य, भावनाएं और इंसानी रिश्तों की गर्माहट भी जोड़ देते हैं। कहानी में दोस्ती, विश्वास और नुकसान को इतनी खूबसूरती से पिरोया गया है कि पाठक इन पलों से जुड़ाव महसूस करता है।

फैक्ट फ्रंट

बकेट ऑर्किड: एक अनोखा फूल

कोरियांथेस, जिसे बकेट ऑर्किड के नाम से जाना जाता है प्रकृति का एक अनोखा फूल है। यह फूल मध्य और दक्षिण अमरीका के घने वर्षावनों में पाया जाता है। इसका बकेट जैसा आकार, जिसमें हमेशा एक नेक्टर जैसा तरल पदार्थ भरा रहता है, वही इसकी विशेषता है। यह तरल फूल की सुगंध के साथ मिलकर एक विशेष कीट, नर ऑर्किड को आकर्षित करता है। इस फूल के परागण प्रक्रिया में प्रकृति की सटीकता दिखती है। नर

ऑर्किड इस फूल की सुगंध से इसके बकेट जैसे हिस्से में गिर जाती है। इस बकेट में मौजूद तरल पदार्थ में फंसने के बाद, मधुमक्खी बाहर निकलने के लिए संघर्ष करती है। इस दौरान फूल का पराग मधुमक्खी के शरीर पर चिपक जाता है। जब यही मधुमक्खी किसी दूसरे बकेट ऑर्किड में गिरती है, तो पराग एक फूल से दूसरे फूल तक पहुंचता है और परागण पूरा होता है। फूल के बकेट में मौजूद नेक्टर जैसा तरल मधुमक्खी को फंसाता है। बकेट ऑर्किड के फूलों का रंग आमतौर पर हरा, पीला या भूरा होता है, जो जंगल के परिवेश में छिपने में मदद करता है।

सबक क्या हमारे घर-फ्लैट सचमुच सुरक्षित हैं?

विकास की चमक के बीच सुरक्षा की अनदेखी न करें

राजस्थान के कोटा से आई हाल की घटना ने सभी को स्तब्ध कर दिया है। एक फ्लैट में लगी आग से दो बच्चों ने दम घुटने के कारण अपनी जान गंवा दी। यह हादसा केवल कोटा की त्रासदी नहीं है, बल्कि उन सभी महानगरों और शहरों के लिए चेतावनी है, जहां ऊंची-ऊंची इमारतों में हजारों परिवार रहते हैं। सवाल यही है कि क्या हमारे घर-फ्लैट सचमुच सुरक्षित हैं?

बलवंत राज मेहता
स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार
@patrika.com

शहरों में फ्लैट अब मजबूरी भी हैं और सुविधाजनक विकल्प भी। तेजी से बढ़ती आबादी और सीमित होती जमीन के बीच ऊंची इमारतों का चलन बढ़ा है। इनमें रहने वालों को लगता है कि वे आधुनिक और सुरक्षित माहौल में हैं। हकीकत यह है कि इन सुविधाओं की चमक-दमक के पीछे सुरक्षा का पहलू अक्सर सबसे उपेक्षित रहता है। कोटा की घटना में भी यही हुआ। ऐसी घटनाएं पहले भी देश के विभिन्न हिस्सों में हो चुकी हैं। दिल्ली के मुंडका हादसे को कोई कैसे भूल सकता है? 2022 में एक इमारत में लगी आग से दर्जनों लोग बाहर नहीं निकल पाए और दम घुटने से जान गंवा बैठे। 2017 में मुंबई के कमला मिल्स परिसर में देर रात लगी आग में भी लोगों की मौत धुएं के कारण हुई। बड़ी समस्या यह है कि बिल्डर्स फ्लैट को आकर्षक बनाने पर जोर तो देते हैं, लेकिन सुरक्षा इंतजामों की अनदेखी कर जाते हैं। नक्शे पास कराने के समय कागजों में सुरक्षा मानक पूरे दिखा दिए जाते हैं, पर जमीन पर सच्चाई कुछ और होती है। वेंटिलेशन, फायर एग्जिट और अग्निशमन उपकरणों की उचित व्यवस्था अक्सर नदारद रहती है। अब समय है कि समाधान पर गंभीरता से जोर दिया जाए। सबसे पहले सरकार और नगर निकायों को बिल्डिंग बायलॉज का सख्ती से पालन कराना होगा। फायर सेफ्टी ऑडिट महज औपचारिकता न हो, बल्कि सख्ती से लागू हो। हर सोसायटी और अपार्टमेंट में साल में कम से कम एक बार फायर ड्रील अनिवार्य होनी चाहिए, ताकि लोग आग लगने पर घबराएं नहीं, बल्कि सुरक्षित रास्ता पकड़ सकें। बिल्डर्स को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इमारतों में पर्याप्त वेंटिलेशन, इमरजेंसी एग्जिट और अग्निशमन उपकरण मौजूद हों। इन उपकरणों की नियमित जांच और रखरखाव भी अनिवार्य होना चाहिए। परिवारों को भी सतर्क रहना होगा। इसके साथ ही समाज में जागरूकता फैलाना भी उतना ही जरूरी है। स्कूलों, कॉलोनियों और सोसायटियों में बच्चों और बड़ों को फायर सेफ्टी की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। आज जरूरत है कि हम हादसों के बाद आंसू बहाने और दोषारोपण करने के बजाय पहले से तैयारी करें। कोटा की यह घटना हमें यही याद दिलाती है कि घर तभी घर कहलाता है, जब उसमें रहने वाले सुरक्षित हों। विकास की चमक-दमक के बीच सुरक्षा की अनदेखी हमें बहुत भारी पड़ सकती है। अगर अब भी हम नहीं चेते, तो आने वाले समय में न जाने कितने और परिवार ऐसी त्रासदियों का शिकार होंगे।

ताहेरी गांव में ईरान का प्राचीन सिराफ बंदरगाह

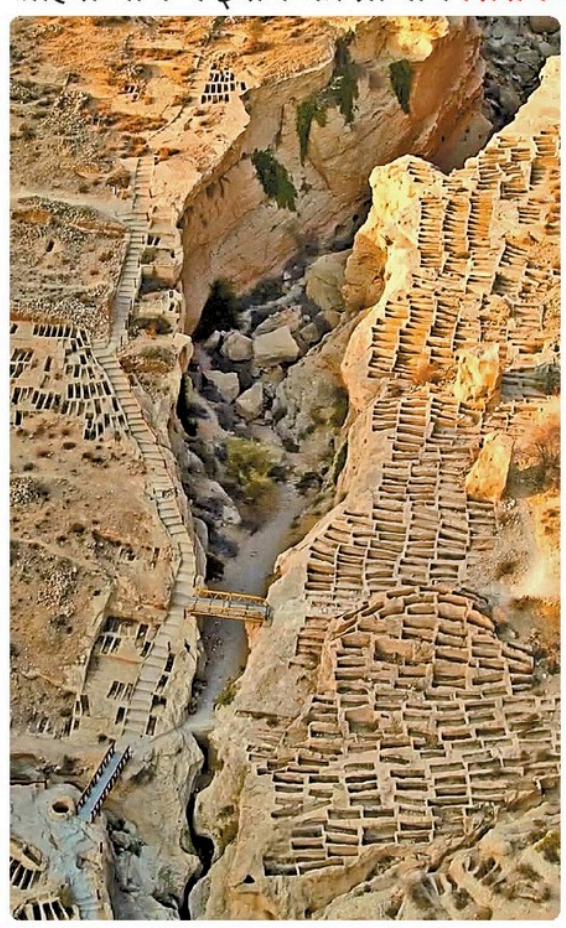

सिराफ बंदरगाह, फारस की खाड़ी के उत्तरी तट पर बुशेहर प्रांत, ईरान में स्थित एक प्राचीन और ऐतिहासिक व्यापारिक केंद्र है। इसकी स्थापना पार्थियन काल में हुई थी और सासानी साम्राज्य के दौरान यह पूरी तरह से फला फूला। आज के समय में, इस स्थल के उत्खनन से मकान, मस्जिदें, बाजार, सिरेमिक और कांच की कार्यशालाएं और जहाजों के अवशेष सामने आए हैं। लगभग 970 ईस्वी में आए एक बड़े भूकंप और सुनामी ने इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया, जिससे इसके अवशेष आंशिक रूप से समुद्र में डूब गए। वर्तमान में यह स्थल ताहेरी गांव के रूप में जाना जाता है।

दृष्टिकोण विदेशियों ने भी इसके सफर को संवारा

विश्व भाषा के रूप में स्थापित होती जा रही हमारी हिन्दी

हिन्दी, दुनिया की तीसरी महत्त्वपूर्ण भाषा है, जिसे अंग्रेजी व चीनी भाषा के बाद दुनिया में सर्वाधिक बोला जाता है। इस स्थान पर पहुंचने में हिन्दी को कई यात्राएं करनी पड़ी हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की इच्छा शक्ति थी कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की महासभा में अपना उद्बोधन हिन्दी में दिया। यानी भारत के साथ जिसे मैत्री और व्यापार करना है वे भारत की भाषा में बात करें तो रिश्ता प्रगाढ़ होगा। जब शासन मजबूत होता है तो उसकी भाषा को दूसरे भी सुनते हैं अंग्रेजी के प्रभाव का मुख्य कारण यही रहा है और अब हिन्दी के महत्त्वपूर्ण होने में भी यह कारण नजर आता है।

महीपाल सिंह राठौड़
प्रोफेसर, जयनारायण व्यास विवि, जोधपुर
@patrika.com

हिन्दी को इस मुकाम यात्रा तक पहुंचाने में हिन्दी भाषियों का ही नहीं, विदेशी विद्वानों व अप्रवासी भारतीयों का भी योगदान रहा है। विदेशी विद्वानों ने जहां हिन्दी भाषा के साहित्य संस्कृति को पठन-पाठन की परम्परा से जोड़कर व भाषा साहित्य में अनुसंधान कर विश्व समुदाय में हिन्दी के प्रति एक रुचि उत्पन्न की और हमारे साहित्य भंडार का परिचय अपने देशवासियों व भाषा प्रेमियों को करवाया। अप्रवासी भारतीय, जो विदेशों मे खेती किसानी और मजदूरी करने गए अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति भी ले गए और उससे जुड़ाव बनाए रखा। विदेशी धरती पर भारतीय तत्त्वों की परिपूर्ति यदि कोई भाषा कर सकती थी तो वह हिन्दी ही थी। वहां देशों की सीमाएं भी कोई मायने नहीं रखतीं। हिन्दी भाषा का पहला व्याकरण 1698 में डच भाषा में लिखा गया। फ्रांसीसी विद्वान गार्साद तासी ने हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास लिखा और जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने भारतीय भाषाओं का सर्वे कर अभूतपूर्व कार्य किया। बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के का हिन्दी प्रेम किससे छिपा है वे 1935 में धर्म प्रचार के उद्देश्य से भारत आए व यहां की नागरिकता प्राप्त की। उन्होंने राम कथा उत्पत्ति व विकास विषय पर डी.लिट की उपाधि प्राप्त की। अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश तैयार किया।

आज विश्व में लगभग 150 देशों में हिन्दी भाषा बोली एवं समझी जाती है। आज चीन के ग्यारह विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। चीनी भाषा के विद्वान प्रो.जिनदिंग हान ने रामचरित मानस का चीनी भाषा में अनुवाद किया है। प्रो.च्यांग चिंग ख्वेई ने अपना जीवन हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित किया। विश्वविद्यालय स्तर पर रूस में 1918 में हिन्दी अध्यापन आरंभ हो गया था। रूस में हिन्दी भाषा के प्रचारक अलेक्सेई पेत्रोविच के 'प्राच्य भाषा संस्थान' में 1920 से हिन्दी का अध्यापन जारी है। जापान में प्रो.ताकाकुसु के प्रयासों से वहां विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन आरंभ हुआ। यूरोप में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रो.मैक्ग्रेगर भाषा विज्ञानी हैं। जर्मनी में 1921 में हिन्दी शिक्षण का कार्य आरंभ हुआ था। हिन्दी एक विश्व भाषा के रूप में स्थापित होती जा रही है।

आपकी बात

पटाखे परेशानी का सबब

दीपावली पर पटाखे बुजुर्गों, गंभीर रूप से बीमार, दमा रोगियों के लिए भारी परेशानी का कारण बनते हैं। बड़े शहरों में तो पटाखों से अधिक प्रदूषण होता है। पटाखों के लिए हर वर्ष रात दस बजे बाद नहीं चलाने के नियम तो बनते हैं, मगर व्यवहार में ऐसा होता नहीं। ऐसे कदम उठाए जाएं, जिससे पटाखों का प्रयोग कम किया जाए।
- शिवजी लाल मीना, जयपुर

खानपान की आदतें बदलें

हृदय रोगों से बचाव के लिए अपने खानपान की आदतों में परिवर्तन करें और बच्चों को भी अच्छे खानपान और नियमित योगाभ्यास का आदी बनाएं। डायबिटीज, खराब जीवनशैली, तनाव इस रोग के बढ़ने का कारण हैं।
- साजिद अली, इंदौर

समसामयिक विषयों पर पाठकों के विचार आमंत्रित हैं। चुनिंदा विचार प्रकाशित किए जाएंगे।
ईमेल करें: edit@epatrika.com

संघ शताब्दी वर्ष संघ की यात्रा में जिस असीम ऊर्जा की प्रमुख भूमिका है वह है उसकी कार्यपद्धति और विशिष्ट दृष्टि

समय के साथ संघ में बदलाव हुए लेकिन मूल भाव वही रहा

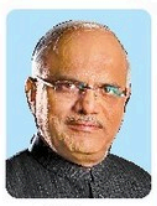

डॉ. विनय सहस्रबुद्धे
पूर्व राज्यसभा सांसद एवं उपाध्यक्ष, रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी
@patrika.com

हमारे राष्ट्रीय इतिहास में शतक, दो शतक से काम करती रही ऐसी कुछ संस्थाएं निश्चित होंगी। कोलकाता, पुणे, वाराणसी, चेन्नई या राजधानी दिल्ली में ऐसे संस्थान मिलना स्वाभाविक है। मगर संस्थाओं के अतिरिक्त जिन्हें हम समाज संगठन कहते हैं ऐसे दीर्घायुषी संगठन जो एक -दो शतक चलते ही रहे हो, हमें शायद ही मिलते हैं। इतनी लंबी अवधि के लिए संगठन का कार्य करते रहना कोई सामान्य बात नहीं हैं। यही कारण है कि भारत के सामाजिक इतिहास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यह एक मील के पत्थर जैसी विशेष उल्लेखनीय घटना बन गई है।

संघ ने समस्त हिंदू समाज को संगठित करने का, जो एक व्रत लिया वह एक कठिनतम व्रत है और यह चुनौतीभरा होने पर भी संघ का काम अविचल चल ही रहा है। इस यात्रा में जिस असीम ऊर्जा की प्रमुख भूमिका है, वह है संघ की कार्यपद्धति और उसके पीछे की विशिष्ट दृष्टि। संघ का उद्देश्य एक राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का रहा है। इसमें स्वाभाविक रूप में अनुशासन की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

संगठित हिन्दू समाज के लिए आवश्यक था कि देशभक्ति के संस्कार को, उसी में अंतर्निहित एकतात्मता के भाव को पूरा समाज अंगीकृत करे और अपने व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार में उसे परिलक्षित भी करे। इसी अनुशासन के आग्रह के चलते स्थापना के बाद बहुत समय तक संघ के सांगठनिक ढांचे पर कुछ मात्रा में सेना या मिलिट्री की छाया कम-अधिक मात्रा में रहती आई। संघ का पथ-संचलन हो या संघ का घोष हो, उस पर यह छाया अधिक दृष्टिगोचर थी। मगर जो धुन बजाए जाते रहे वह पूर्णतया भारतीय संगीत की परंपरा के अनुसार थे। संघ का घोष पथक स्वदेशी सुरों के आलाप से अधिक श्रवणीय होकर श्रोताओं के मन को हमेशा जीतता रहा है। विदेशी को स्वदेशानुकूल और स्वदेशी को युगानुकूल बनाने के संकल्प के सहारे संघ ने अपनी शतक-यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की है। समय के अनुसार बदलाव आए पर कुछ चीजें न बदलीं और सामान्यतः न ही कभी बदलेंगी।

संघ की सांगठनिक संरचना में सर संघचालक और सर कार्यवाह यह दो सर्वोच्च पद हैं और यह एक शाश्वत रचना है। संघ में प्रचार विभाग अभी-अभी बना है और जब बना तो माध्यम जगत का एक भी हिस्सा उन्होंने अस्पर्शित नहीं छोड़ा। संघ यानी शाखा और शाखा यानी कार्यक्रम, यह संघ का एक चिरंजीवी सूत्र रहा है। मगर विदेश में, जहां संघ प्रेरित भारतीय, हिंदू स्वयंसेवक संघ के रूप में एकत्रित होते हैं। वहां,जब बर्फीली सुबह में प्रभात शाखा लगाना कठिन हो जाता है तब कई जगह वर्चुअल शाखाएं लगती हैं।

संघ के प्रातः स्मरण स्तोत्र में कुछ समय पहले परिवर्तन हुआ था, मगर संघ की प्रार्थना नहीं बदली। संघ की शाखाओं में शारीरिक कार्यक्रम, खेल और योगासन इत्यादि चलते हैं और इसी के चलते शाखाओं में महिलाएं सहभागी नहीं हो पाती। मगर संघ के व्यापक कार्य में अब कई सारी महिलाएं समर्पण भाव से जुड़ गई हैं। संघ का गणवेश बदला है, मगर इस गणवेश का उद्देश्य जो समूह भाव के संस्कारों के विकास का हैं, वह उद्देश्य न बदला हैं और न ही बदल सकता है। सभी की धारणा है कि अपनी भारतीय संस्कृति जैसा ही अपना दृष्टिकोण 'नित्य नूतन, चीर पुरातन' में अपने अटूट विश्वास का होना आवश्यक है। संघ के बाह्य स्वरूप में चाहे आवश्यकतानुसार परिवर्तन हुआ भी हो, संघ का अंतरंग बदला नहीं है, क्योंकि उसकी मूल्यरचना शाश्वत और कालजयी है। एक संस्कृत श्लोक में कहा गया है कि- अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्। अयोग्यः पुरुषः नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः।।

अर्थात ऐसा कोई भी अक्षर(शब्द) नहीं है जिसमें मंत्र का सामर्थ्य न हो, ऐसा कोई भी पौधे का जड़ नहीं है, जिसमें औषधि तत्त्व न हो और उसी तरह इस जगत में कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं, जो अयोग्य हो। आवश्यक हैं एक योजक जो ऐसे सभी मनुष्यों के गुणों को समझ सकें। इसी सूत्र पर संघ की श्रद्धा है। जब तक यह श्रद्धा बरकरार है, संघ सज्जन शक्ति को संगठित करने के उद्देश्य से चलता ही रहेगा।

नेरळ, खोपोलीहून आज कर्जत लोकल बंद

लोकसत्ता प्रतिनिधी

मुंबई : मध्य रेल्वेच्या कर्जत स्थानकातील तांत्रिक कामासाठी ३, ४ आणि १० ऑक्टोबर रोजी विशेष वाहतूक ब्लॉक घेण्यात येणार आहे. त्यामुळे नेरळ-कर्जत आणि खोपोली-कर्जत लोकल सेवा उपलब्ध नसेल. ब्लॉक कालावधीत या मार्गावरून प्रवास करणाऱ्यांचे प्रचंड हाल होण्याची चिन्हे आहेत.

ब्लॉक कधी ?

३ ऑक्टोबर रोजी सकाळी ११.२० ते सायंकाळी ६ पर्यंत

४ ऑक्टोबर रोजी सकाळी ११.२० ते सायंकाळी ४.४५ पर्यंत

१० ऑक्टोबर रोजी सकाळी ११.२० ते सायंकाळी ४.२० पर्यंत

ब्लॉक कुठे ?

भिवपुरी स्थानक ङ्ग जांब्रुंग केबिन ङ्ग ठाकूरवाडी ङ्ग नागनाथ केबिन ते कर्जत

कोणत्या लोकल सेवा बंद

३ ऑक्टोबर - नेरळ ते कर्जत आणि कर्जत ते खोपोली दरम्यान अप आणि डाऊन लोकल रद्द

४, १० ऑक्टोबर - कर्जत ते खोपोली दरम्यान अप आणि डाऊन लोकल रद्द.

३ ऑक्टोबर रोजी लोकल वेळापत्रकावर होणारा परिणाम

- दुपारी २.५५ वाजता सुटणारी खोपोली - कर्जत लोकल रद्द
- सकाळी ९.०१, ९.३०, ९.५७ आणि ११.१४ वाजता सुटणाऱ्या सीएसएमटी - कर्जत लोकल नेरळपर्यंत चालवण्यात येईल.
- दुपारी १२.०५ वाजताची ठाणे - कर्जत लोकल नेरळपर्यंत धावेल.
- दुपारी १२.२० वाजता सुटणारी सीएसएमटी - खोपोली लोकल नेरळ येथे रद्द करण्यात येईल.
- सकाळी १०.३६ वाजता आणि दुपारी २.४५ वाजता सुटणारी सीएसएमटी - कर्जत लोकल अंबरनाथपर्यंत चालवण्यात येईल.
- सकाळी १०.४३, ११.१९, दुपारी १२, १ आणि दुपारी १.५५ वाजता सुटणाऱ्या कर्जत - सीएसएमटी लोकल नेरळ येथून नियोजित वेळापत्रकानुसार धावतील.
- दुपारी १.२७ वाजताची कर्जत - ठाणे लोकल नेरळ येथून आणि दुपारी १२.२३ आणि दुपारी ४ वाजता सुटणाऱ्या कर्जत - सीएसएमटी लोकल अंबरनाथ येथून नियोजित वेळापत्रकानुसार.

उपायुक्त पाटोळे यांना अटक

बेकायदा बांधकाम प्रकरणातही चौकशीच्या फेऱ्यात

लोकसत्ता प्रतिनिधी

ठाणे : ठाण्यातील बेकायदा बांधकामप्रकरणी महापालिकेतील अधिकाऱ्यांची न्यायालयीन चौकशी सुरू असतानाच या चौकशीच्या फेऱ्यात अडकलेले अतिक्रमण नियंत्रण विभागाचे उपायुक्त शंकर पाटोळे यांना लाचलुचपत प्रतिबंधक विभागाच्या (एसीबी) मुंबई पथकाने अटक केली. जागेवरील अतिक्रमण हटविण्यासाठी मुंबईतील एका बांधकाम व्यावसायिकाकडून २५ लाख रुपये घेताना पाटोळे आणि त्यांचा सहकारी ओमकार गायकर यांना अटक करण्यात आली.

पाटोळे यांच्यावर कारवाई होत असल्याचे वृत्त कळल्यानंतर ठाण्यातील काही नागरिक महापालिका मुख्यालयात पोहोचले होते. या कारवाईनंतर पाटोळे यांना दालनातून बाहेर घेऊन जात असताना काही जणांनी त्यांचा निषेध करण्यासाठी त्यांच्या दिशेने फुले फेकली. तर काहीजणांनी मिठाईदेखील वाटली. या प्रकरणी गुरुवारी मध्यरात्री उपायुक्त शंकर पाटोळे, डेटा ऑपरेटर पदावर काम करणारा ओमकार गायकर आणि सुशांत सुर्वे या तिघांविरोधात नौपाडा पोलीस ठाण्यात गुन्हा दाखल झाला आहे.

या प्रकरणातील तक्रारदार हे मुंबई येथील बांधकाम व्यावसायिक आहेत. ठाण्यातील नौपाडा भागातील विष्णुनगर परिसरात त्यांनी एका जमीन मालकाकडून जागा विकसित करण्यासाठी घेतली होती. या जागेमधील तीन बेकायदा दुकाने हटविण्यासाठी मालकाने पाठपुरावा करून महापालिकेकडून काहीच कारवाई झाली नव्हती. जागा मालक ८७ वर्षांचे झाल्याने त्यांनी तक्रारीचा पाठपुरावा करण्यासाठी बांधकाम व्यावसायिकाला अधिकारपत्र दिले होते. दरम्यान, बांधकाम व्यावसायिकाच्या मित्राने त्यांची ओळख सुशांत सुर्वे याच्याशी करून दिली. ते व्यावसायिकाला घेऊन उपायुक्त शंकर पाटोळे यांच्या दालनात घेऊन गेले. पाटोळे यांनी त्यांना कारवाई करण्यासाठी एका कागदावर २० लाख रुपये लिहून पैशांची मागणी केली. तसेच पुढील प्रकरणाबाबत त्यांच्या एका सहकाऱ्याशी चर्चा करण्यास सांगितले.

पाटोळे यांच्या सहकाऱ्याने २० लाखांपैकी १० लाख रुपये सुशांत सुर्वे याच्या बँक खात्यात वळते करण्यास सांगितल्याने व्यावसायिकाने त्यांच्या पत्नीच्या बँक खात्यातून १० लाख रुपये सुशांत सुर्वे याच्या बँक खात्यात जमा केले. त्यानंतर पाटोळे यांनी जुलै ते ऑगस्ट महिन्यात दुकानदारांना बेकायदा बांधकामप्रकरणी दोन नोटीस पाठविल्या. परंतु कोणतीही कारवाई झाली नाही. त्यामुळे बांधकाम व्यावसायिकाने पाटोळे यांची भेट घेतली. पाटोळे यांनी पुन्हा एका कागदावर ५० लाख रुपये लिहून कारवाईपूर्वी २५ लाख आणि कारवाईनंतर २५ लाख रुपयांची मागणी केली. पाटोळे यांना लाच देण्याची इच्छा नसल्याने त्यांनी २९ सप्टेंबरला मुंबई लाचलुचपत प्रतिबंधक विभागाचे कार्यालय गाठत पाटोळे यांच्याविरोधात तक्रार नोंदविली. त्यानुसार बुधवारी पथकाने सापळा रचून कारवाई केली. पाटोळे यांना ठाणे न्यायालयाने ४ ऑक्टोबरपर्यंत पोलीस कोठडी सुनावली आहे.

विभागीय चौकशीनंतरही पदोन्नती

ठाणे महापालिकेतील समाज विकास विभागात पाटोळे हे समाज विकास अधिकारी म्हणून भरती झाले होते. हे पद साहाय्यक आयुक्त पदासाठी समकक्ष असल्याने ते नौपाडा कोपरी प्रभाग समितीचे साहाय्यक आयुक्त म्हणून रुजू झाले. २०२१ मध्ये बेकायदा बांधकामाच्या आरोपावरून त्यांची विभागीय चौकशी सुरू करण्यात आली होती. असे असतानाही त्यांना उपायुक्तपदी पदोन्नती मिळाली. याविरोधात अनेकांनी आक्षेप घेतला होता. त्यानंतर ते नौपाडा कोपरी परिमंडळाचे उपायुक्तपदी काम पाहू लागले. सुमारे वर्षभरापूर्वी त्यांची नेमणूक अतिक्रमण नियंत्रण विभागाच्या उपायुक्तपदी झाली होती. गेल्या तीन वर्षांत ठाणे महापालिका हद्दीत मोठ्या प्रमाणात बेकायदा बांधकामे उभी राहिली.

यंदा राज्यात २० टक्के अधिक पाऊस

चार महिन्यांत मराठवाड्यात सर्वाधिक नोंद

लोकसत्ता प्रतिनिधी

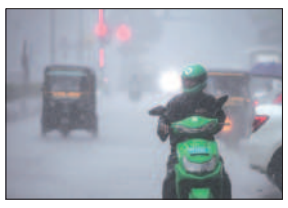

मुंबई : मोसमी पावसाच्या हंगामात जून ते सप्टेंबरदरम्यान यंदा राज्यात सरासरीपेक्षा अधिक पावसाची नोंद झाली असून सप्टेंबरमध्ये कोसळलेल्या पावसामुळे हे प्रमाण वाढल्याचे आता समोर आले आहे. दरम्यान यंदा मराठवाड्यात सर्वाधिक ३९ टक्के अधिक, तर मध्य महाराष्ट्रात २० टक्के अधिक पावसाची नोंद झाली आहे.

संपूर्ण मोसमात राज्यात मराठवाड्याने ६४२.८ मिमी सरासरी पावसाची नोंद ओलांडत ८९७.३ मिमीचा पल्ला गाठला. मध्य महाराष्ट्रात ७४७.४ मिमी सरासरीच्या तुलनेत यंदा ८९७.३ मिमी पाऊस पडला आहे. कोकण-गोवा भागात १५ टक्के अधिक, तर विदर्भात १४ टक्के अधिक पावसाची नोंद झाली.

राज्यात यंदा १२० टक्के अधिक पावसाची नोंद झाली आहे. जून ते सप्टेंबर या कालावधीत राज्यात ११८९.४ मिमी पावसाची नोंद झाली आहे. गेल्या वर्षी राज्यात १२५२.१ मिमी पाऊस अर्थात २६ टक्के अधिक पाऊस नोंदला गेला होता. सलग दुसऱ्यांदा राज्यात सरासरीपेक्षा अधिक पावसाची नोंद झाली आहे.

दरम्यान, बंगालच्या उपसागरातील संभाव्य कमी दाबाच्या क्षेत्रामुळे पावसाला पोषक वातावरण निर्माण झाले आहे. विदर्भ तसेच मराठवाड्यात विजांसह पावसाची शक्यता आहे. राज्यात सध्या पावसाने उघडीप दिली असली तरी काही भागात अधूनमधून हलक्या सरी बरसत आहेत. मुंबईतही अशीच परिस्थिती आहे. मुंबईत गुरुवारी हलक्या सरी बरसल्या. त्यामुळे वातावरणात गारवा निर्माण झाला होता. हवामान विभागाच्या कुलाबा केंद्रात गुरुवारी सकाळी ८.३० ते सायंकाळी ५.३० पर्यंत १३.८ मिमी, तर सांताक्रूझ केंद्रात ०.४ मिमी पावसाची नोंद झाली.

नवी मुंबई विमानतळावर तंत्रज्ञान-संस्कृतीचा संगम

संतोष सावंत, लोकसत्ता

नवी मुंबई : डिजिटल इंडियाच्या युगात तंत्रज्ञानाची झेप घेत असतानाच महाराष्ट्राची समृद्ध संस्कृती जागतिक पातळीवर दाखविण्याची संधी आता नवी मुंबई आंतरराष्ट्रीय विमानतळामुळे उपलब्ध होणार आहे. देशाच्या प्रगतीसोबत राज्याची परंपरा, कला आणि आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अनोखा मेळ या विमानतळावर पाहायला मिळणार आहे.

८ ऑक्टोबरला पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या हस्ते या भव्य प्रकल्पाचे उद्घाटन होणार असून विमानतळ परिसरात प्रवेश करताच प्रवाशांना डिजिटल स्क्रीनवरून महाराष्ट्राच्या पारंपरिक संस्कृतीचे दर्शन होईल. आधुनिक हवाईतळाची रचना आणि तंत्रज्ञानासोबतच राज्याची सांस्कृतिक ओळख प्रवाशांना करून देण्यात येईल. या विमानतळामध्ये येणाऱ्या प्रत्येक प्रवाशाला छत्रपती शिवाजी महाराजांची प्रतिकृती दिसावी या

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांची सूचनाही प्रभावीपणे अमलात आणली गेली आहे.

अदानी समूहाचे प्रमुख गौतम अदानी यांनी बुधवारी विमानतळाच्या उद्घाटनाची अधिकृत घोषणा केली असून सध्या अंतिम टप्प्यातील कामे पूर्ण करण्यासाठी जोरदार तयारी सुरू आहे. गुरुवारी विजयादशमीची सुट्टी असतानाही सिडकोचे व्यवस्थापकीय संचालक विजय सिंघल व गणेश देशमुख, दक्षता विभागाचे प्रमुख सुरेश मेंगडे यांच्यासह विविध अधिकारी उद्घाटनापूर्वीच्या तयारीचा आढावा घेत होते. विमानतळाच्या छताला कमळपुष्पाच्या पाकळ्यांचा आकार देण्यात आला आहे. थ्रीडी प्रोजेक्शनद्वारे या स्थापत्यकलेचे वैशिष्ट्य पंतप्रधानांना दाखवले जाणार आहे.

प्रवेशद्वारापासून तपासणी काऊंटर, बॅगेज सुविधा आणि डिजिटल स्क्रीनवरील माहिती या सर्व व्यवस्थेत आधुनिकतेची झलक डिजिटल स्वरूपात येथे दिसेल. त्याचबरोबर विमानतळ प्रकल्पाच्या प्रवासाचा आढावा मान्यवरांसमोर सादर होणार आहे.

या विमानतळामुळे 'महामुंबई मल्टिमॉडेल' संकल्पनेला गती मिळणार असून, परिसरात विविध ग्रोथ सेंटर उभारले जाणार आहेत. त्यामुळे लाखो तरुणांना रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होतील. या प्रकल्पामुळे महाराष्ट्रासह देशाच्या अर्थव्यवस्थेला नवा वेग मिळण्याचे संकेत देण्यात आले आहेत.

अदानी यांचे विमान उडाले

विमानतळ प्रकल्पासाठी अदानी उद्योगसमूहाने घेतलेल्या कर्जाच्या परतफेडीचा हप्ता १ ऑक्टोबरपासून सुरू होणार आहे. हे विमानतळ उदघाटन होणे जसे देशाच्या उड्डाण व्यवस्थेसाठी गरजेचे होते, तसेच या विमानतळाचे संचलन सुरु होणे अदानी समूहासाठीसुद्धा तेवढेच गरजेचे बनले आहे. या दरम्यान ह्यानागरी विमान वाहतूक महासंचालनालयाने एरोड्रोमचा परवाना याच दरम्यान दिल्यामुळे स्वतः गौतम अदानी यांचे विमान या विमानतळाच्या धावपट्टीवर उदघाटनापूर्वीच पहिल्यांदा उतरले आणि उडालेही याचीच चर्चा नवी मुंबईत सुरु आहे.

ऑक्टोबरमध्ये धरणे काठोकाठ

वर्षभराची पाण्याची चिंता मिटण्याची चिन्हे

लोकसत्ता खास प्रतिनिधी

मुंबई : गेल्या आठवड्यात कोसळलेल्या मुसळधार पावसामुळे मुंबईला पाणीपुरवठा करणारी सातही धरणे काठोकाठ भरली असून मुंबईकरांची वर्षभराच्या पाण्याची चिंता मिटली आहे. दरवर्षी १ ऑक्टोबरला धरणातील पाणीसाठ्याचा आढावा घेऊन वर्षभराच्या पाणीपुरवठ्याचे नियोजन केले जाते. त्यानुसार यंदा तरी मुंबईकरांना पाणीटंचाईला सामोरे जावे लागणार नसल्याचा अंदाज वर्तवण्यात येत आहे. त्यातच ऑक्टोबर महिन्यातही पावसाची शक्यता असून हा पाऊस म्हणजे मुंबईकरांसाठी पाणीपुरवठ्याचा बोनसच ठरणार आहे.

मुंबईला पाणीपुरवठा करणाऱ्या ऊर्ध्व वैतरणा, मोडक सागर, तानसा, मध्य वैतरणा, भातसा, विहार, तुळशी अशा सातही धरणांत २ ऑक्टोबर रोजी ९८.८२ टक्के पाणीसाठा आहे. या धरणातून मुंबईला दर दिवशी ४००० दशलक्ष लिटर पाण्याचा पुरवठा केला जातो. यंदा ऑक्टोबर महिन्याच्या सुरुवातीला धरणे काठोकाठ भरमुळे पाणीपुरवठ्याची चिंता मिटल्याची माहिती पालिकेच्या जल अभियंता विभागातील अधिकाऱ्यांनी दिली.

पाऊस फायद्याचा

गेली सलग तीन वर्षे मुंबईकरांवर पावसाळ्याच्या आधी पाणीकपात लागू करण्याची किंवा राखीव साठा वापरण्याची वेळ आली होती. गेल्या काही वर्षांपासून ऑक्टोबर महिन्यातही पाऊस पडत असल्यामुळे त्याचा मुंबईकरांना चांगलाच फायदा होत आहे. धरणातील एकूण साठ्यापैकी सुमारे ११ ते १२ टक्के पाणी एका महिन्याला लागते. ऑक्टोबरमध्ये पाऊस सुरू राहिल्यास सुमारे २० दिवसांचा पाणीसाठा किंवा पाच ते सात टक्के पाणीसाठा अधिकचा मिळतो. त्यामुळे उन्हाळ्यात राखीव साठा वापरण्याची वेळ येत नाही, अशी माहिती मुख्य जलअभियंता पुरुषोत्तम माळवदे यांनी दिली.

गेल्या वर्षी राखीव साठा वापरावा लागला नाही

सावधगिरीचा उपाय म्हणून मुंबई महापालिकेने उन्हाळ्यात राखीव साठ्याचा वापर करण्यासाठी राज्य सरकारची मंजुरी घेतली होती. त्यात भातसामधून १ लाख ११ हजार दशलक्ष लिटर आणि ऊर्ध्व वैतरणा धरणातून ६७ हजार दशलक्ष लिटर राखीव पाणीसाठा मंजूर करून घेतला होता. पण यंदा पाऊस लवकर सुरू झाल्यामुळे ऊर्ध्व वैतरणा धरणातून केवळ २००० दशलक्ष लिटर साठा वापरण्यात आला. तर भातसा धरणातील पाणीसाठा वापरण्याची वेळच आली नाही, अशी माहिती माळवदे यांनी दिली.

म्हाडाकडून मुंबईत १५००, राज्यात ११५०० घरे

लोकसत्ता विशेष प्रतिनिधी

मुंबई : महाराष्ट्र गृहनिर्माण व क्षेत्रविकास प्राधिकरणाकडून (म्हाडा) आर्थिक वर्षांत सामान्यांसाठी किती घरे उपलब्ध होतील, याचा आढावा घेतला असून त्यानुसार मुंबईत सामान्यांसाठी फक्त १४७४ घरे उपलब्ध होऊ शकणार आहेत. याशिवाय मुंबईत गिरणी कामगारांसाठी चार हजार २१५ घरांची निर्मिती होण्याची शक्यता आहे. त्याचवेळी राज्यात साडेअकरा हजार घरांची निर्मिती केली जाणार आहे. या घरांच्या बांधकाम प्रस्तावांना म्हाडाने मंजुरी दिली आहे.

म्हाडाचे उपाध्यक्ष व मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजीव जायस्वाल यांनी राज्यात दोन लाख घरनिर्मितीचा संकल्प आखला आहे. त्यानुसार सध्या प्रयत्न सुरु असून झोपडपट्टी पुनर्वसन योजना राबवून त्या बदल्यात सामान्यांसाठी घरे निर्माण करण्याचेही म्हाडाचे ध्येय आहे. २०२५-२६ मध्ये मंजूर करण्यात आलेल्या प्रस्तावांनुसार मुंबईत अत्यल्प उत्पन्न गटासाठी १०९, अल्प गटासाठी ७८९, मध्यम गटासाठी ४३७ आणि उच्च गटासाठी १३९ अशा १४७४ घरांच्या बांधकामांना मंजुरी देण्यात आली आहे.

कोकण मंडळ सोडतीसाठी १.५७ लाख अर्जदार

२० टक्के योजनेतील ५६५ सर्वसमावेशक घरांसाठी ९० टक्के अर्ज

लोकसत्ता प्रतिनिधी

मुंबई : म्हाडाच्या मुंबई मंडळाच्या ५ हजार २८५ घरांसह ७७ भूखंडांसाठी ११ ऑक्टोबरला सोडत काढण्यात येणार आहे. या सोडतीसाठी पात्र अर्जांची प्रारूप यादी मंडळाने बुधवारी रात्री प्रसिद्ध केली आहे. या यादीनुसार अनामत रकमेसह दाखल झालेल्या १ लाख ५८ हजार ४२४ अर्जांपैकी १ लाख ५७ हजार २०७ अर्ज पात्र ठरले आहेत. तर १२१७ अर्ज अपात्र ठरले आहेत. विविध कारणांमुळे अपात्र ठरलेल्या अर्जदारांना आता शुक्रवारपर्यंत दावे आणि हरकती सादर करता येणार आहेत. दरम्यान,

पात्र अर्जांपैकी ९० टक्क्यांहून अधिक म्हणजे १ लाख ४५ हजार ८०५ पात्र अर्जदार २० टक्के सर्वसमावेशक योजनेतील ५६५ घरांसाठी स्पर्धेत आहेत.

कोकण मंडळाने २० टक्के सर्वसमावेशक योजनेतील ५६५, एकात्मिक योजनेतील ३००२, म्हाडा योजनेतील १६७७, इतर योजनेतील ४१ घरांसह ७७ भूखंडांच्या सोडतीसाठी जुलैपासून सोडतपूर्व प्रक्रिया सुरू केली होती. मात्र या सोडतीला कमी प्रतिसाद मिळाल्याने दोन वेळा मुदतवाढ देण्यात आली. त्यामुळे सोडतीची तारीख लांबणीवर पडली. त्यानंतर २२ सप्टेंबर रोजी अर्जांची प्रारूप यादी जाहीर करण्याचा आणि ९ ऑक्टोबर रोजी सोडत काढण्याचा निर्णय मंडळाने जाहीर केला. मात्र २२ सप्टेंबरची तारीख पुढे ढकलत ती ३० सप्टेंबर केली. मात्र तेव्हाही अर्जांच्या छाननीचे काम पूर्ण न झाल्याने ३० सप्टेंबर रोजी अर्जांची प्रारूप यादी मंडळाला प्रसिद्ध करता आली नाही. अखेर १ ऑक्टोबर रोजी सायंकाळी यादी जाहीर करण्याचे निश्चित करण्यात आले. मात्र यादी लांबणीवर पडल्याने सोडतीची तारीखही ९ ऑक्टोबरवरून ११ ऑक्टोबर करण्याची नामुष्की कोकण मंडळावर ओढवली. आता ११ ऑक्टोबर रोजी सोडत पार पडणार आहे.

अपात्र अर्जदारांना शुक्रवार, ३ ऑक्टोबर रोजी सायंकाळी ६ पर्यंत दावे - हरकती सादर करता येणार आहेत. त्यांचा विचार करून ९ ऑक्टोबर रोजी सायंकाळी ६ वाजता पात्र अर्जांची अंतिम यादी प्रसिद्ध केली जाणार आहे.

पुनर्वसन प्रकल्पात सोडतीचे बंधन

लोकसत्ता विशेष प्रतिनिधी

मुंबई : पुनर्वसन प्रकल्पाला निवासयोग्य दाखला मिळाल्यानंतर विशेष सर्वसाधारण सभेत सदनिकांचे सोडतीद्वारे वितरण करण्यात यावे आणि या प्रक्रियेचे चित्रिकरण करण्यात यावे, असा महत्त्वपूर्ण निर्णय महाराष्ट्र गृहनिर्माण व क्षेत्रविकास प्राधिकरणाच्या उपनिबंधकांनी दिला आहे. त्यामुळे सहकारी गृहनिर्माण संस्थांच्या व्यवस्थापकीय समितीमार्फत मनमानी पद्धतीने पुनर्वसन सदनिकांचे वितरण करण्याच्या पद्धतीला आळा बसणार आहे. म्हाडा भूखंडावर चुनाभट्टी येथील त्रिमूर्ती सहकारी गृहनिर्माण संस्थेच्या पुनर्विकसित इमारतींबाबत हा निर्णय घेण्यात आला.

200 कोटींकडे यशस्वी वाटचाल करणारी मुंबई मधील अग्रगण्य पतसंस्था
मुदत ठेव योजना
15 महिन्यांकरिता
10.50%
पेन्शन ठेव योजना
एक लाख एकदाच गुंतवा व दरमहा 5 वर्षासाठी
₹ 900/- रुपये मिळवा
दामदुप्पट ठेव : 78 महिन्यांत
श्री रिध्दी सिध्दी
सहकारी पतसंस्था मर्यादित, मुंबई
ठाणे : ७८२२०३०७६१ | डोंबिवली : ८०८०९०८०७७ | विरार : ९३७२९८०२५७ | पनवेल : ८१०८६४८२८१

'एमएमआरडीए'कडून दोन भुयारी मार्गांचे नियोजन

मंगल हनवते, लोकसत्ता

मुंबई : मुंबईतील वाहतूक कोंडीचा प्रश्न सोडविण्यासाठी आता भुयारी मार्गांचा पर्याय राज्य सरकारने स्वीकारला आहे. त्यासाठी मुंबई महापालिकेकडून नियुक्त करण्यात येणारा सल्लागार यासंदर्भात सर्वंकष अभ्यास करणार आहे. मात्र दुसरीकडे मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरणाने (एमएमआरडीए) मात्र मुंबईत दोन भुयारी मार्ग (दुहेरी बोगदे) बांधण्याचे नियोजन सुरू केले आहे. पूर्व उपनगरातून आणि दक्षिण मुंबईतून बुलेट ट्रेन स्थानक आणि मुंबई विमानतळाला अतिजलद पोहचता यावे यासाठी एमएमआरडीएने दोन भुयारी मार्ग प्रस्तावित केले आहेत. यापैकी एक मार्ग चेंबूर - बीकेसी बुलेट ट्रेन स्थानक असा, तर दुसरा भुयारी मार्ग वांद्रे रेक्लमेशन - मुंबई विमानतळ व्हाया बीकेसी असा असेल. यासंबंधीचे नियोजन सध्या प्राथमिक स्तरावर असून येत्या काही महिन्यांत या दोन्ही भुयारी मार्गांबाबत स्पष्टता येईल.

भुयारी मार्गाबाबत राज्य सरकारने मुंबई महापालिका आयुक्तांच्या नेतृत्त्वाखाली आठ सदस्यीय समिती नेमली आहे. या समितीच्या निर्णयानुसार पालिकेने भुयारी मार्ग कुठे आणि कसे बांधता येतील याच्या अभ्यासासाठी सल्लागार नियुक्तीची प्रक्रिया सुरू केली आहे. महिन्याभरात त्या सल्लागाराची नियुक्ती होण्याची शक्यता आहे.

दुसऱ्या बजूला एमएमआरडीएनेही मुंबईत भुयारी मार्गांचे जाळे विणण्यास सुरुवातही केली आहे. त्यामुळे ठाणे - बोरिवली आणि ऑरेंज गेट - मरीन ड्राईव्ह या दोन भुयारी मार्गाशिवाय मुंबईत आणखी दोन भुयारी मार्गांची भर पडण्याची शक्यता निर्माण झाली आहे. या प्रकल्पाबाबतचा सर्व तपशील मुंबई महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरणाकडून अंतिम निर्णय झाल्यानंतरच स्पष्ट होणार आहे.

नवीन प्रस्तावानुसार वांद्रे रेक्लमेशन - विमानतळ व्हाया बीकेसी आणि चेंबूर - बीकेसी बुलेट ट्रेन स्थानक यादरम्यान दुहेरी बोगद्यांचे काम करण्यात येणार आहे.

प्रकल्पाचा तपशील मंजुरीनंतर

प्रस्तावामध्ये चेंबूर, अमर महल जंक्शन वा पूर्वमुक्त मार्गाजवळून बीकेसी बुलेट ट्रेन स्थानक असा एक भुयारी मार्ग, तर दुसरा भुयारी मार्ग वांद्रे रेक्लमेशन - बीकेसी बुलेट ट्रेन आणि पुढे थेट छत्रपती शिवाजी महाराज आंतरराष्ट्रीय विमानतळापर्यंत नेण्याचे नियोजन आहे. मात्र या दोन्ही भुयारी मार्गांची लांबी, रुंदी किती, नेमके संरेखन कसे असणार, यासाठी किती खर्च अपेक्षित असेल, हे अद्याप निश्चित झालेले नाही.

NATIONAL SILK EXPO
Traditional & Lifestyle
DIRECT WEAVERS EXHIBITION & SALE
Karwachauth Diwali Special
3 to 7 October
TIME: 11AM TO 9PM
World Trade Center
Cuffe Parade, Mumbai
150+ certified weavers & best designers from all over India
Authentic & pure silk & cotton saree
only at weavers price from all over India
All latest variety & new design
Silk & Cotton Saree | Designer Wear | Ethnic Wear
Kurti & Dresses | Fashion Jewellery | Handcrafted Textiles
OPENING TODAY

Guest of Honour
Dr. Tapan Kumar Rout
Director (MR), Textiles Committee, Ministry of Textiles, Govt. of India
Orgd. By: G.H.V.S. R/o By: Ministry of Textiles Govt. of India
M: 9412258826 | ENTRY FREE | ALL UPI ONLINE / DEBIT & CREDIT CARDS ACCEPTED

लोकमानस

loksatta@expressindia.com

सरन्यायाधीशांना वगळण्यापासून रडीचा डाव

'**हवा अंधारा** कवडसा' हे संपादकीय (२ ऑक्टोबर) वाचले. शालेय विद्यार्थ्यांच्या शिक्षणापासून ज्येष्ठ नागरिकांच्या जगण्यापर्यंत 'आधार' कार्डचे बंधन घालणाऱ्या सरकारने निवडणूक आयोगाला मतदार यादीतील नावाची वैधता सिद्ध करण्यासाठीच्या पुराव्यांतून 'आधार' कार्डच वगळण्याचा सल्ला दिला. आज्ञाधारकपणे निवडणूक आयोगाने, बिहारची निवडणूक डोळ्यांसमोर ठेवून आणि सत्ताधीशांना त्याचा फायदा व्हावा या दृष्टीने 'आधार' कार्डचा पुरावा ग्राह्य न धरल्याने बिहारच्या विधानसभा मतदार यादीमधून जवळपास ६८ लाख नावे वगळण्यात आली. या वगळलेल्या नावांमध्ये बांगलादेशातून स्थलांतरित झालेली परदेशी नागरिक-विशेषतः मुस्लीम होते हा दावा निवडणूक आयोग सिद्ध करू शकला नाही. 'आधार' कार्ड पुरावा म्हणून ग्राह्य धरण्याच्या सर्वोच्च न्यायालयाच्या आदेशामुळे निवडणूक आयोग तोंडावर आपटला आहे.

रशिया आणि चीनचा आदर्श (?) डोळ्यांसमोर ठेवून पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी डिसेंबर २०२३ मध्येच मुख्य निवडणूक आयुक्त आणि इतर निवडणूक आयुक्त (सेवाशर्ती व पदावधी) अधिनियमात बदल केले. आयोगाच्या निवड समितीतून सरन्यायाधीशांनाच वगळले. त्यांच्या जागी पंतप्रधानांनी नामनिर्देशित केलेल्या केंद्रीय कॅबिनेट मंत्र्याचा समावेश केला. तिथूनच हा 'रडीचा डाव' सुरू झाला. राहुल गांधी, तेजस्वी यादव आणि बिहारच्या जागरूक नागरिकांनी मतदार जागृती यात्रा काढून आयोगाची इभ्रतच चव्हाट्यावर आणली. त्यांनी लोकशाही अंधकारमय करू पाहणाऱ्या सत्ताधीशांच्या समोर मिणमिणता का होईना 'मतचोरी' विरोधी दिवा प्रज्वलित केला, हेही नसे थोडके.

■ **डॉ. राजेंद्र कांकरिया,** चिंचवडगाव (पुणे)

हे सरकारवरच अविश्वास दर्शवण्यासारखे

'**हवा अंधारा** कवडसा...' हे संपादकीय (लोकसत्ता- २ ऑक्टोबर) वाचले. एकेकाळी केंद्र सरकारने आधार कार्ड योजनेला प्रचंड लोकप्रियता देत दैनंदिन व्यवहारातील त्याची गरज वाढवली. आता या ओळखपत्राची अनिवार्यता वाढली असतानाच ते नागरिकत्वाचा पुरावा नाही, अशी भूमिका निवडणूक आयोगाने घेणे हे सरकारवरच अविश्वास दाखविण्यासारखे होते. त्यामुळे सर्वोच्च न्यायालयाने आधारला नागरिकत्वाचा पुरावा म्हणून ग्राह्य धरण्याचा आदेश देणे स्वागतार्हच आहे. आधारच्या रूपाने 'एक देश एक ओळखपत्र' या दिशेने देश वाटचाल करत असताना अचानक हे ओळखपत्र नागरिकत्वाचा पुरावा नाही, असा निर्णय घेणे दुटप्पी आहे. ग्राह्य धरायचे नव्हते, तर सर्व भारतीयांनी आधार कार्ड तयार करण्यासाठी एवढा आटापिटा का केला? खरेतर मतदार नोंदणी आधार गृहीत धरून केल्यास निवडणूक प्रक्रियेत अधिक पारदर्शकता येईल. दुबार, मयत, बोगस मतदार आपोआप या प्रक्रियेतून दूर होतील, मात्र त्या दिशेने पावले न टाकता थेट आधारलाच मुख्य प्रवाहातून दूर करणारी भूमिका अनाकलनीय होती. आता सर्वोच्च न्यायालयाने दिलेल्या निर्वाळ्यानंतर या प्रश्नी निर्माण झालेले मळभ दूर होईल अशी अपेक्षा आहे.

■ **वैभव पाटील,** घणसोली (नवी मुंबई)

आयोग बरखास्त करणेच हिताचे

'**हवा अंधारा** कवडसा...' हे संपादकीय (लोकसत्ता- २ ऑक्टोबर) वाचले. वास्तविक निवडणूक आयोगावर देशात निःपक्षपाती वातावरणात निवडणुका घेण्याची जबाबदारी आहे. काँग्रेसच्या शासनकालात निवडणूक आयोग लपूनछपून सत्ताधाऱ्यांना मदत करताना दिसत असे. परंतु, मोदी सरकार 'नियुक्त' निवडणूक आयोग कार्यरत झाल्यापासून आयोगाच्या तोंडी चक्क राजकीय भाषा येऊ लागली. २०२४ च्या लोकसभा निवडणुकीतील मतदानाच्या आकडेवारीने आयोगाच्या कार्यक्षमतेविषयी शंका उपस्थित होऊ लागली. सरकार आयोगास अधिकाधिक अधिकारांची रसद पुरवू लागल्याचे दिसते. बिहारमध्ये मतदार जागृती यात्रेने मतदार जागरूक होईल कदाचित. परंतु, विद्यमान निवडणूक आयोगाची कार्यपद्धती लक्षात घेता पुढील काळात केंद्रातील सत्ताधारी देशात अजेय ठरल्यास नवल वाटू नये. तेव्हा हा निवडणूक आयोग बरखास्त करणेच लोकशाहीच्या हिताचे वाटते.

■ **शैलेश पुरोहित,** मुलुंड (मुंबई)

भाजपने गांधी विचार स्वीकारणे महत्त्वाचे

'**गांधीजी आणि** रा. स्व. संघ' हा श्रीपाद कोठे यांचा लेख (२ ऑक्टोबर) वाचला. गांधीजी आणि संघ यांच्या संबंधांच्या बाबतीत सर्वसामान्य नागरिकांमध्ये जो संभ्रम आहे आणि विशेषता संघाच्या स्वयंसेवकांमध्ये गांधींबद्दल जी कटुता आणि विद्वेष आहे तो दूर करण्याचा स्तुत्य प्रयत्न केला आहे. कोठे हे 'स्वयंसेवक' नव्हे तर 'संघ अभ्यासक' असल्यामुळेच त्यांनी गांधी हत्येला हत्या म्हटले आहे वध नाही आणि हत्या करणाऱ्या नथुराम गोडसेचा गौरव केलेला नाही. गोडसे समर्थक गांधींच्या हत्येला वध म्हणतात, म्हणजे गोडसेने काही वाईट केले नाही, पुण्यकर्मच केले. गोडसेचे समर्थन करण्याच्या अतिउत्साहाचे खंडन संघ करीत नाही हेही श्रीपाद कोठे यांनी स्पष्टपणे मांडले आहे. त्यामुळेच संघाचे टीकाकार संघाच्या 'चेहरा आणि मुखवट्या'वर चर्चा करतात. संघाला मातृसंस्था मानणाऱ्या भाजपमध्ये अनेक जण गांधीद्वेष्टे आहेत तरीही भारत हा गांधीचा देश आहे गोडसेचा नव्हे, अशी कबुली स्वतः भाजप प्रवक्ते अजित चव्हाण यांना टीव्हीच्या एका कार्यक्रमात द्यावी लागली. राजनाथ सिंह यांनी दिल्लीत गांधी विचारच देशाला तारू शकतो अशी कबुली दिली. पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी म्हटले आहे की, 'स्वदेशी' हा विचारच देशाला पुढे नेईल आणि आर्थिक स्वाभिमानासाठी महत्त्वाचा ठरेल. आणि भाजप नेत्यांनी गांधींचा विचार स्वीकारणे हे लोकशाही आणि अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याच्या पुरस्कर्त्यांसाठी फार चांगले लक्षण आहे.

■ **प्रा. न. मा. जोशी,** यवतमाळ

आधुनिक वसाहतवादावरही गांधी हेच उत्तर

गांधीजींनी ब्रिटिशांविरुद्ध लढा दिला, पण आज वसाहतवादाचे स्वरूप बदलले आहे. काही उद्योगसम्राटांचा नैसर्गिक साधनसंपत्तीवर ताबा, जनतेच्या श्रमाची किंमत कमी करून आर्थिक गुलामी वाढवणे, कायद्यांचा वापर करून भीतीचे वातावरण तयार करणे, धर्म आणि जातीच्या आधारावर समाजाला विभागणे ही नव्या वसाहतवादाचीच लक्षणे आहेत. गांधीजी म्हणाले होते, ''लोकशाही जनतेच्या सजगतेवर उभी राहते,'' आज निवडणुका घेतल्या जात असल्या तरी लोकशाही धोक्यात आहे. न्यायव्यवस्था, पत्रकारिता, शिक्षणसंस्था, सामाजिक चळवळींना वाळवी लागली आहे. नागरिकांनी जागरूक होऊन प्रश्न विचारले नाहीत, तर लोकशाही नावापुरती राहील. आज देशांतर्गत गुलामीविरुद्ध लढा देणे गरजेचे आहे आणि त्यासाठी गांधीवादी मार्गच उपयुक्त आहे. अहिंसा, सत्याग्रह आणि जनजागृतीतूनच हे उद्दिष्ट साध्य करता येईल. तरुण पिढी नवे प्रश्न विचारत आहे, अन्यायाविरुद्ध उभी राहत आहे. काही नेते सत्याग्रहाच्या मार्गावर चालण्याचा प्रयत्न करत आहेत. पण खरी ताकद समूह जागृतीमध्ये आहे. प्रत्येक नागरिकाने गांधींचा अंश आपल्या वागणुकीत उतरवला, तर दुसरा स्वातंत्र्यलढा यशस्वी होईल. हा अंश पुतळ्यांत नाही, तर लढ्यात आहे. गांधी पुन्हा जन्म घेणार नाहीत; पण त्यांचा विचार प्रत्येकात जन्म घेऊ शकतो.

■ **डॉ. सुभाष देसाई**

नागरी सुविधा ही पालिकेचीच जबाबदारी

'**उघड्या भुयारी** गटारांचा मुद्दा पुन्हा न्यायालयात' ही बातमी (लोकसत्ता- १ ऑक्टोबर) वाचली. महानगरपालिकेने हा रस्ता एमएमआरडीएच्या अखत्यारीत येत असल्याचे म्हणत जबाबदारी झटकली. प्रभागात नागरी सुविधा पुरविणे हे महानगरपालिकेचे काम असल्याने कानावर हात ठेवता येणार नाही. सर्वच अधिकारी गेंड्याचे कातडीचे झाले आहेत. संबंधित अधिकाऱ्यावर सदोष मनुष्यवधाचा गुन्हा दाखल करून त्याला कठोरात कठोर शिक्षा केल्यास इतर अधिकाऱ्यांनाही धडा मिळेल. गटारावरची झाकणे बंद करण्यास सांगण्यासाठी न्यायालयाला महानगरपालिकेचे कान उपटावे लागणे याला काही अर्थ नाही. न्यायालयाकडे इतर अनेक कामांचा व्याप आहे. नागरी सुविधांच्या संदर्भात २०१३ साली न्यायालयाने स्वतःहून याचिका दाखल करून घेतली होती. त्यानंतर २०१८ मध्ये तपशीलवार आदेश देत खड्डेविरहित रस्ते हा नागरिकांचा मूलभूत हक्क असल्याचे सांगून महानगरपालिका व संबंधित स्थानिक स्वराज्य संस्थांनी या सुविधा पुरवाव्यात असे निर्देश दिले होते. तरीही महानगरपालिकेने दुर्लक्ष केले असेल तर हा न्यायालयाचा अवमान नव्हे का? याचिका निकालातसुद्धा निघाली. न्यायालयाचा अवमान करणाऱ्याला शिक्षा व्हायला हवी ती झाली का, हा प्रश्न मात्र अनुत्तरित राहतो.

■ **दत्ताराम गवस,** कल्याण

नव्या वळणाचे पाणी!

शेतकऱ्यांनी कसं वागावं याचे हजार ॲप्स काढले जातात, पण सरकारने कसं वागावं याचं अल्पकालीन, दीर्घकालीन धोरणच ठरत नाही. त्यामुळे पॅकेज हे या सर्वांवरचं उत्तर असतं, अशी शेतकऱ्यांची भावना होते. 'मदत केली ना, करतो आहोत ना' असा बेमुर्वतपणा याच मानसिकतेतून येतो. पुढे जायचे असेल तर मागण्याही बदलायला हव्यात...

लोक-लौकिक

सुहास सरदेशमुख
suhas.sardeshmukh
@expressindia.com

पाणी मोजण्याचं पहिलं मोजमाप हे 'द्रोण'. कौटिल्याच्या काळातलं. पहिल्यांदा पेरणी कुठे झाली असेल? जेव्हा पेरले गेले तेव्हाही असाच राक्षसी पाऊस पडत असेल का? - दुष्काळ आणि पूर यामुळे माणसाने अनेकदा घरदारं सोडली. मानवाचा भूगोल आणि इतिहास हा पर्यावरणाशी जोडलेला आहेच. अगदी आजही पाच हजार वर्षांपासूनचे जुने संदर्भ ताजे वाटावे, अशी जलसंस्कृतीची व्याप्ती. त्याचं वर्तमानही इतिहासाच्या खोल पायऱ्या उतरायला लावणारं.

उभं राहिलं तर छताच्या आडूला डोकं लागेल एवढ्या उंचीवर टाकलेले सहा पत्रे. नवऱ्याने आत्महत्या केल्यावर एकदा अश्रूंचा पूर येऊन गेला असेल. आता निस्तेज डोळे. नजरेत दुष्काळ. न थकता मुलास शिकवण्यासाठी झटणाऱ्या अनेकजणींना भेटल्यानंतर चिवटपणे झुंजणाऱ्यांच्या नजरेत एक आस सतत दिसायची, ती पाण्याची. हरलेला पुरुष आणि झुंजणाऱ्या महिला. हे हवामान बदलाच्या काळातील एक प्रारूपच. पण अशा अनेक बाबींकडे कशी डोळेझाक होते कोण जाणे.

प्रत्येकाची एक कार्यसंस्कृती. कामाची पद्धत कशी असायला हवी यावरून बरेच खल करता येतील. अलीकडे आपली कृषी आणि जलक्षेत्रातील कामाची पद्धत काय? - 'पॅकेज. या तीन अक्षरात उत्तर सामावेल. प्रश्न सुटला नाही तरी चालेल. माणसं मदतीच्या अपेक्षेने सतत मिंधेपणात जगावीत आणि नवनवीन 'मदत' दिल्याचे श्रेय पदरी पाडून घ्यावे, अशी राज्यकर्त्यांची मानसिकता. दोलायमान पर्यावरणीय संकटाच्या काळात नव्या कृषी सांस्कृतिक जगात अनेक बाबी कशा निसटून जातात, हे कळतही नाही. मृग नक्षत्रात पेरणीएवढा पाऊस झाला, उत्तम--- वापसा------ झाला. पुढे पेरण्या झाल्या की, सगळं काही वेळेबर हुकूम होतं असं गृहीत धरून आपलं नियोजन. पण असं कदाचित होणारही नाही, असा विचार आपण का करत नाही? कोणतंही नियोजन न करता कृषी संस्कृती विकसित होत गेली. नांगरणी, पेरणीची यंत्रही बदलली. काढणीमध्येही यांत्रिकीकरण आलं. 'एआय' या दोन अक्षरात सारं सामावता येतं असाही विचार सुरू झाला. पण कृषिमंत्र्यांनी विपरीत परिस्थितीमध्ये टिकाव धरणारं बियाणे विकसित केल्याची घोषणा केल्याचं गेल्या काही वर्षांत आठवत नाही, असं का असेल?

याच काळात नदीकिनारी असणाऱ्या गावातील तुलनेने 'श्रीमंत' माणसं 'आरक्षण' मागणीला पुढे रेटत आहेत. दोलायमान पर्यावरणाने नदी पट्ट्यांत निर्माण होऊ शकणारी श्रीमंतीही निसर्गाने ओरबाडून नेली आहे. जे झालं ते कमालीचं दुःखदायक आहे. आता नदीमध्ये वाळू उपसा करणाऱ्या मंडळींना संरक्षण देणारी राजकीय व्यवस्था मदतीसाठी पुढे येईल. कदाचित एखाद्या वाळूवाल्या आमदाराच्या हस्ते 'जलपूजना'चे कार्यक्रमही होतील, पण प्रश्न कार्यशैलीचा आहे. जेसीबी हे जलक्षेत्राचं बोधचिन्ह व्हावं, अशी स्थिती आहे. महाराष्ट्रात साधारणतः ४२ हजार २२७ गावं. या गावांमध्ये सरासरी तीन गावतलाव. म्हणजे सव्वा ते दीड लाख तलाव जुने. ते कोणी बांधले? पाण्याची गावस्तराची व्यवस्था कोणी उभी केली, अशा प्रश्नांतील उत्तरांच्या नोंदी अधिकृत नाहीत. 'अब भी खडे है तालाब' नावाचं अनुपम मिश्र यांचं एक पुस्तक अशा नोंदीसाठी फार उपयोगाचं. गावात पिण्याचं पाणी, कपडे धुण्याचे तलाव वेगवेगळे असावे, अशी समज समाज म्हणून हळूहळू विकसित होत गेली. कालौघात गावातील तलाव फक्त जनावरांच्या पिण्याच्या पाण्यासाठी वापरले जाऊ लागले. पाणीपुरवठ्याच्या स्वतंत्र विहिरी झाल्या. या योजनांच्या नावे खूप पैसे खर्च झाले खरे, पण त्यातून फारसं हाती काही लागलं नाही. 'जलजीवन मिशन' या नव्या योजनेची तर सगळीकडे फसगतच.

पाणी कसं वापरायचं, किती वापरायचं हे कळायला दुष्काळ यावा लागला. दुष्काळी वर्षात पाणी वापरण्याचं शहाणपणं वाढलं. हवे असणारे बदल त्यात केले जाऊ लागले. जर पाऊस आलाच नाही तर किमान जेव्हा पाणी असतं तेव्हा ते राखून ठेवावं लागतं, हेही अलीकडे समजू लागलं होतं. सरकारनेही त्याला प्रोत्साहन दिलं. त्यातून शेततळ्यांच्या योजनेने हातपाय पसरले. तत्पूर्वी जलयुक्त शिवारच्या माध्यमातून अल्पकालीन पाणी व्यवस्थाही समाजाच्या सहकार्याने उभी करण्यास यश मिळू लागलं होतं. पण याच कालावधीत कोरडेपणाला कंटाळलेल्या पुरुषांना हरताना बघणं, हे कमालीचे वेदनादायी होतं, आजही ते आहे. सरासरी प्रतिदिन तीन शेतकऱ्याचं मरणं हे पावसाशी संबंधित. पावसाचं येणं आणि न येणं यावर जगण्याची गणितं बदलत जातात. एखाद्या वर्षात नदीकाठचं सारं वैभव पुरात वाहून जातं आणि होत्याचं नव्हतं होतं. सध्या हे घडतंय.

'मानवी इतिहास म्हणजे मानव आणि पर्यावण यांचा सहसंबंध. पर्यावरण ही मानवी विकासातील धोंड आहे. तिला टाळून कोणी काहीही करू शकत नाही. माणूस पर्यावरणाचा गुलाम आहे. त्याला टाळण्याचा प्रयत्न केला तर प्रचंड उलथापालथ होईल.' इतिहासाची पर्यावरणीय मांडणी करणाऱ्या फर्नांड ब्रॉडेल यांची ही व्याखा. पर्यावरण आणि इतिहासावर फ्रेंच अभ्यासकाचे 'ॲनल्स' नावाच्या नियतकालिकात लेख प्रकाशित होत. या यादीतील लेखकांना 'ॲनल्स संप्रदाय' म्हटले जाते. एवढा अभ्यास जगभर सुरू आहे. भारतातील पर्यावरणीय बदलांचा इतिहास मधुकर ढवळीकर यांच्या 'भारताची कुळकथा' या पुस्तकात उपलब्ध आहे. असा इतिहास वर्तमानातील घडमोडींना सामोरे जाताना गरजेचा असतो, हे राज्यकर्त्यांना कळेल अशी शक्यता सध्या कमीच आहे.

अलीकडच्या काळात इतिहासातील नोंदी पुसणाऱ्या घटनाही राज्यात घडताहेत. १९९३ च्या भूकंपामध्ये अनेक गोष्टी गाडल्या गेल्या. गावंच्या गावं उद्ध्वस्त झाली. या बदलाची कारणं कळण्यापूर्वी हवामान बदलाच्या कचाट्यात प्रदेश अडकल्याची जाणीव निसर्ग देतो आहे. तरीही पावसाचा विचार वार्षिक सरासरीने करण्याची पद्धत रूढ करून ठेवली गेली. ती युरोपीय विचार पद्धती. खरेतर दोलायमान प्रदेशातील पावसाचा विचार किमान सहा वर्षांचा असावा. त्या आधारे विकासाचे नियोजन ठरावे, अशी मांडणी आता माधवराव चितळे यांच्यासारखे जलतज्ज्ञ करू लागले आहेत. मराठवाड्यासारख्या भागातील हवामानाची दोलायमानता एकास तीन अशी. म्हणजे तीन वर्षे पावसाची आणि एक वर्ष दुष्काळाचे. हे गणित उलटेही होऊ शकते. तीन वर्षे दुष्काळाची एक वर्ष पावसाचे. गेल्या १५ वर्षांपासून ही दोन्ही प्रारूपे अनुभवणाऱ्या भागातील राज्य व्यवस्था आणि प्रशासकीय व्यवस्थेमध्ये 'पर्यावरण बदल' हा घटक केंद्रस्थानी मानून बदल करणे आवश्यक होते. पण तसे झाले का? 'पोकरा' योजना आली. हवामान अधारित नवे उपक्रम हाती घेण्याच्या योजनेत भरपूर निधी आला आणि त्याचे मूळ रूपच पालटले. आता त्यातही अनुदानाच्या योजना आल्या.

सोयाबीनसारख्या पिकास ३० दिवस पाणीच मिळाले नाही किंवा ४० दिवस पीक पाण्यात उभे राहिले तरी त्याची उत्पादकता कायम टिकायला हवी, असे संशोधन बियाणांमध्ये करण्याची गरज आहे. केवळ सोयाबीन नाही तर मका, ज्वारी, बाजरी आणि मुख्यतः कापूस यावर संशोधनासाठी किती पैसा उपलब्ध आहे, हे कधी कृषी विभागाच्या वतीने जाहीर होते का? उत्तर नकारार्थीच आहे. नाही म्हणायला ऊस आणि दूध या क्षेत्रात संशोधन होताना दिसते. त्यातही दुधातील संशोधन हे खासगी उद्योजकांच्या हाती अधिक. ऊस पिकावर आपले राजकीय प्रेम अधिक. अगदी वापरले जाणारे खत सर्वाधिक कोणत्या पिकांवर खर्च होते, याचे गणित मांडले तरी खतावरची सबसिडी कोण उचलते हे कळेल. त्यातून राज्यकर्त्यांची 'साखरमाया' लक्षात येईल. डाळी, सोयाबीन आणि अगदी कापूसही आयात झाला तरी चालेल असे आपले 'आत्मनिर्भर' धोरण आहे. त्यामुळे कमी क्षेत्रावरील पिकावर अधिक संशोधन आणि अधिक क्षेत्रावरील पिकांच्या संशोधनासाठी पैसाच नाही, असे चित्र आहे. एकीकडे कृषी विद्यापीठांमधून दोलायमान पर्यावरण असणाऱ्या भागात कोणते पीक घ्यावे, याची शिफारस करणारे एकही संशोधन नाही. दुसरीकडे कृषी विद्यापीठाची हजारो एकर शेती पडीक आहे. त्यामुळेच पूर किंवा दुष्काळ आला की मदतीचे 'पॅकेज' वाटण्याचे राजकीय खेळ रंगतात. त्याची एक नवी संस्कृती विकसित झाली आहे. केवळ मदतीच्या जोरावर जगणाऱ्यांसमोर मग कसेही वागले तरी चालते. उदाहरण म्हणून मार्च महिन्यात साजरा केलेला जलदिन आठवून बघा. प्रत्येक कार्यक्रमात शासकीय कार्यालयात 'मंगल कलश' पुजला गेला. एखाद्या गोष्टीची पूजा केली की, राज्यकर्त्यांना आवडते, हे आता नोकरशाहीतील मंडळींनी ओळखले आहे. त्यामुळे मूलभूत काम करण्यात कोणाला रस कसा असेल? संकट आले की एका नव्या घोषणेचा डाव मांडायचा, असं चित्र दिसून येत आहे. जलसंस्कृतीचे जुने संदर्भ वापरून फार तर काय करायचे तर, जलयात्रा काढायची. त्यातून प्रबोधन झालं असं मानण्याचा काळ आहे. मुळात शेतकऱ्यांनी कसं वागावं याचे हजार ॲप काढायचे पण सरकारने कसं वागावं याचं अल्पकालीन, दीर्घकालीन धोरणच ठरत नाही. त्यामुळे पॅकेज हे या सर्वांवरचं उत्तर असतं, अशी शेतकऱ्यांची भावना होते. हा समज काहीअंशी मान्य होईल, पण सरकारलाही 'पॅकेज' हे आणि एवढेच उत्तर असते, असे का वाटते कोण जाणे? 'मदत केली ना, करतो आहोत ना' असा बेमुर्वतपणा याच मानसिकतेतून येतो. मग पुढे जायचे असेल तर मागण्याही बदलायला हव्यात. 'पॅकेज नको', असा याचा अर्थ नाही. अशी मदत ही पहिली पायरी असते. पुढील काळात पीक आणि पर्यावरण याची सांगड घालणारी दृष्टी विकसित केली जाणार का, असा प्रश्न आहे. पण प्रश्न विचारणं हा गुन्हा ठरवला जात आहे. अशा काळात एखादा पूर आणि दुष्काळ या संकटाचा एकत्र विचार होईल. काही नवी व्यवस्था जन्माला येईल असं मानणं अवघड आहे. त्यापेक्षा मंगल कलशातील जलपूजन हा उत्तम सोपा आणि 'फोटोजेनिक' उपाय आहे.

कुतूहल

'जेनेन्टेक'चे संस्थापक

हर्बर्ट बॉयर हे १९५८ साली जीवशास्त्राचे आणि रसायनशास्त्राचे पदवीधर झाले. त्यांनी पिट्सबर्ग विद्यापीठात पीएच.डी.साठी जनुक संरचन नियमावली (जेनेटिक कोड) यावर संशोधन केले आणि १९६३ साली पीएच.डी. पदवी प्राप्त केली.

पीएच.डी.चे संशोधन करत असताना गुणसूत्रातील डीएनए एका जीवाणूतून दुसऱ्या जीवाणूत कसे शिरत असावे, हे कुतूहल त्यांना स्वस्थ बसू देत नव्हते. या विषयावरील पुढच्या संशोधांनासाठी ते १९६३ साली एडवर्ड एडेलबर्ग यांच्या विभागात येल विद्यापीठात दाखल झाले. १९६६ पर्यंत ते प्लस्मिडचे शुद्धीकरण आणि जीवाणूमधील डीएनए कापणारी किंवा ते बदलणारी विकरे यांचा अभ्यास करत होते. १९६६ साली त्यांच्या लक्षात आले की, या विकरांमुळे डीएनए कापून पुन्हा जोडता येईल व डीएनएच्या गुणधर्मांचा अभ्यास करता येईल. सनफ्रान्सिस्को येथील कॅलिफोर्निया विद्यापीठात त्यांनी सूक्ष्मजीवशास्त्रामधील सहाय्यक प्रोफेसरचे पद स्वीकारले. पेशी डीएनएमधील वैशिष्ट्यपूर्ण बेसेसचा क्रम कसा ओळखता येईल यासाठी १९७२ साली डीएनए कापणारी (रेसट्रिक्शन) आणि बदलणारी विकरे (एन्झाइम मॉडिफिकेशन) यावर त्यांनी संशोधन सुरू केले. त्यांचा पीएच.डी.चा विद्यार्थी बॉब हेलिंग याने इश्चेरीशीय कोलायमधील डीएनए कापणारे एक विकर शोधून काढले. त्याचे नाव 'ईको आर आय' (एः फ्क्र). या विकराचा फायदा म्हणजे डीएनएच्या शेवटी तयार झालेले पसरणारे एकेरी धागे या विकरच्या मदतीने परत एकत्र जोडू शकत होते. लगेचच त्यांनी स्टानफोर्ड विद्यापीठाच्या डॉक्टर स्टान्ली कोहेन यांच्या मदतीने पहिला संयोजित डीएनएचा रेणू बनवला. तो बनवण्यासाठी त्यांनी स्वतः तयार केलेले विकर आणि स्टान्ली कोहेन यांचे प्लस्मिड तंत्रज्ञान उपयोगात आणले.

हर्बर्ट बॉयर

त्यांनी भांडवलदार रॉबर्ट स्वानसन यांच्या मदतीने १९७६ मध्ये जैवतंत्रज्ञान वापरणारी पहिली व्यापारी कंपनी 'जेनेन्टेक' प्रस्थापित केली.१९७६ ते १९९१ या प्रदीर्घ काळात ते या कंपनीचे उपाध्यक्ष होते. १९८२ साली त्यांनी इलाय-लिले या कंपनीशी करार करून 'ह्युमिलीन'सारखे मानवी इन्शुलीनसारखे प्रथिन तयार करून त्याला औषध व अन्न प्रशासनाची मान्यता मिळवली. हे जैवतंत्रज्ञानाने निर्मित जगातील पहिले उत्पादन ठरले.

१९८० साली त्यांना लास्कर पुरस्काराने, १९९० साली नॅशनल मेडल ऑफ सायन्स आणि २००७ साली पार्किन मेडलने सन्मानित करण्यात आले. त्यांचे १००हून अधिक लेख न्यूक्लेइक ॲसिड, जीन, बायोटेक्नॉलॉजी यासारख्या संशोधनपत्रिकांत प्रसिद्ध झाले आहेत.

– डॉ. रंजन गर्गे
मराठी विज्ञान परिषद
ईमेल : office@mavipa.org
संकेतस्थळ : www.mavipa.org

व्यक्तिवेध

वर्षानुवर्षे दुष्काळात होरपळणारा मराठवाडा यंदा पुराने वेढला जात असतानाच या दुष्काळाची वेदना आपल्या साहित्यातून मांडणाऱ्या भास्कर चंदनशिव यांनी या जगाचा निरोप घेतला आहे. भास्कर देवराव यादव असे त्यांचे पूर्ण नाव. दत्तक गेल्यामुळे ते भास्कर तात्याबा चंदनशिव म्हणून ओळखले जायला लागले. त्यांचा जन्म १२ जानेवारी १९४५ चा. वयाच्या विसाव्या वर्षी त्यांनी कथालेखनाला सुरुवात केली. १९७० च्या आसपास औरंगाबादमधील कथालेखनस्पर्धेत त्यांच्या 'मसणवाटा' या कथेला प्रथम पारितोषिक मिळाले. 'अस्मितादर्श' या गंगाधर पानतावणे यांच्या नियतकालिकात त्यांच्या कथा यायला लागल्या. दलित साहित्याच्या प्रांतात भास्कर चंदनशिव यांचे नाव महत्त्वाचे गणले जाऊ लागले. १९८० साली त्यांचा 'जांभळ ढव्ह' हा कथासंग्रह 'लोकवाङमय गृह'ने प्रकाशित केला. साहित्य संस्कृती मंडळाने त्याला नवलेखक अनुदान दिले. या संग्रहापासून ते 'आजच्या आणि उद्याच्या महाराष्ट्राचा एक समर्थ दलित लेखक' म्हणून ओळखले जायला लागले. पुढे ग्रामीण मातीशी जोडलेला, गावगाड्यात पाय घट्ट रोवून उभा असणारा शेतकरी हा त्यांच्या लिखाणाचा केंद्रबिंदू झाला.

भास्कर चंदनशिव

कवी इंद्रजित भालेराव त्यांच्याबद्दल लिहितात की त्या काळात दलित साहित्यात बाबूराव बागल आणि ग्रामीण साहित्यात आनंद यादव, रा. रं. बोराडे ही नावे आघाडीवर होती. चंदनशिव यांनी या दोन्हीमधील सीमारेषा पुसून काढत दलितांमधला विद्रोह आणि शेतकऱ्याच्या जीवनातील संघर्ष यांना आपल्या साहित्याचा केंद्रबिंदू केले. लाल चिखल ही त्यांची कथा दहावीच्या अभ्यासक्रमात समाविष्ट होती. 'जांभळ ढव्ह', 'मरणकळा', 'नवी वारूळ', 'बिरडं', 'अंगारमाती'या कथासंग्रहांमधून त्यांनी दलित, शोषित वर्गाच्या संघर्षाचे चित्रण केले. पाच कथासंग्रहातील एकूण ५० कथांच्या बळावर भास्कर चंदनशिव हे समर्थ लेखक ठरले.

ग्रामीण जीवनाला स्पर्श करणाऱ्या कथासंग्रहांनी शेती क्षेत्रात जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेमुळे तेथील लोकांच्या वाट्याला आलेला संघर्ष मांडण्याचे काम केले. त्यांनी समीक्षा लेखनही केले. मराठवाडा शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित आष्टी येथे वरिष्ठ महाविद्यालयात मराठीचे प्राध्यापक म्हणून काम सुरू करून त्यांनी वेगवेगळ्या महाविद्यालयांमध्ये मराठीचे अध्यापन केले. सेवानिवृत्तीनंतर ते कळंब येथे स्थायिक झाले होते.

दलितमित्र पुरस्कार, महाराष्ट्र शासनाचा उत्कृष्ट वाङमयनिर्मिती पुरस्कार, आचार्य अत्रे पुरस्कार, बी.रघुनाथ पुरस्कार, पु.भा.भावे पुरस्कार, अ.वा.वर्टी पुरस्कार, दिवाकर कृष्ण पुरस्कार, आनंदीबाई शिर्के पुरस्कार आणि दमाणी पुरस्कार इत्यादी महत्त्वाच्या पुरस्कारांनी त्यांना गौरविण्यात आले होते. महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळाचे सदस्य म्हणूनही त्यांनी काही काळ काम केले. अस्मितादर्श साहित्य संमेलन, मराठवाडा साहित्य संमेलन, वाळवा येथे झालेले ग्रामीण साहित्य संमेलन यांचे ते अध्यक्ष होते. २००३ सालचा ग्रामीण साहित्याच्या क्षेत्रातील महाराष्ट्र फाउण्डेशन विशेष पुरस्कार भास्कर चंदनशिव यांना जाहीर झाला होता. शेती आणि शेतकरी हे दोन्ही घटक एकूणच परिस्थितीच्या रेट्यात अधिकाधिक पिचले जात असताना त्यांचे प्रश्न आपल्या लेखणीच्या ताकदीने लोकांसमोर आणू इच्छिणाऱ्या नव्या पिढीतील लेखकांसाठी भास्कर चंदनशिव हे कायमच प्रेरणादायी राहतील.

तर्कतीर्थ विचार

धर्मजिज्ञासू महात्मा गांधी

तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी आणि महात्मा गांधी पत्रानुबंध असो वा ऋणानुबंध असो, या सर्वांमागे गांधींची धर्मजिज्ञासा सक्रिय होती, हे लक्षात येते. गांधी - तर्कतीर्थ औपचारिक संबंधांचे रूपांतर अनौपचारिक संबंधात करण्यात जमनालाल बजाज, हरिभाऊ फाटक, काकासाहेब कालेलकर, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, न. वि. तथा काकासाहेब गाडगीळ, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, ग. वा. तथा दादासाहेब मावळणकर प्रभृती मान्यवरांचा सिंहाचा वाटा तर होताच; पण महात्मा गांधींना तर्कतीर्थांनी प्रभावित व धर्मप्रबुद्ध केले, ते स्वतःच्या वेद, उपनिषद, पुराण, ब्राह्मणग्रंथ इत्यादींवरील व्यासंगी अधिकारामुळे आणि धर्माधारांचे आकलन समकालीन संदर्भात स्पष्ट करून मानवलक्ष्यी आधुनिक धर्ममीमांसा करण्याच्या हातोटीमुळे. शब्दप्रमाण हिंदू धर्मचिकित्सा बुद्धिप्रमाण करण्याचे विसाव्या शतकातील ऐतिहासिक कार्य जर कुणी एकांड्या शिलेदारीने केले असेल तर ते तर्कतीर्थांनी.

तर्कतीर्थ - गांधी पत्रानुबंध व ऋणानुबंध हा सनातनतेकडून नवमानवतावादाकडे जाणारा आहे. महात्मा गांधींच्या व्यक्तिमत्त्वामधील ठळक पैलू म्हणजे त्यांची धर्मजिज्ञासा. गांधी स्वतःस धार्मिक मानत असले, तरी ते धर्माचे शब्दप्रमाण अंधानुकरण करणारे धर्मश्रद्ध खचितच नव्हते. धर्मविषयक त्यांची जिज्ञासा विचारशील, प्रश्नांकित आणि खरं तर प्रयोगशील होती असे दिसते. गांधी 'सत्य' आणि 'अहिंसा' हीच धर्माची मूळ मूल्ये मानत. 'सत्य म्हणजे देव आणि देव म्हणजे सत्य' या त्यांच्या विधानातून ते स्पष्ट होते. अहिंसा हे महात्मा गांधींच्या लेखी सत्यप्राप्तीचे साधन होते. सदाचार हाच धर्म मानणारे गांधी अनेक धर्मांमध्ये समन्वय साधू इच्छित होते. गांधींची 'सर्वधर्मसमन्वय' वृत्ती लक्षात घेऊनच तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी यांनी 'सर्वधर्मसमीक्षा' (१९८४) ग्रंथ रचला होता. महात्मा गांधी 'गीता', 'बायबल', 'कुराण', 'त्रिपिटक', 'आगम सूत्रे'चे अभ्यासक होते. गांधी आश्रमांतील प्रभात नि सायंप्रार्थनेत सर्वधर्म प्रार्थना असत. धर्माच्या नावाखाली चालणारी कर्मकांडे, अंधश्रद्धा, शोषण यांचे अनुकरण व समर्थन महात्मा गांधींनी कधी केले नाही. 'सेवा हीच माझी प्रार्थना' म्हणणारे महात्मा गांधी मानवधर्मी होते.

'माझे सत्याचे प्रयोग' या आत्मकथेत महात्मा गांधी जसा धर्मोच्चार करतात, तसाच तो विविध व्यक्तींना लिहिलेल्या पत्रांमधूनही करताना दिसतात. पंडित जवाहरलाल नेहरूंना लिहिलेल्या एका पत्रात महात्मा गांधींनी म्हटले होते की, ''माझा धर्म केवळ मंदिरातल्या विधींमध्ये नाही, तो माझ्या प्रत्येक कृतीत आहे. राजकारण हे धर्माधिष्ठित असावे म्हणणाऱ्या महात्मा गांधींनी ते द्वेष, वैर यांवर उभे न करता नैतिकता, समन्वय आणि सद्भाव यांवर बेतले होते, हे लक्षात घेण्यासारखे आहे. धर्म जीवन कसे जगायचे ते शिकवतो.'' सरदार वल्लभभाई पटेल आणि काकासाहेब गाडगीळ एकदा सोरटी सोमनाथ मंदिर जीर्णोद्धाराचा प्रस्ताव घेऊन महात्मा गांधींकडे गेले असता, गांधींनी दोन अटींवर त्यास संमती दिली होती. एक म्हणजे मंदिराचा जीर्णोद्धार स्वराज्य फंडातून न करता लोकवर्गणीतून करावा आणि दुसरी अट होती जीर्णोद्धारित मंदिर सर्व जाती-धर्मांना मुक्त प्रवेश देणारे असेल. प्रस्तुत मंदिर उभे राहिल्यावर सर्व शंकराचार्यांनी मंदिर प्राणप्रतिष्ठेस नकार दिल्यावर तर्कतीर्थ या प्राणप्रतिष्ठेचे आधुनिक पौरोहित्य करतात नि पौरोहित्य दक्षिणा नाकारून तो निधी संस्कृत विद्यापीठ निर्माण करावे म्हणून दान करतात, अशी असते तर्कतीर्थ-गांधी विचार आणि व्यवहाराची सुसंगती.

तर्कतीर्थांनी सन १९४१मध्ये 'हिंदुधर्माची समीक्षा' ग्रंथ प्रकाशित केला होता, तेव्हा त्याच्या प्रस्तावनेत स्पष्ट केले होते की, ''जे जुने जग गळ्यातील लोढणे बनून मनुष्याच्या प्रगतीस अडथळा करीत आहे, त्याचा विनाश करणारी शास्त्ररूपी विचारशस्त्रे निर्माण करण्याचा प्रयत्न अनेक पुरोगामी तत्त्वचिंतक व कर्तृत्वशाली लोक करीत आहेत. या शास्त्ररूपी शस्त्रांनी जुन्या जगाशी लढता लढता, जुन्या व वर्तमान समाजातील मानसिक व भौतिक दास्याचा ज्यात मागमूसही नाही, असे सगळ्या समाजघटकांना सारखेच स्वातंत्र्य प्राप्त करून देणारे, सर्व समाजघटकांच्या कर्तृत्वाच्या पूर्ण विकासास अवसर देणारे नवे जग घडवायचे आहे.'' वर्तमानात हे आव्हान पेलायचे तर आपण धर्माचे पुरोगामी सीमोल्लंघन केले पाहिजे, तरच नवे जग निर्माण होईल.

– डॉ. सुनीलकुमार लवटे
drsklawate@gmail.com

माणसांची माकडे होत असताना...

तरुण जेन गुडालचे अफ्रिकेत जाणे हे कोलंबसाने अमेरिकेत जाण्याइतकेच महत्त्वाचे होते... तिच्यामुळे चिम्पांझींची बौद्धिक आणि भावनिक कुवत जगाला नव्याने कळली!

मनुष्यांतील माकडपण वाढू लागलेले असताना माकडांतील माणूसपण आणि माणुसकी यांचा शोध घेणाऱ्या निसर्गस्नेही जेन गुडाल यांचे जाणे जगभरातील समानधर्मींसाठी वेदनादायी असेल. इंग्लंडने जगास फार मोठे पर्यावरणप्रेमी अभ्यासक दिले. जिम कॉर्बेट, केनेथ अँडरसन, सर डेव्हिड अॅटनबरो इत्यादी. अशा देदीप्यमानांच्या मालिकेतील जेन गुडाल या शेवटच्या. यांची तुलना करणे अयोग्य; पण तरीही अन्यांपेक्षा जेन गुडाल यांचे मोठेपण या आणि अशा सर्वांस पुरून उरते. प्रत्येक बाल्याच्या मनात जन्मतःच असलेले निसर्गप्रेम सहृदय, जागरूक पालकत्वामुळे एखाद्याच्या जगण्याचे प्रयोजनच कसे बनते आणि अशी व्यक्ती मग इतरांसाठीही कसे प्रेरणादायी आयुष्य जगून जाते याचे अत्यंत सात्त्विक, सालस उदाहरण म्हणजे जेन गुडाल. ''आसपास जे काही चालले आहे ते पाहून उद्विग्नता येते. वाटते अंथरुणातून उठूच नये. पण लक्षात येते की वाचवायला हवे, असे अजूनही बरेच काही आहे. ही जाणीव पुन्हा नवी ऊर्जा देते आणि दिवस सत्कारणी लावण्याची प्रेरणा मिळते'' असे म्हणणाऱ्या गुडाल गेल्या तेव्हा (फक्त) ९१ वर्षांच्या होत्या. 'वॉल स्ट्रीट जर्नल'चे तीन ऑक्टोबरचे पॉडकॉस्ट, न्यू यॉर्क येथे दोन ऑक्टोबरच्या व्याख्यानाची तयारी अशा कामाच्या तयारीत असताना त्या गेल्या. त्यांच्याइतके भव्यदिव्य काही करणे प्रत्येकास शक्य होईल, न होईल. पण आपल्या माणूसपणाशी इमान राखण्याची इच्छा असलेल्या प्रत्येकासाठी त्यांच्या आयुष्याची चित्तरकथा काही ना काही देणारी असेल. म्हणून ती सांगायला हवी.

लहानपणी जेनला तिच्या वडिलांनी ज्यास सॉफ्ट टॉय म्हणतात तशी एक माकडी बाहुली दिली. ती निर्जीव बाहुली त्यांना मोठेपणी खऱ्या माकडांकडे आकृष्ट करती झाली. अन्य कोणाही लहानग्याप्रमाणे कुतूहल हे जेनमध्ये ठासून भरलेले होते. कोंबडीचे अंडे नक्की येते कोठून हे पाहण्यासाठी लहानग्या जेनने आपल्या परसातील खुराड्यात मुक्काम ठोकला. आईस वाटले जेन हरवली. प्रकरण पोलिसांत तक्रार करण्यापर्यंत गेले. तिच्या शोधमोहिमेत पोलिसांची तुकडी घरात यायला आणि खुराड्यातून ताजे ताजे अंडे हातात घेऊन जेन बाहेर यायला एकच गाठ पडली. प्रसंग तणावाचा. पालकांचे हात आणि बालकांची पाठ यांच्या संयोगाचा. पण जेन भाग्यवान अशी की इतके रामायण घडत होते तरी तिची आई एका चकार शब्दाने तिला रागावली तर नाहीच; उलट अंडे बाहेर कसे येते याची बालसुलभ उत्साहीकथा पोलिसांच्या देखत तिने जेनला सांगू दिली. त्यामुळे वयाच्या अवघ्या २३ व्या वर्षी जेन कधीही न पाहिलेल्या, अत्यंत मागास अशा बदलौकिक झालेल्या आफ्रिकी देशात नवे काही करण्याच्या शोधात जेव्हा जायला निघाली तेव्हा मुलींना एकट्याने प्रवासाची परवानगी नसल्याने ''मी येते तुझ्याबरोबर'' असे म्हणत आईनेच तिला साथ दिली. खुद्द जेन यांनीच आपल्या आईचे हे वर्णन लिहून ठेवलेले आहे. जेनच्या मैत्रिणीच्या वडिलांनी नैरोबीत एक व्यवसाय सुरू केला होता आणि तेथे काम करण्यासाठी तिला विचारणा केली होती. इंग्लंडपेक्षा वेगळ्या, खऱ्या निसर्गाच्या सान्निध्यात जगायला मिळेल या एकाच विचाराने जेनने होकार दिला. जेनचे आफ्रिकेत जाणे हे कोलंबसाने अमेरिकेत जाण्याइतकेच महत्त्वाचे होते. दोघांनीही नव्या संस्कृतीचा वेध घेतला.

त्या परिसरात माकडे- त्यातही चिम्पांझी विशेष - भरपूर. तो सगळा टापू त्यांचाच. या माकडांची निरीक्षणे जेन करू लागली. त्यातील एका दृश्याने जेन कमालीची उत्साहित झाली. एक नर चिम्पांझी गवताच्या पात्यांची भेंडोळी करून विशिष्ट पद्धतीने वारुळात सरकवत होता आणि थोड्या वेळाने ती काढून भेंडोळींच्या टोकाला चिकटलेल्या मुंग्या ओरपत होता. हे बराच वेळ चालले. जेनने ही घटना पाहण्याआधीही हे असेच घडत होते. महत्त्व आहे ते जेन यांनी या दृश्याचा अर्थ लावला त्याला. म्हणजे न्यूटनने नोंद घेण्याआधीही झाडावरून सफरचंदे पडतच

> ... प्राण्यांना भावना नसतात, त्यांना काही कळत नाही, त्यांचा अभ्यास तटस्थपणे करावा आदी शहाणपण शुद्ध थोतांड आहे असे त्या म्हणत...

होती आणि अनेकजण ते पाहातही होते. पण पडणाऱ्या सफरचंदाचे कारण ज्याप्रमाणे न्यूटनला 'दिसले' त्याचप्रमाणे त्या चिम्पांझी माकडाच्या कृतीचा अर्थ जेनला गवसला. आपले भक्ष्य शोधण्यासाठी, सापडल्यानंतर ते टिपण्यासाठी आणि टिपल्यानंतर त्याच्या भक्षणासाठी आयुध तयार करता येणे हे फक्त प्रगत मानवालाच शक्य आहे, असे तोवर मानले जात होते. पण ज्यांना आपण माकडे म्हणतो तीदेखील हे सर्व करण्यास सक्षम आहेत, हा जेन यांचा निष्कर्ष. जेन यांनी या निरीक्षणानंतर सदर चिम्पांझीवर, त्याच्या टोळीवर अधिक लक्ष केंद्रित केले. अधिक निरीक्षणे नोंदवली, जमेल तशी छायाचित्रे घेतली आणि ३०-४० पानांचा त्यावर आधारित लेख 'नॅशनल जिऑग्राफिक'ला धाडून दिला. वयाची तिशीदेखील न गाठलेल्या जेनचा हा लेख प्रसिद्ध झाल्यानंतर प्राणी-अभ्यासक जगात एकच खळबळ उडाली. पहिल्या प्रतिक्रियेत अर्थातच तुच्छतेने हे सर्व झिडकारले गेले. पण जेन यांच्या सातत्यपूर्ण निरीक्षणांनी सर्व तत्कालीन ढुढ्ढाचार्यांना आपापली मते बदलावी लागली. चिम्पांझी जातीची माकडे माणसांप्रमाणे टोळ्या बनवतात, माणसांप्रमाणे एकमेकांशी शब्द-नादाद्वारे संवाद साधतात, त्यांची स्वतःची युद्धधोरणे ठरतात, माणसाप्रमाणेच त्यासाठीची अस्त्रे तयार करतात इत्यादी त्यांच्या निरीक्षणांनी इतिहास घडला. जेन यांची ही निरीक्षणे सर्वमान्य झाली, चिम्पांझी हे प्रगतीबाबत मनुष्यप्राण्याच्या जवळ आहेत हे जेव्हा सिद्ध झाले तेव्हा त्या वेळचे आघाडीचे मनुष्य उगमाभ्यासक, जेन यांचे मार्गदर्शक लुईस लिके म्हणाले : आता आपणास अस्त्र, आयुध म्हणजे काय याचा विचार नव्याने करावा लागेल, मनुष्याच्या 'प्रगत'तेचा विचार नव्याने करावा लागेल अथवा चिम्पांझींचे मनुष्यत्व मान्य करावे लागेल.

यानंतरचे अवघे आयुष्य जेन यांनी मनुष्याच्या या आदिमावतारचरणी वाहिले. आफ्रिकेतील जंगले, तेथील श्वापदे, निसर्ग यांच्या अभ्यासात त्या गढून गेल्या. अन्य असे अभ्यासक आणि जेन यांच्यातील फरक हा की त्यांनी आपल्या संशोधनविषयाचे उगाच उदात्तीकरण कधीही केले नाही. चिम्पांझी प्रसंगी किती क्रूर असतात आणि आपल्या कळपातील माद्या पुन्हा लगेच माजावर याव्यात यासाठी अर्भकांना कसे मारून टाकतात हेही त्यांनी तितक्याच तटस्थपणे लिहिले. एरवी नैसर्गिकरीत्या चिम्पांझी मादी एका प्रसूतीनंतर दोन-तीन वर्षे माजावर येत नाही. कारण तिचे प्राधान्य असते आईपणास. त्यामुळे 'घाई'ला आलेले नरवानर पिल्लांचा जीव घेतात. अशा नरांपासून वाचवण्यासाठी माद्या आपल्या पिल्लांना बराच काळ लपवून ठेवतात. यातही पुरुष माकडांची लबाडी अशी की ते स्वतःच्या अपत्यास मारत नाहीत, अन्य पुरुषाच्या संगातून जन्मलेल्यांचा मात्र जीव घेतात. जेन यांची अशी निरीक्षणे माणसांत अजूनही उरलेले माकडपण सातत्याने दाखवत गेली. ते सर्व पुढे अधिक अभ्यासले गेले. सारा हार्डी यांच्यासारख्यांनी माकडांतील कुटुंबव्यवस्थेचा अधिक अभ्यास केला. आपल्याकडे मराठीत व्यंकटेश माडगूळकर यांची विख्यात 'सत्तांतर' ही कादंबरी, त्यातील 'लालबुड्या' आदी व्यक्तिरेखा या अभ्यासावर आधारित आहे. आयुष्यभर जेन यांना जंगलाचा इतका लळा होता की आपल्या तान्ह्या मुलालाही त्या जंगलात घेऊन जात. त्याच्यासाठी बनवून घेतलेल्या मजबूत पोलादी पिंजऱ्यात त्याला ठेवत. आपला अभ्यासविषय असलेल्या चिम्पांझींतील कोणी आपल्या पोटच्या पोराचा जीव घेऊ नये, यासाठी ही खबरदारी. याची कबुली त्यांनीच दिलेली आहे आणि तीदेखील चिम्पांझींना अजिबात बोल न लावता. प्राणी अभ्यासाच्या क्षितिजावर जेन यांचा उदय होण्यापूर्वी अभ्यास विषयांना फक्त क्रमांक दिले जात. म्हणजे 'टी १', 'एम ३' वगैरे. जेन यांनी प्रत्येक अभ्यासविषयाचे नामकरण केले आणि त्या सर्वांस परिचिताप्रमाणे वागवले. आणि सर्वात सुखकारक बाब अशी की ही प्राणीप्रजादेखील जेन यांना स्नेह्याप्रमाणे वागवू लागली. जेन यांच्या मुलाखती, पुस्तके ज्यांनी पाहिली/वाचली असतील त्यांना जेन आणि हा चिम्पांझी परिवार यांची अनेक लोभस छायाचित्रे परिचित असतील. प्राण्यांना भावना नसतात, त्यांना काही कळत नाही, त्यांचा अभ्यास तटस्थपणे करावा आदी शहाणपण शुद्ध थोतांड आहे, असे त्या म्हणत. हा साक्षात्कार ज्याच्यामुळे झाला त्या गुरूचा त्या आदरपूर्वक उल्लेख करत. तो गुरू म्हणजे त्यांचा पाळीव श्वान.

संपूर्ण आयुष्य जेन गुडाल यांनी प्राणी हक्क, पर्यावरणसंवर्धन यासाठी व्यतीत केले. त्यासाठी जेन गुडाल इन्स्टिट्यूट काढली. आज जगभरातील तीन डझन देशांत या संस्थेच्या शाखा आहेत. मुंबईतही ती आहे. तिच्यासाठीच गेल्या वर्षी जेन गुडाल मुंबईत आल्या. सुमारे १२-१३ तासांच्या प्रवासानंतर पहाटे उतरल्या आणि सकाळी आठ वाजता महाविद्यालयीन तरुणांच्या कार्यक्रमात सहभागी झाल्या. पुढच्या पिढीबाबतचा त्यांचा आशावाद कौतुकास्पद असा. तो पाहून त्या आशावादास तडा जाऊ नये, अशीच भावना निर्माण होते. वयाच्या ९१ व्या वर्षी वर्षाचे सरासरी ३०० दिवस त्या निसर्गसंवर्धनच्या प्रचार-प्रसारार्थ विविध मोहिमांस सहभागी होण्यासाठी जगभर प्रवास करत. त्यांचे लिहिणे, बोलणे, हिंडणे सर्व काही या विषयासाठीच. 'इन द शॅडो ऑफ मॅन', 'माय फ्रेंड्सः द वाइल्ड चिम्पांझीज' आदी त्यांची पुस्तके कमालीची लोकप्रिय आहेत. जगभरातील अनेकांच्या- यात प्रस्तुत लेखकही आहे- प्राणी/निसर्गप्रेमास जेन गुडाल यांनी शास्त्राधार दिला.

आताही त्या मुलांसाठी एका पुस्तकावर काम करत होत्या. विषय हत्ती आणि त्या आगामी पुस्तकाचे शीर्षक 'एव्हरी एलिफंट हॅज अ नेम'. ते पुस्तक पूर्ण करणे ही आता जेन यांच्या सहकाऱ्यांची जबाबदारी. ते व्हावे. उत्क्रांतीतून माकडाचा माणूस झाल्याच्या सिद्धान्ताचा प्रतिवाद 'अपक्रांतीतून माणसाचा पुन्हा माकड होऊ शकतो' या वास्तवाने करू पाहणाऱ्यांची संख्या वाढत असताना प्राण्यांतील नितळ माणुसकीसाठी जगणाऱ्या जेन गुडाल यांना 'लोकसत्ता' परिवारातर्फे आदरांजली.

लेख

विजया जांगळे
vijaya.jangle
@expressindia.com

शबरीचे वारसदार जमिनीला पारखे

> संविधानाने, कायद्यांनी आदिवासींच्या जमिनींना आणि त्यांच्या जमिनीवरील हक्कांना पुरेसं संरक्षण दिलं. पण आज याच नियमांना 'पद्धतशीरपणे' वाकवून आदिवासींवर विवेकशून्य विकासाचा वरवंटा फिरतो आहे...

लडाख हे ताजं उदाहरण, पण एकंदरच देशभरातले आदिवासी अस्वस्थ आहेत. विकासाविषयी आदिवासींच्या आणि सरकारच्या कल्पना परस्परविरोधी आहेत. त्यांना त्यांची जमीन राखून विकास हवा आहे आणि सरकार या जमिनी संपादन करून, त्यात खाणी खोदून, वीजनिर्मिती प्रकल्प उभारून तथाकथित विकास लादू पाहते आहे. लडाख, निकोबार, छत्तीसगड, राजस्थान, आसाम... सगळीकडे हेच चित्र दिसते. आदिवासींची जंगलांविषयीची परंपरागत शहाणीव, त्यांच्या वेगळ्या चालीरीती आणि त्यांच्या हक्काची जमीन यांचं जतन व्हावं, म्हणून संविधानाच्या सहाव्या परिशिष्टानं त्यांना खास संरक्षण बहाल केलं. हे विशिष्ट आदिवासीबहुल विभागांबद्दल. खेरीज, २००६च्या 'वन हक्क कायद्या'नं जंगलात राहणाऱ्यांचा तिथल्या स्थानिक संसाधनांवरचा अधिकार मान्य केला. या कायद्यानुसार वन विभागाची जमीन संपादित करायची तर ग्रामसभेची संमती बंधनकारक आहे. पण कायदे, हक्क वगैरे कागदावरच राहतात. व्यवहारात त्यांची केवळ पायमल्ली होते.

प्रस्तावित ग्रेट निकोबार प्रकल्प सुरुवातीपासूनच वादात सापडला आहे. या बेटावरचे शॉम्पेन जमातीचे लोक आजही आदिमानवासारखं जीवन जगतात. ते कधी बाह्य जगाच्या संपर्कातच आलेले नाहीत. त्यामुळे या जगातल्या रोगकारक जीवाणू-विषाणूंशी लढण्यासाठी आवश्यक प्रतिकारशक्तीच त्यांच्या ठायी नाही. हा प्रकल्प झाला आणि हे लोक बाहेरच्यांच्या संपर्कात आले, तर संपूर्ण जमातीच्याच संहाराची भीती मानववंशशास्त्रज्ञ व्यक्त करत आहेत. याच बेटावरची ग्रेट निकोबारीज जमात मासेमारी करते. त्यांनी त्यांच्या बोटींसाठी छोटी जेटी बांधून देण्याची मागणी केली होती, मात्र सरकारनं त्या छोट्याशा बेटावर बंदर, विमानतळ, वीजनिर्मिती प्रकल्प इत्यादींचा समावेश असलेला 'ग्रेट निकोबार प्रकल्प' उभारण्याचा घाट घातला आहे. जगभरातले पर्यावरणतज्ज्ञ या प्रकल्पाविषयी तीव्र चिंता व्यक्त करत आहेत. त्सुनामीने झोडपलेल्या या संवेदनशील बेटावर केलेला वारेमाप खर्च एका भूकंपात पाण्यात जाऊ शकतो, असे इशारे दिले जात आहेत. पण सरकार प्रकल्प उभारण्यावर ठाम आहे. या बेटाला परिशिष्ट सहाचं संरक्षण आहे, तरीही प्रकल्प रेटला जात आहे.

ग्रेट निकोबार बेटावरच गलाथिया बे हा सागरी कासवांचं प्रजननस्थळ असलेला भाग १९९७ पासून 'वन्यजीव अभयारण्य' म्हणून संरक्षित होता. मात्र मार्च २०२१मध्ये 'ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट' सादर होण्याच्या अवघे तीन महिने आधी जानेवारी २०२१मध्ये राष्ट्रीय वन्यजीव मंडळाच्या समितीची बैठक झाली आणि बैठकीत गलाथिया बेचा 'वन्यजीव अभयारण्य' हा दर्जा रद्द (डीनोटिफाय) करण्याचा निर्णय झाला. अभयारण्य, राष्ट्रीय उद्यानांभोवतीच्या परिसराला पर्यावरणीयदृष्ट्या संवेदनशील क्षेत्राचा ('ईएसझेड') दर्जा दिला जातो. हा परिसर निश्चित करण्याची जबाबदारी पर्यावरण मंत्रालयाकडे असते. 'ईएसझेड'मध्ये कारखाने किंवा अन्य प्रदूषणकारक प्रकल्प उभारण्यास मनाई असते. मार्च २०२१ मध्ये पर्यावरण मंत्रालयाच्या तज्ज्ञ समितीने गलाथिया बे भोवतीचा 'ईएसझेड' शून्य ते एक किलोमीटरवर आणला. अशा प्रकारे नियम वाकवून ग्रेट निकोबार प्रकल्पाचा मार्ग मोकळा करून देण्यात येत आहे. सरकारच्या इच्छेपुढे नियम-कायदे कसे निष्प्रभ ठरतात आणि आदिवासींच्या जमिनी सरकार कशा बळकावतं, याचं हे उत्तम उदाहरण.

लडाखचीही हीच अवस्था आहे. अनुच्छेद ३७० रद्द झाल्यापासून तिथे कथित हरित ऊर्जा प्रकल्प उभारण्याचे आणि तिथल्या पहाडांच्या पोटातून दुर्मीळ खनिजं प्राप्त करण्याचे मनसुबे रचले जात असल्याचे आरोप होऊ लागले. तिथल्या सौरऊर्जा प्रकल्पामुळे कुरणं आक्रसली आहेत. याची झळ जगप्रसिद्ध पश्मिना शालींसाठीची लोकर मिळवून देणाऱ्या चांगपा जमातीच्या उदरनिर्वाहाला थेट बसते आहे. 'वन्यजीव संरक्षण सुधारणा कायदा २००२' नुसार प्रत्येक राज्यात वन्यजीव मंडळ स्थापन करण्यात येतं. राज्यातल्या कोणत्या वनक्षेत्रांना संरक्षण देणं गरजेचं आहे, याविषयी हे मंडळ राज्य सरकारला सल्ला देतं. लडाख केंद्रशासित झाल्यानंतर डिसेंबर २०२० मध्ये या मंडळाची बैठक झाली. बैठकीत 'लडाखमधल्या वाढत्या लोकसंख्येसाठी आणि संरक्षणविषयक सुविधा उभारण्यासाठी अधिक जागेची आवश्यकता असल्यामुळे 'चांगथांग शीत वाळवंटी अभयारण्य' आणि 'काराकोरम अभयारण्या'च्या क्षेत्रात बदल करण्यात यावेत,' अशा सूचना देण्यात आल्या. आता तिथल्या पांग परिसरात तब्बल २० हजार हेक्टर भूभागावर अपारंपरिक ऊर्जा प्रकल्प उभारण्याचा घाट घालण्यात आला आहे. प्रकल्पात नऊ गिगावॅट सौर आणि चार गिगावॅट पवन ऊर्जा निर्मिती केली जाणार आहे. 'इंटर स्टेट ट्रान्समिशन सिस्टीम' उभारून ही वीज साधारण ७०० किलोमीटर दूर हरियाणात नेली जाईल आणि 'नॅशनल ग्रीड'मध्ये समाविष्ट करण्यात येईल. या प्रकल्पामुळे गुरांच्या कुरणांवर आणि लडाखमध्ये दुर्लभ असलेल्या पेयजलाच्या स्रोतांवर पाणी सोडावं लागलं आहे.

छत्तीसगडमधलं हसदेव हे एकेकाळी चार फुटांवरची व्यक्तीही दिसणार नाही एवढं निबिड अरण्य होतं. पण आज तिथे कोळसा खाणीतून उपसलेल्या मातीचे उघडे बोडके डोंगर मैलोगणती दिसतात. सुमारे एक हजार ७०० चौरस कि.मी.वर पसरलेल्या या अभयारण्यानं कोरबा, सूरजपूर आणि सरगुजा या तीन जिल्ह्यांना वेढलेलं होतं. इथल्या गोंड, ओराव जमाती कंदमुळं, फळं, बिया, पानं, फुलं यांवर गुजराण करत. मुबलक पाणी होतं, गुरांना चारा होता. मध्य भारताची फुप्फुसं म्हणून हे अरण्य ओळखलं जाई. अनेक वन्यजीवांचा स्थलांतराचा मार्गही याच जंगलातून जातो. कोळसा मंत्रालय आणि पर्यावरण, वने आणि हवामान बदल मंत्रालयानं केलेल्या अभ्यासाच्या आधारे २००९ मध्ये हसदेव परिसरात कोळसा खाणीस परवानगी नाकारण्यात आली होती. मात्र दोनच वर्षांत परवानगी देण्यात आली. २०१३ साली 'परसा ईस्ट कांटे बसान' ही खाण सुरू झाली. आज अवस्था अशी आहे की अरण्य सोडाच, हा परिसर आता धुळीनं भरून गेला आहे. जलस्रोतांची हानी झाली आहे. गुरावासरांना चारा नाही. सरकारी आकडेवारीनुसार या खाणीसाठी एक लाख ७० हजार झाडं तोडली गेली, मात्र प्रत्यक्षात साडेतीन लाख झाडांवर कुऱ्हाड चालवली गेली, असा स्थानिकांचा दावा आहे.

राजस्थानातल्या आदिवासींच्याही तक्रारी अशाच स्वरूपाच्या आहेत. तिथे विरोधाभास असा की, आधीच अल्प प्रमाणात असलेली नैसर्गिक हिरवाई जमीनदोस्त करून त्या जागेवर कथित हरित ऊर्जेसाठी सौर पॅनल्स उभारले जात आहेत. खेजडी या राजस्थानच्या राज्यवृक्षाचं पर्यावरणीय आणि धार्मिक महत्त्व मोठं आहे. ही झाडं तोडावी लागू नयेत म्हणून रस्ते, कंपाऊंड्सचे नकाशे बदलले जातात. त्याविषयीचे सर्व अधिकार आजवर ग्रामपंचायतीच्या हाती होते. आता मात्र सौर पॅनल्ससाठी खेजरीची झाडं बिनदिक्कत कापली जाऊ लागल्याच्या बातम्या आहेत. तिथल्या बारन जिल्ह्यातल्या साधारण ६३४ हेक्टरच्या शाहबाद जंगलापैकी तब्बल ४०० हेक्टर क्षेत्रावर ऊर्जानिर्मिती प्रकल्प उभारला जाईल. त्यासाठी सरकारी आकडेवारीनुसार एक लाख १९ हजार झाडं तोडावी लागणार असून प्रकल्पातून १८०० मेगावॉट 'हरित' वीजनिर्मिती होणार म्हणे. जंगलातून वाहणाऱ्या कुनो नदीतलं पाणी उपसून ते टेकडीवर साठवून त्यातून जलविद्युत निर्मिती केली जाईल. या भागात सहरिया या आदिवासी जमातीचे लोक राहतात. जंगलातली मोहाची फुलं, आवळा, तेंदूपत्ता, चारोळी, खैर, गोंद आणि औषधी वनस्पती गोळा करून, जंगलातली उत्पादनं शहरात विकून ते गुजराण करतात. पण आता त्यांच्या अधिवासाच्या आजूबाजूचे भूखंडही बाहेरच्या एजंटांकडून खरेदी केले जात आहेत. जंगल आक्रसू लागलं आहे. हा परिसर मध्य प्रदेशातल्या चित्त्यांसाठीच्या कुनो राष्ट्रीय उद्यानाजवळ आहे. या प्रकल्पामुळे चित्त्यांच्या भ्रमण मार्गातही अडथळे निर्माण होण्याची शक्यता वन्यजीव अभ्यासक व्यक्त करत आहेत.

आदिवासींच्या शेती पद्धती इतर शेतकऱ्यांपेक्षा वेगळ्या असतात. त्यांच्याशी चर्चा न करता, त्यांच्या जमिनीविषयीचे निर्णय घेतल्यास कसे घोळ होतात, हे दर्शवणारी घटना आसामच्या दिमा हसाओमध्ये घडली. आदिवासींची हजार एकर जागा एका खासगी सिमेंट कंपनीला देण्यावरून तिथल्या उच्च न्यायालयानं नुकतंच राज्य सरकारला फटकारलं. झालं असं की, शेतात अचानक जेसीबीचे आवाज येऊ लागले तेव्हा आदिवासी बिथरले आणि आंदोलन सुरू झालं. वैराण माळरानावर प्रकल्प उभारत असल्याचा दावा कंपनीने स्वतःच्या बचावार्थ केला, मात्र तो करताना ती, 'फिरत्या शेती'तील कस परत निर्माण होण्यासाठी सोडून दिलेली जमीन होती, हा स्थानिक संदर्भ समजून घेतला गेला नाही किंवा त्याकडे दुर्लक्ष केले गेले. विकासाच्या गाड्याखाली आदिवासींचं सर्वस्व अशाप्रकारे चिरडलं जात आहे. आसाम एकमेव नाही, ईशान्य भारतात नियमांची मोडतोड करून जमीन बळकावल्याची अनेक उदाहरणं आहेत.

एके काळी अयोध्येचा राजा आदिवासी (भिल्ल जमातीतल्या) शबरीच्या बोरांनी तृप्त होत होता. तिची श्रद्धा, रानात राहून मिळवलेली शहाणीव याचं मोल तो जाणत असावा. राजेशाही गेली, लोकशाही आली. रामाचा आदर्श बाळगल्याचा दावा करणारे ११ वर्षं सत्तेत आहेत, पण त्यांना त्यांच्या सोयीचा विकास रेटण्यासाठी जमीन हवी आहे. त्यासाठीचा अन्याय नियम-बदलांचे कागदी घोडे नाचवून होतो आहे.

अन्वयार्थ

इथे हे, तिथे ते...

वसई-विरार महानगरपालिकेचे माजी आयुक्त अनिल पवार यांना बेहिशेबी मालमत्ता आणि आर्थिक अपहारप्रकरणी 'ईडी'ने अलीकडेच अटक केली होती. त्यातच ठाणे महानगरपालिकेतील अतिक्रमण विभागाचे प्रमुख तथा उपायुक्त शंकर पाटोळे हे लाच स्वीकारताना लाचलुचपत प्रतिबंधक विभागाच्या सापळ्यात सापडल्याने मुंबई महानगर क्षेत्र परिसरातील महानगरपालिकांमधील भ्रष्ट कारभाराचे वास्तव समोर आले आहे. महानगरपालिकांच्या कारभारात बजबजपुरी माजल्याची टीका होत असली तरी अनिल पवार, वसई-विरार महापालिकेतील रेड्डी किंवा पाटोळे यांची अटक हे हिमनगराचे एक टोक मानले जाते. वसई-विरार महागरपालिकेचे तत्कालीन नगर संचालक वाय. एस. रेड्डी यांच्या निवासस्थानावर टाकलेल्या छाप्यात ३२ कोटींची रोख रक्कम व दागिने ईडीने जप्त केले. रेड्डींकडे एवढी मालमत्ता आली कुठून, या प्रश्नाची चर्चा झाली. तरी गेली तीन ते पाच वर्षे राज्यातील सर्वच महापालिकांचा कारभार हा अधिकारी म्हणजे प्रशासकांच्या ताब्यात आहे. एरव्ही नगरसेवकांवर भ्रष्टचाराचा शिक्का मारला जातो. पण अधिकारीही काही कमी नाहीत हे या प्रकरणांवरून दिसून येते.

त्यात मुंबई लाचलुचपत प्रतिबंधक विभागाने ठाणे महानगरपालिकेत कारवाई केली याला वेगळे महत्त्व. कारण ठाणे जिल्ह्यात या विभागाचे कार्यालय असून, तिथे जिल्हा अधीक्षक दर्जाचा अधिकारी आहे. तरीही ठाणे महानगरपालिकेत मुंबईचे पथक धडकले याला वेगळे कंगोरे आहेत. ठाणे हे माजी मुख्यमंत्री तथा सध्याचे उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे यांचे प्रभाव क्षेत्र. ठाण्यात त्यांच्या संमतीशिवाय कोणत्याही सरकारी यंत्रणेचे पान हलत नाही. अशा वेळी ठाण्यातील पोलीस किंवा लाचलुचपत विभागाला अंधारात ठेवून ईडी किंवा मुंबई लाचलुचपत प्रतिबंधक विभाग सक्रिय होतो यामागे काही तरी वेगळे नक्कीच शिजत असणार. शिंदे यांच्यावर कुरघोडी करण्याचा हा प्रयत्न तर नाही ना, अशी शंका येण्यास त्यातूनच वाव निर्माण होतो. त्यात अनिल पवार हे शिंदे यांचे विश्वासू मंत्री दादा भुसे यांचे नातेवाईक. ठाणे महानगरपालिकेत कोणती प्यादी कुठे हलवायची याची सारी सूत्रे कुठून हलतात हे वेगळे सांगण्याची गरज नाही.

शंकर पाटोळे किंवा राष्ट्रवादीचे आमदार जितेंद्र आव्हाड यांना धमकावण्यामुळे चर्चेत आलेले सहाय्यक आयुक्त महेश आहेर यांची महत्त्वाच्या पदांवर नियुक्ती कशी झाली हाच खरे तर संशोधनाचा विषय. पाटोळे हे उच्चपदस्थांच्या गळ्यातील ताईत. खातेनिहाय चौकशी सुरू असताना पाटोळे यांना उपायुक्तपदावर बढती देण्यात आली. सध्या ठाण्यातील अनधिकृत इमारतींचा विषय उच्च न्यायालयात चांगलाच गाजत आहे. न्यायालयाने आयुक्तांना कानपिचक्या दिल्या. ठाण्यात अनधिकृत बांधकामांचे पेव फुटले आहे. अशा वेळी अतिक्रमण विभागाचे प्रमुख या नात्याने कारवाई करणे हे खरे तर पाटोळे यांचे कर्तव्य. पण अशी बांधकामे वाचविण्यासाठी हे महाशय पैसे गोळा करत बसले. त्यांच्याकडे जमा होणाऱ्या पैशांना पाय कुठे फुटतात हा आणखी संशोधनाचा विषय. ठाण्यातील अनधिकृत बांधकामप्रकरणी न्यायालयाने पाटोळे यांच्यावर ताशेरे ओढले होते. तरीही ते किंवा आहेर सहीसलामत. अनिल पवार, रेड्डी किंवा पाटोळे यांचा 'गॉडफादर' कोण? त्यांनी काहीही घोटाळे केले तरी त्यांचे कोणी वाकडे करू शकत नाही, असे आहे का? वसईत ईडी किंवा ठाण्यात मुंबई लाचलुचपत प्रतिबंधक विभाग वरून 'आदेश' आल्याशिवाय लक्ष घालू शकत नाही हेही तितकेच स्पष्ट.

कुरघोडीचे राजकारण असो वा ठाणे, पालघरमधील अधिकाऱ्यांवर बारीक लक्ष ठेवण्याचा मुद्दा. यातून पवार, पाटोळे वा रेड्डी यांच्यावर निदान कारवाई तरी झाली. पण त्याच वेळी भारतीय प्रशासकीय सेवेत प्रवेश देताना लेखी परीक्षेत कमी गुण मिळालेल्या अधिकाऱ्यांची शिफारस करण्यात आल्याची बातमीचे काय? ज्येष्ठता डावलली तर एक वेळ समजू शकते पण गुणवत्तेशी तडजोडीचे दीर्घकालीन परिणाम प्रशासनात होऊ शकतात. आपल्या मर्जीतील अधिकाऱ्यांची आयएएसमध्ये वर्णी लावण्याचे प्रयत्न होत असावेत. यामुळेच चांगले गुण मिळवूनही शिफारस न झालेले अधिकारी न्यायालयात आव्हान देणार आहेत. सर्वच स्तरावर आपल्या जवळचे अधिकारी असावेत म्हणून सरकारमधील उच्चपदस्थ पावले टाकणार असल्यास प्रशासनात होयबा किंवा पवार, पाटोळे, रेड्डी यांच्यासारख्या अधिकाऱ्यांची फौज तयार होईल. मुंबईच्या पोलीस आयुक्तपदी अनेक अधिकाऱ्यांची ज्येष्ठता डावलून, देवेन भारती यांची नियुक्ती करून फडणवीस सरकारने तसाही चुकीचा पायंडा पाडला आहेच. प्रशासनात किती पवार, पाटोळे वा रेड्डी यांच्यासारखे अधिकारी आहेत कोणास ठाऊक, पण पालिकांचा कारभार सुधारायचा असेल तर अशांना सरळ करणे हा एकमेव मार्ग आहे.

विश्लेषण

मंगल हनवते
mangal.hanvate
@expressindia.com

मुंबई महानगरीत लवकरच भुयारी मार्गांचे जाळे?

> बृहन्मुंबईतील वाहतूक कोंडीचा गंभीर प्रश्न सोडविण्यासाठी मुंबईत भुयारी मार्गांचे जाळे विणता येईल का याचा अभ्यास करण्याकरिता राज्य सरकारने एक समिती स्थापन केली आहे.

वाहतूक कोंडीने हैराण?

देशाची आर्थिक राजधानी आणि आंतरराष्ट्रीय दर्जाचे शहर अशी ओळख असलेल्या मुंबईतील लोकसंख्या दिवसेंदिवस वाढत आहे. त्यामुळे मुंबईतील पायाभूत सुविधा, रस्ते अपुरे पडत असून वाहतूक व्यवस्थेवर ताण पडत आहे. उपनगरीय रेल्वेतही तुडुंब गर्दी असते. वाहतूक कोंडीचा प्रश्न गंभीर बनला आहे. सोडविण्यासाठी मुंबई महानगरपालिका, एमएमआरडीए आणि एमएसआरडीसी आदी सरकारी यंत्रणा विविध प्रकल्प राबवत आहेत. मेट्रो, सागरी सेतू, सागरी मार्ग, उन्नत रस्ते, उड्डाणपूल बांधले जात आहे. मात्र तरीही परिस्थिती जैसे थे आहे. वाहतूक कोंडीचा गंभीर प्रश्न सोडविण्यासाठी आता राज्य सरकारने इतर पर्यायांचा विचार सुरू केला आहे.

भुयारी मार्गांचे जाळे?

नवीन प्रकल्पासाठी मुंबईत पुरेशी जागाच नसल्याने हा प्रश्न सोडवायचा कसा असा प्रश्न राज्य सरकार समोर होता. त्यावर उतारा म्हणून राज्य सरकारने मुंबईत भुयारी मार्गांचे जाळे निर्माण करता येईल का या दृष्टीने अभ्यास करण्याचा निर्णय घेतला. भुयारी मार्गासंबंधीचा सविस्तर अभ्यास करण्यासाठी २०२३ मध्ये एका समितीची स्थापना करण्यात आली. मुंबई महापालिका आयुक्तांच्या अध्यक्षतेखाली आठ सदस्यांची ही समिती असून यात एमएमआरडीए आणि एमएसआरडीसीच्या अभियंत्यांचाही समावेश आहे. आता लवकरच या अभ्यासाला सुरुवात होणार आहे.

महिन्याभरात सल्लागाराची नियुक्ती?

राज्य सरकारने समिती स्थापन करून भुयारी मार्गांचा अभ्यास आणि सल्लागार नेमण्याची जबाबदारी पालिकेवर सोपवली. पालिकेने आतापर्यंत सल्लागाराची नियुक्ती करून अभ्यास करणे अपेक्षित होते. मात्र काही कारणाने यास विलंब झाला. काही महिन्यांपूर्वीच पालिकेने सल्लागार नियुक्तीसाठीच्या निविदा प्रक्रियेस सुरुवात केली आहे. यासाठी पालिकेला दोन निविदा सादर झाल्या आहेत. ॲम्बर्ग इंजिनीअरिंग आणि माइनहार्ट इंडिया या दोन कंपन्यांनी निविदा सादर केल्या आहेत. त्यांच्या छाननीनंतर पुढील कार्यवाही करून महिन्याभरात सल्लागाराची नियुक्ती करण्याचे पालिकेचे नियोजन आहे.

अभ्यासासाठी तीन महिने?

मुंबईत कुठे वाहतूक कोंडीचा प्रश्न सर्वाधिक गंभीर आहे आणि त्या ठिकाणी भुयारी मार्ग शक्य होईल का याचा अभ्यास करण्याची जबाबदारी नियुक्त सल्लागारावर असणार आहे. हा अभ्यास पूर्ण झाल्यानंतरच भविष्यात मुंबईत कुठे आणि कसे भुयारी मार्ग बांधणार हे स्पष्ट होईल. तीन महिन्यांमध्ये याबाबतचा अभ्यास पूर्ण होण्याची शक्यता आहे. त्यामुळे येत्या सहा महिन्यांत याबाबतचे चित्र स्पष्ट होऊ शकते.

दोन भुयारी मार्गांत पडणार भर?

बोरिवली - ठाणे प्रवास अतिजलद व्हावा यासाठी एमएमआरडीएने ठाणे - बोरीवली भुयारी मार्ग (दुहेरी बोगदा) प्रकल्प हाती घेतला आहे. या प्रकल्पाचे काम सध्या सुरू आहे. तर दुसरीकडे पूर्वमुक्त मार्गावरून अतिजलद येणाऱ्या वाहनांना सीएसएमटीत वाहतूक कोंडीत अडकावे लागते. चर्चगेट, मरिन ड्राइव्हकडे जाण्यासाठी वाहतूक कोंडीचा सामना करावा लागतो. ही बाब लक्षात घेत एमएमआरडीएने ऑरेंज गेट - मरिन ड्राइव्ह दरम्यान दुहेरी बोगदा प्रकल्प हाती घेतला आहे. मुंबईतील जागेची टंचाई पाहता एमएमआरडीएने बोगद्यांचा, भुयारी मार्गांचा पर्याय निवडला आहे. भविष्यात मुंबईत नवीन भुयारी प्रकल्प हाती घेतले जाणार असून काही प्रकल्प एमएमआरडीए, तर काही प्रकल्प पालिका राबविण्याची शक्यता आहे.

सूरजकुंड में छह दिवसीय दिवाली मेले के उद्घाटन पर मुख्यमंत्री सैनी बोले

वोकल फॉर लोकल, आत्मनिर्भरता और स्वदेशी से भारत विकसित बनेगा

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

सूरजकुंड में गुरुवार को छह दिवसीय दिवाली मेले का उद्घाटन सीएम नायब सिंह सैनी ने किया। इसी के साथ मेला पब्लिक के लिए खोल दिया गया। यह मेला 7 अक्टूबर तक चलेगा। पहले दिन फरीदाबाद समेत दिल्ली एनसीआर से काफी संख्या में लोग मेले का आनंद लेने पहुंचे। इस दौरान सीएम ने कहा, पीएम मोदी ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत का जो लक्ष्य रखा है, उसका मार्ग वोकल फॉर लोकल, आत्मनिर्भरता और स्वदेशी से होकर जाता है। जिस तरह स्वतंत्रता आंदोलन को स्वदेशी के मंत्र से ताकत मिली, वैसे ही देश की समृद्धि को भी स्वदेशी के मंत्र से शक्ति मिलेगी। हमें वह सामान खरीदना चाहिए जो मेड इन इंडिया हो, जिसमें देश के नौजवानों की मेहनत लगी हो।

इस दौरान सीएम ने मेले में विभिन्न राज्यों से आए विक्रेताओं से मुलाकात की। प्रदेश के पर्यटन मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा, आत्मनिर्भर स्वदेशी दिवाली मेले के मुख्य मंच पर अनेकता में एकता देखने को मिली। संगीत नाटक अकादमी के कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत की। कलाकारों ने श्री रामचंद्र कृपालु भजुमन, हरण भव-भय दारुणं की शानदार प्रस्तुति दी। इस दौरान हरियाणा पर्यटन निगम की एमडी डॉ. शालीन ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल, राज्यमंत्री राजेश नागर, बल्लभगढ़ के विधायक मूलचंद शर्मा, पर्यटन विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव कला रामचंद्रन, महापौर प्रवीन जोशी आदि मौजूद थीं। दिवाली मेले में 467 स्टॉल बुक किए गए हैं। पर्यटकों के लिए दिवाली मेले में अलग से फूड जोन बनाया गया है। यहां बिहार के लिट्टी-चोखा से लेकर 40 से अधिक स्टॉलों पर विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों का स्वाद पर्यटक ले सकेंगे।

दिवाली मेले के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते कलाकार।

मेले के मंच पर होंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिवाली मेले के दौरान मुख्य चौपाल पर रोज शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। पहले दिन मीनू ठाकुर ने कुचिपुड़ी नृत्य प्रस्तुत किया। शुक्रवार को एनजीएफ कॉलेज पलवल के बच्चे फैशन शो करेंगे। इसी दिन दीपेश राही पंजाबी गीतों की प्रस्तुत देंगे। पांच अक्टूबर को नूंह निवासी सूफी गायक सलमान सूफियाना अंदाज में अपनी प्रस्तुति देंगे। छह अक्टूबर को हिमाचल प्रदेश के पुलिस बैंड की प्रस्तुति होगी। जबकि सात अक्टूबर को कार्यक्रम का समापन होगा।

सूरजकुंड दिवाली मेले का शुभारंभ करने के बाद सीएम नायब सिंह सैनी व पर्यटन मंत्री डा. अरविंद शर्मा नगाड़े को बजाते हुए।

दिवाली मेले की टिकट का मूल्य 100 रुपए

दिवाली मेले में प्रवेश के लिए हरियाणा पर्यटन निगम ने 100 रुपए शुल्क निर्धारित किया है। जबकि छात्रों के लिए प्रवेश शुल्क में 50 प्रतिशत की छूट दी गई है। वह अपने स्कूल का पहचान पत्र दिखाकर 50 रुपए में मेले की टिकट प्राप्त कर सकते हैं। मेला सुबह 10 बजे से रात 10 बजे तक खुला रहेगा।

हरियाणा को हरा-भरा, स्वच्छ- समृद्ध बनाने को सरकार कटिबद्धः सीएम

फरीदाबाद | नमो वन कार्यक्रम के तहत गुरुवार को सेक्टर नौ स्थित एचएसवीपी के ग्रीन बेल्ट में पौधरोपण कर सीएम नायब सिंह सैनी ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। सीएम ने कहा, हरियाणा में 75 नमो वन बनाने के लिए स्थान चिह्नित कर उनमें पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति सरकार प्रभावी कदम उठा रही है। इस दौरान सीएम ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। सीएम ने कहा, हरित

जैव-विविधता कॉरिडोर में पौधरोपण के साथ ही इस क्षेत्र में बर्ड्स ऑफ ग्रीन कॉरिडोर भी विकसित किया जा रहा है। पीएम मोदी ने 5 जून 2024 को एक पेड़ मां के नाम अभियान शुरू किया था। सीएम ने कहा दक्षिण हरियाणा में हरित अरावली कार्य योजना का क्रियान्वयन किया गया है। केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा बनाई गई यह परियोजना अरावली पहाड़ियों के चार राज्यों में लागू की जा रही है। इनमें पांच जिले हरियाणा के हैं। उन्होंने बताया औषधीय पौधों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रदेश में 56 हर्बल पार्क, 4 नगर वन और 18 ऑक्सन वन स्थापित हैं।

अवैध कब्जे की शिकायत करना पड़ा भारी, परिवार पर हमला, 3 घायल

पलवल | पंचायती जमीन पर कब्जे की शिकायत करना एक परिवार को महंगा पड़ गया। दर्जनभर से अधिक लोगों ने परिवार पर हमला कर दिया। इससे तीन लोग घायल हो गए। चांदहट थाना पुलिस ने 12 नामजद सहित अन्य के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। थाना प्रभारी सुंदरपाल के अनुसार घोड़ी गांव निवासी अमित कुमार ने दी शिकायत में कहा कि बलदेव अपने प्लाट की चारदीवारी करते समय पंचायत की 60 गज जमीन पर कब्जा कर रहा था। इसकी शिकायत उनके ताऊ रामबीर ने डीसी से कर दी। इसके बाद डीसी ने मौके पर टीम भेज कब्जे को रुकवा दिया।

जालसाजों ने छह लोगों से ठगे दस लाख से अधिक रुपए

फरीदाबाद | साइबर ठगों ने अलग-अलग छह लोगों से करीब दस लाख दस हजार रुपए ठग लिए। साइबर थानों की पुलिस मामले दर्ज कर जांच कर रही है। साइबर ठगों ने एनआईटी निवासी एक युवती को शादी का झांसा देकर और पार्सल भेजने के नाम पर 2.45 लाख रुपए ठग लिए। इसके अलावा सेक्टर-55 निवासी एक व्यक्ति से एक लाख रुपए, सेक्टर-83 के रहने वाले व्यक्ति से 1.90 लाख रुपए, सेक्टर-30 निवासी व्यक्ति से 1.49 लाख रुपए, सेक्टर-8 के रहने वाले व्यक्ति से 208738 रुपए और सेक्टर-9 में रहने वाले व्यक्ति से 117510 रुपए ठग लिए। पुलिस सभी मामले दर्ज कर जांच कर रही है।

धू-धू कर जले रावण, कुंभकर्ण- मेघनाद के पुतले, लगे जय-श्रीराम के जयकारे

बच्चों ने घुड़सवारी व झूलों का आनंद लिए, रावण के पुतलों संग सेल्फी ली

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

शहर में गुरुवार को धूमधाम से दशहरा का पर्व मनाया गया। शाम को कई जगह रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों का दहन किया गया। ओल्ड फरीदाबाद के बराही तालाब में रोबोटिक रावण बनाया गया था। दहन से पहले रावण हाथ में पकड़े तलवार को हिला रहा था। साथ ही के मुंह से आग निकल रही थी। यह दृश्य बच्चों को काफी आकर्षित कर रहा था। जैसे ही रावण के पुतले को आग लगाया गया, वहां मौजूद लोग उत्साहित होकर जय श्रीराम के जयकारे लगाने लगे। एनआईटी के दशहरा मैदान पर सिद्धपीठ श्री हनुमान मंदिर, श्री सनातन धर्म महाबीर दल मार्केट नंबर-एक द्वारा रावण दहन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दशहरा मैदान पर 65 फुट लंबे रावण, मेघनाद, कुंभकर्ण के पुतले लगाए गए थे। मेट्रो मोड़ एवं बीके चौक से दशहरा मैदान को जाने वाली सड़क पर मेले का आयोजन भी किया गया।

बराही तालाब में भी रावण दहन : श्री बजरंगदल दशहरा कमेटी की ओर से 25वां दशहरा पर्व का आयोजन ओल्ड फरीदाबाद स्थित बराही तालाब में किया गया। बराही तालाब का रावण विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। वह मुंह से आग उगल रहा था और तलवार हिला रहा था। उसे देखने के लिए लोग भारी संख्या में पहुंचे।

बल्लभगढ़ के सेक्टर 3 स्थित दशहरा मैदान में धू-धू कर जलता रावण।

केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर मुख्य अतिथि थे। इसके अलावा कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल, राज्यमंत्री राजेश नागर सहित अन्य लोग भी मौजूद रहे। गुर्जर ने पुतलों को दहन किया। इस दौरान श्री बजरंग दल दशहरा कमेटी के सह अध्यक्ष सतीश आहूजा, कोषाध्यक्ष हेमंत खुराना, महासचिव पीयूष ग्रोवर, उपप्रधान सचिन शर्मा व संजय अरोड़ा ने सभी पदाधिकारियों ने पगड़ी बांधकर, बुक्के देकर व स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि ने कहा कि दशहरा हमें बुराई पर अच्छाई की जीत की शिक्षा देता है।

सेक्टर-16ए में भी रावण दहन हुआः

दशहरा मैदान सेक्टर-16ए में 76वें दशहरा कार्यक्रम आयोजित किया गया। दशहरा कार्यक्रम श्री महावीर दल दशहरा कमेटी, अखिल भारतीय लैय्या बिरादरी एवं पंजाबी समाज द्वारा आयोजित किया गया था। प्रधान धर्म बरेजा, महासचिव राज मिगलानी, वरिष्ठ उपप्रधान लोकनाथ मिगलानी, यश बब्बर ने दशहरा कार्यक्रम में पहुंचने वाले अतिथियों को स्वागत किया।

87 फुट का रावण चंद मिनट में जलाः सेक्टर-30 स्थित दशहरा ग्राउंड में फरीदाबाद दशहरा कमेटी द्वारा दशहरा उत्सव मनाया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर थे। यहां पर 87 फीट लंबा रावण का पुतला था। जो चंद मिनट में धू-धुकर जल गया | इसके अलावा बल्लभगढ़ दशहरा मैदान पर रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतलों में आग लगाई। इस दौरान विधायक मूलचंद शर्मा मौजूद रहे।

यूं चली शोभायात्रा

रावण दहन से पूर्व दोपहर करीब 3 बजे मंदिर से शोभायात्रा एनआईटी-एक मार्केट से होते हुए कल्याण सिंह चौक, आर्य समाज रोड से होते हुए एनआईटी दशहरा मैदान पहुंची और शाम करीब 6:30 बजे केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने तीर चलाकर रावण के पुतले का दहन किया। सबसे पहले कुंभकर्ण और इसके बाद मेघनाद का पुतला धू-धू कर जला।

सबल राष्ट्र निर्माण का अधिष्ठान है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः पवन जिंदल

फरीदाबाद | नवरात्र में नौ दिन तक शक्ति की दाता मां जगदंबा की आराधना कर शक्ति संचय करने के बाद दसवें दिन शस्त्र पूजन कर देश और धर्म की रक्षा का संकल्प लेने का दिन है विजयादशमी। यह महापर्व अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की, अंधकार पर प्रकाश की और दानवता पर मानवता की विजय का प्रतीक है। उक्त विचार महाराजा अग्रसेन पार्क सेक्टर 2 बल्लभगढ़ में आयोजित विजयादशमी कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र संघचालक पवन जिंदल ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा आज संघ की स्थापना को पूरे 100 वर्ष हो गए हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व आईपीएस अधिकारी संजय कुंडू ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हिसार कृषि विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त

प्रो. रामबाबू श्रीवास्तव ने कहा कि समाज सेवा के क्षेत्र में संघ के कार्य अद्भुत व अद्वितीय रहे हैं। जिला संघचालक डॉ. चंद्रशेखर ने बताया कि बल्लभगढ़ में विजयादशमी पर कुल 20 कार्यक्रम हुए।

दहेज की मांग पूरी न होने पर ससुराल वालों ने महिला को फांसी पर लटकाया

पलवल | दहेज की मांग पूरी न होने पर ससुराल वालों ने महिला को फांसी पर लटका हत्या कर दी। होडल पुलिस ने पिता की शिकायत पर पति सहित चार के खिलाफ दहेज हत्या का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी सोमपाल के अनुसार मथुरा जिले के पाली ब्राह्मण गांव निवासी भूप सिंह सैनी ने शिकायत में कहा कि उन्होंने बेटी नीरज की शादी नवंबर 2021 को पांडवन कॉलोनी होडल निवासी राहुल के साथ की थी।

आरोप है नीरज को पति राहुल, सास हेमवती, जेठ बंटी उर्फ विष्णु, देवर ललित उर्फ कोकी दहेज के लिए मारते-पीटते थे। होडल थाना पुलिस ने मृतका के पिता भूप सिंह की शिकायत पर पति राहुल, सास हेमवती, जेठ बंटी उर्फ विष्णु, देवर ललित सहित अन्य के खिलाफ दहेज हत्या का केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

चिंतजानक • 10 साल में पॉल्यूशन का स्तर कम, आतिशबाजी होने से आने वाले दिनों में बढ़ने के आसार

धूमधाम से मनाया विजयदशमी पर्व, कहीं जले तो कहीं बारिश में रावण-मेधनाद के पुतले भींगे

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

गुरुग्राम में बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व धूमधाम से मनाया गया। गुरुवार को रामलीला कमेटियों द्वारा भव्य झांकियां निकाली गई। इन झांकियों का सदर बाजार में व्यापारियों ने कई स्थानों पर स्वागत किया। इसके बाद अलग-अलग मैदानों में राम-रावण वध का प्रदर्शन किया गया। रावण वध के बाद पुतलों का दहन किया गया। गुरुग्राम के गौशाला मैदान में भव्य दशहरा मेले का आयोजन किया गया, जिसमें पूजा-पाठ के बाद विधि-विधान से रावण दहन किया गया। इसके अलावा जिला में ही 100 से अधिक कॉलोनियों, सेक्टरों व गांवों में पुतले जलाए गए। वहीं जिला में दशहरा के पर्व पर ही जमकर आतिशबाजी भी हुई।

गुरुग्राम। बस स्टैंड के नजदीक गौशाला मैदान में धू-धू कर जलते रावण, कुंभकर्ण व मेघनाथ के पुतले।

10 साल में पहली बार 100 से कम दर्ज हुआ पीएम 2.5

गुरुग्राम में गुरुवार को पॉल्यूशन का स्तर संतोषजनक रहा। दशहरा के दिन पीएम 2.5 का स्तर 94 दर्ज किया गया, जो संतोषजनक माना जाता है। दो दिन पहले बारिश होने से धूल,-मिट्टी के कण भी साफ हो गए हैं। यह पिछले 10 साल में पहली बार है, जब पीएम 2.5 का स्तर 100 से नीचे रहा है। हालांकि इस वर्ष दशहरे तक केवल पटाखों की बिक्री पर पाबंदी लगाई गई है।

हेलीमंडीः बारिश में भींगकर गिरा रावण का पुतला

पटौदी | गुरुवार को तेज बरसात ने उत्सव पटौदी जाटोली मंडी में विजयदशमी का पर्व पूरी तरह से फीका कर दिया। विभिन्न रामलीला ग्राउंड में भारी मात्रा में बरसात का पानी भर गया। वहीं, पानी ज्यादा होने की वजह से रावण का पुतला जलने से पहले ही पानी में गिर के डूब गया। पानी ज्यादा भरने की वजह से रामलीला को रद्द करना पड़ गया। बताया जाता है कि एकाएक आई बरसात के बाद रामलीला में लगे हुए ज्यादातर इलेक्ट्रॉनिक सामान को भारी नुकसान पहुंचा है वहीं अब रामलीला को वीरवार की जगह शुक्रवार को करने का फैसला लिया गया है।

पुलिस टीम पर हमले का आरोपी मुठभेड़ के बाद काबू, गोली लगी

भास्कर न्यूज | नूंह

इंदाना गांव में पुलिस टीम पर हमले के आरोपी को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने पुलिस टीम पर तीन फायर किए गए जबकि जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने एक गोली हवा में तथा दूसरी आरोपी के पैर को निशाना बनाकर चलाई। घायल आरोपी का नलहड़ मेडिकल कॉलेज में उपचार चल रहा है। इस मामले में दो और लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

अखलाक के बारे में सूचना मिलने पर पुलिस ने होडल-पुन्हाना रोड पर बंबे के बने पुल पर नाकाबंदी की। मोटर साइकिल पर सवार अखलाक ने नाकेबंदी देख फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस का दावा है कि आरोपी द्वारा चलाई गोली जवान गजेंद्र बाल-बाल बच गया। हमलावर ने बाइक खेतों की ओर मोड़ दी तथा भागने का प्रयास किया। लेकिन फिसलन होने के कारण वह मोटर साइकिल समेत गिर पड़ा।

आरोप है कि जब पुलिस टीम करीब पहुंची तो उसने फिर से फायरिंग कर दी। पुलिस ने जवाबी कार्रवाई में उसके पैर पर गोली मारी और उसे काबू कर लिया। घायल अखलाक को इलाज के लिए पहले सीएचसी पुन्हाना और बाद में नलहड़ मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। पुलिस ने आरोपी के पास से अवैध हथियार और मोटरसाइकिल बरामद की है।

गौरतलब है कि 27 सितंबर को इंदाना गांव में चोरी के आरोपियों को पकड़ने पहुंची तावडू व पुन्हाना सीआईए की टीम पर ग्रामीणों ने हमला कर दिया था। आरोप है कि इस दौरान पुलिस पर गोलियां भी चलाई गई।

बैरिकेटिंगः शंकर चौक पर यातायात सेवा होगा सुगम

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

टैफिक पुलिस गुरुग्राम ने दिल्ली से गुरुग्राम की ओर आते हुए एंबियंस मॉल के सामने करीब 325 प्लास्टिक बैरिकेड्स लगाए हैं। इससे शंकर चौक पर यातायात का और अधिक सुगमता से संचालन सम्भव होगा। पुलिस उपायुक्त यातायात डा. राजेश मोहन के निर्देशन व सहायक पुलिस आयुक्त यातायात मुख्यालय/हाईवे सत्यपाल यादव की देखरेख में एंबियंस मॉल के पास लगाए गए इन प्लास्टिक बैरिकेड्स की वजह से इस स्थान पर अब वाहन और अधिक व्यवस्थित तरीके व सुचारु रुप से चलाए जा सकेगा। वाहन चालकों की सुरक्षा और सुविधा के लिए इन प्लास्टिक बैरिकेड्स के साथ रिफलेक्टिव टायर बैरिकेड्स लगाए गए हैं ताकि वाहन चालक इन्हे दूर से ही आसानी से देख सके और सतर्कता व सुरक्षा के साथ अपना सफर कर सके। यातायात

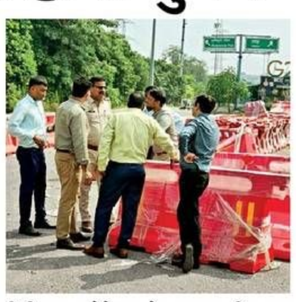

निरीक्षक लोकेश ने बताया कि इन बैरिकेड्स के लगाने के पश्चात जिन वाहन चालकों को जयपुर, रेवाड़ी की ओर जाना होता है वो सभी वाहन चालक बिना किसी रुकावट व सुरक्षित तरीके से दाहिनी ओर से चले जाते हैं और जिन वाहन चालकों को साइबर सिटी की ओर जाना होता है वो सभी वाहन चालक एंबियंस मॉल के रास्ते आसानी से अपने गंतव्य स्थान की ओर प्रस्थान कर जाते हैं जिससे वाहनो का दबाव भी नहीं रहता और न ही वाहन चालकों को जाम की स्थिति का सामना करना पड़ता है।

बच्ची का अपहरण कर दुष्कर्म करने का आरोपी गिरफ्तार

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

सेक्टर-10 थाना एरिया में आठ साल की बच्ची का किडनेप कर उसके साथ दुष्कर्म करने के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आरोपी एक निजी कंपनी में डिलीवरी बॉय का काम करता है। वह बच्ची को यह खाने का सामान देने के बहाने से बहला-फुसलाकर ले गया था। पुलिस मामले में कार्रवाई कर रही है।

दरअसल, पुलिस चौकी-93, थाना सेक्टर-10 की पुलिस टीम को एक अक्तूबर को आठ साल की बच्ची का किडनेप करने की शिकायत मिली। पुलिस ने केस दर्ज कर कार्रवाई करते हुए कुछ ही घंटे के दरमियान किडनेप की गई लड़की को बरामद कर लिया और मामले की जांच की। जिसमें सामने आया कि आरोपी बच्ची को खाने का सामान देने के बहाने से बहला-फुसलाकर ले गया था और उसके साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया था।

गुरुग्राम में राज्य स्तरीय वन्यजीव सप्ताह समारोह का शुभारंभ

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

गुरुग्राम में गुरुवार को 'राज्य स्तरीय वन्यजीव सप्ताह समारोह 2025' का आयोजन किया गया। वन्यजीव संरक्षण, जैव विविधता सुरक्षा और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम मानेसर स्थित अरावली क्षेत्र में राम मंदिर परिसर में किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता हरियाणा के पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह ने की। केंद्रीय मंत्री ने गुरुग्रामवासियों से अरावली ग्रीन वॉल अभियान में सहयोग का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान 'नमो वन' में 750 पौधों का रोपण किया गया। इसके साथ ही 500 एकड़ क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्य का शुभारंभ भी किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने संकल्प लिया कि लगाए गए पौधों की देखभाल बच्चे की तरह की जाएगी, ताकि आने वाले वर्षों में यह क्षेत्र हरा-भरा बनकर पर्यावरण संरक्षण का उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

थाने के सामने की दंपत्ति से मारपीट, झूठे केस का आरोप

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

सोहना एरिया में एएसआई द्वारा थाने के सामने बीमार दंपति से मारपीट करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि आरोपी ने दंपत्ति को चोरी के झूठे केस में फंसाने की धमकी दी। दंपत्ति ने पुलिस में शिकायत दी है। शाम तक केस दर्ज नहीं हो सका था। नूंह के गांव रहिड़ा निवासी नदीम अपनी पत्नी अनीशा के साथ झज्जर से दवा दिलाकर आ रहे थे। उनकी पत्नी ब्लड कैंसर से पीड़ित बताई गई है। सोहना बस स्टैंड के पास अनीशा की तबीयत बिगड़ी तो नदीम ने उसे सिटी परिसर के पास लिटा दिया और जूस लेने चला गया। इसी दौरान सिविल ड्रेस में एएसआई आया और उसने उन्हें बाइक चोर बताते हुए मारपीट शुरु कर दी। अनीशा ने बीच-बचाव करने की कोशिश की, तो एएसआई ने अन्य पुलिसकर्मियों को बुला लिया। आरोप है कि अनीशा से साथ भी मारपीट और गाली-गलौज की।

वेयरहाउस में आग, लाखों का सामान जलकर खाक

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

गुरुग्राम के बिनौला इलाके स्थित कपड़ों के एक वेयरहाउस में गुरुवार की सुबह भीषण आग लग गई। सूचना मिलते ही फायर विभाग एक दर्जन से ज्यादा गाड़ियां मौके पर पहुंची और आग बुझाने की मशक्कत में जुट गई। आग के विकराल रूप लेने के चलते आसपास की फैक्ट्री को भी अलर्ट जारी कर दिया गया है और यातायात को डायवर्ट कर दिया गया। गनीमत यह रही कि आग में कोई हताहत नहीं हुआ, लेकिन लाखों का सामान जलकर खाक हो गया है।

बिनौला औद्योगिक क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख टेक्सटाइल कंपनी का यह वेयर हाउस है। जिसमें वीरवार की सुबह अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया। फायर अधिकारी नरेंद्र ने बताया कि फायर ब्रिगेड कंट्रोल रूम में करीब 9 बजे आग लगने की

कॉल आई। जिसके बाद मानेसर से फायर अधिकारी ललित की अगुवाई में गाडियां मौके पर पहुंची, लेकिन आग की भयानकता को देखते हुए गुरुग्राम, मानेसर, पटौदी समेत आसपास के फायर स्टेशनों से गाड़ियां मंगवाई गई। वेयरहाउस में हजारों मीट्रिक टन कपड़े होने के चलते आग तेजी से भड़कने लगी। फायर अधिकारी ने बताया कि आग के विकराल रूप धारण करने के चलते आसपास की फैक्ट्री को भी अलर्ट कर दिया गया है, और यातायात को डायवर्ट कर दिया गया है।

एक वोट की गलती ने बदला परिणामः 5 साल की लड़ाई के बाद इंसाफ, हारी हुई प्रत्याशी अब बनेगी 2 महीने के लिए प्रधान, दिसंबर में फिर होने हैं चुनाव

जोगेंद्र शर्मा | शिमला

जिला शिमला के ग्राम पंचायत सारी में पांच साल बाद पंचायत प्रधान पद पर अब दूसरे नंबर पर रही उम्मीदवार को हाईकोर्ट ने विजेता घोषित किया है। यहां 21 जनवरी 2021 को पंचायत के चुनाव हुए थे। इस पंचायत से दो महिलाओं के बीच प्रधान पद के लिए टक्कर हुई। रि-काउंटिंग करने के बाद एक महिला प्रधान को एक वोट से विजेता घोषित कर दिया गया। दूसरी महिला प्रधान ने इसका विरोध किया और हाईकोर्ट में याचिका दायर की। अब जीत याचिका दायर करने वाली महिला की हुई है। खास बात ये है कि पांच साल तक प्रधान पद पर वो महिला बनी रही, जो कोर्ट में रि-काउंटिंग के दौरान एक वोट से चुनाव हार चुकी हैं। अजब-गजब बात ये है कि दो महीने के लिए अब दूसरी महिला प्रधान बनेगी, क्योंकि दिसंबर व जनवरी के शुरू में पंचायती राज चुनाव होने हैं। अब सवाल उठ रहे है कि काउंटिंग के दौरान मतगणना करने वाले अधिकारियों ने लापरवाही क्यों बरती।

ग्राम पंचायत सारी का मामला, 21 जनवरी 2021 को हुए थे पंचायत के चुनाव

21. Thus, the result of the election as it now turns out to be is that Ms. Anu Rangta polled 244 votes and Ms. Ranju polled 245 votes. In the light of the fact that there is a difference of 1 vote between the petitioner and respondent No. 6, who earlier was declared as a winning candidate, this petition is allowed. Orders under challenge, i.e., Annexure P/1, dated 21.03.2022, passed by Authorized Officer-Cum-Sub-Divisional Officer (Civil), Rohru, Shimla, H.P. and Annexure P/2, dated 06.05.2023, passed by Deputy Commissioner, Shimla, District Shimla are set aside and so is the election result; and petitioner-Ms. Ranju is declared as the winning candidate against the office of Pradhan. Accordingly, a direction is hereby issued to the Authority to declare the petitioner elected to the office of Pradhan of Gram Panchayat Sari, Development Block Jubbal-Kotkhai, District Shimla, H.P.

Petition stands disposed of, so also pending miscellaneous applications, if any.

कोर्ट ने उम्मीदवार रंजू को एक वोट से विजेता घोषित किया है।

हाईकोर्ट ने सुनाया इस तरह का फैसला

हाईकोर्ट के जज अजय मोहन गोयल ने बीते 26 सितंबर 2025 को अपने फैसले में कहा कि, अब स्थिति यह उभरकर आती है कि याचिकाकर्ता रंजू के 245 वोट ही रहेंगे, जबकि अनु रांगटा के मत 243 से बढ़कर 244 हो गए हैं। चूंकि आपत्ति किए गए 3 मतों में से 1 मत उनके पक्ष में वैध रूप से डाला गया पाया गया है। इस प्रकार, अब चुनाव का परिणाम यह निकलता है कि अनु रांगटा को 244 मत और रंजू को 245 मत मिले। कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता रंजू को प्रधान पद के लिए विजयी उम्मीदवार घोषित किया जाता है। तदनुसार, प्राधिकरण को निर्देश जारी किया जाता है कि वह याचिकाकर्ता को ग्राम पंचायत सारी, विकास खंड जुब्बल-कोटखाई जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश के प्रधान पद के लिए निर्वाचित घोषित करें।

कोर्ट ने मेरे साथ न्याय किया, अब डीसी शिमला मुझे शपथ दिलाएंः रंजू

हाईकोर्ट की ओर से पांच साल बाद पंचायत चुनाव में विजेता घोषित की गई उम्मीदवार रंजू ने **दैनिक भास्कर** से बात करते हुए कहा कि मेरे साथ हाईकोर्ट ने न्याय किया है। मुझे पहले ही पता था कि मेरे साथ राजनीति हुई है। ऐसे में मैंने कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। अब जब कोर्ट ने ऑर्डर दे दिए हैं, इस पर अमल करते हुए डीसी शिमला मुझे शपथ दिलाएं।

भास्कर एक्सपर्ट

पिंकू शर्मा, अधिवक्ता, सेशन कोर्ट

पंचायत चुनाव का पांच साल का कार्यकाल दिसंबर-जनवरी 2025-26 में पूरा हो रहा है। कोर्ट ने सभी तथ्य को छानकर इस तरह का फैसला दिया है। भले ही उम्मीदवार महज कुछ महीने ही प्रधान पद पर रहेंगी, लेकिन साफ है कि न्याय कोर्ट से हर किसी को मिलता है। इस फैसले से ये भी साफ हो रहा है कि पंचायती राज विभाग और जिला प्रशासन के तत्कालीन अधिकारियों ने काउंटिंग में गड़बड़ी की। इसका खामियाजा संबंधित उम्मीदवार को भुगतना पड़ा। इस तरह के फैसले से लोगों का कोर्ट पर भरोसा और मजबूत हुआ है।

दैनिक भास्कर
जीतो सोना चांदी
अखबार शुरु करवाने के लिए
9292 91 9292
पर मिस्ड कॉल दें।
दैनिक भास्कर
सच्ची बात, बेधड़क

To Book Classified Ads Visit
BhaskarAd.com
9772019222

किसानों की चिंता बढ़ी • हरियाणा में 5 से 7 तक तेज बारिश के आसार

7 लाख टन धान आया, उठान 1.49 लाख टन का, बारिश से भीगा; 5 से फिर संकट

- 7 जिलों में बारिश से खुले में पड़ा धान भीगा

भास्कर न्यूज | चंडीगढ़/कुरुक्षेत्र/अम्बाला सिटी/कैथल/हिसार

हरियाणा में खरीफ सीजन पर फिर भारी बारिश का खतरा मंडरा रहा है। 5 से 7 अक्टूबर तक बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने 6 को बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई है, क्योंकि मंडियों में 7 लाख टन धान की आवक हो चुकी है। इसमें से 4.32 लाख टन धान की खरीद हुई है, लेकिन सही व्यवस्था नहीं होने के कारण 1.49 लाख टन का ही उठान हो पाया है। यानी 69 फीसदी धान मंडियों में पड़ा है। उधर, खेतों में भी धान की पकी फसल खड़ी है, जिसके गिरने का खतरा बढ़ गया है।

गुरुवार को बारिश के कारण अम्बाला, झज्जर, सोनीपत, यमुनानगर, कैथल, करनाल, कुरुक्षेत्र के थानेसर समेत कई मंडियों में पड़ा धान भीग गया। यहां धान की बोरियों और ढेरियों के नीचे पानी घुस गया है। इस दौरान मंडियों में अव्यवस्था देखने को मिली। धान को ढकने के लिए किसान खुद तिरपाल का इंतजाम करते दिखे। इसी बीच खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने प्रदेश की मंडियों में पड़े धान का उठान तेजी से करने के निर्देश दिए हैं। सभी आढ़तियों से तिरपाल के इंतजाम रखने को कहा गया है। प्रदेश में अबकी बार 54 लाख टन धान खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

अम्बाला सिटीः मंडी में डेढ़ से 2 फीट भरा पानी, धान भीगा

अम्बाला सिटी व थानेसर की मंडियों में बारिश से भीगा धान।

कहां कितने धान का उठान

जिला	उठान (टन में)
कुरुक्षेत्र	97,567
कैथल	16,246
अम्बाला	14,164
करनाल	10,884
यमुनानगर	8,343
पंचकूला	1,884
फतेहाबाद	319
पानीपत	61
सोनीपत	75

13 जिलों में हुई है धान खरीद

प्रदेश के 13 जिलों में धान की खरीद हो रही है। इनमें कुरुक्षेत्र में सबसे अधिक 1.95 लाख टन, अम्बाला में 1.03 लाख टन, यमुनानगर में 66 हजार टन, करनाल में 76 हजार, कैथल में 79 हजार टन धान की खरीद की गई है। जबकि कुरुक्षेत्र में कुल आवक सबसे ज्यादा 2.25 लाख टन, करनाल में 1.13 लाख टन, कैथल में 1.13 लाख टन और अम्बाला में 1.17 लाख टन आवक हो चुकी है।

6 तक कमीशन नहीं बढ़ाया तो हड़ताल पर जाएंगे कर्मी

सहकारी विपणन समिति कर्मचारी यूनियन के महामंत्री हनुमान गोदारा ने कहा कि 69 समितियां हैं। इन्हें हैफेड द्वारा धान खरीद करने पर न्यूनतम समर्थन मूल्य का 0.25% की दर से कमीशन मिलता है। इसे बढ़ाकर 5.80 रुपए प्रति क्विंटल किया जाए। 6 अक्टूबर तक मांगें नहीं मानी तो हड़ताल पर जाएंगे। इसी दौरान प्रदेश में बारिश की संभावना जताई गई है, जिससे हालात बिगड़ सकते हैं।

मौसम विभाग की चेतावनीः 6 को बारिश के साथ ओले पड़ने के आसार

मौसम विभाग ने प्रदेश में 5 और 6 अक्टूबर को तेज बारिश का येलो और ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। 5 को यमुनानगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फतेहाबाद और हिसार में बारिश की संभावना है। 6 पंचकूला, यमुनानगर, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, जींद और हिसार में तेज बारिश हो सकती है। कई अन्य जिलों में भी बारिश के आसार हैं। यह सभी धान बेल्ट वाले जिले हैं। करनाल, पानीपत, सोनीपत, यमुनानगर, गुरुग्राम, फरीदाबाद, पलवल व नूंह में कल भी बारिश हो सकती है। आईएमडी के अनुसार 6 अक्टूबर को कुछ इलाकों में ओले पड़ने की संभावना बन रही है। इससे बड़ा नुकसान हो सकता है। मौसम में बदलाव के कारण रात के तापमान में आधा डिग्री की बढ़ोतरी हुई है।

देव महाकुंभ का आगाज

रघुनाथजी की भव्य शोभायात्रा के साथ अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा महोत्सव शुरू

कुल्लू | कुल्लू में 374 वर्षों से चल रही देव परंपरा का निर्वहन करते हुए वीरवार से यहां देव महाकुंभ का आगाज हो गया। स्थानीय व देश-विदेश से पहुंचे हजारों लोगों की मौजूदगी में कुल्लू घाटी के अधिष्ठाता देव रघुनाथजी की भव्य शोभायात्रा के साथ 7 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा महोत्सव शुरू हो गया है। इस मौके पर राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने रथ मैदान में रघुनाथजी की पालकी का स्वागत किया व परंपरा को आगे बढ़ाया। इस रथयात्रा में कुल्लू जिला के विभिन्न क्षेत्रों से आए सैकड़ों देवी-देवताओं ने भाग लिया। इस दौरान ऐतिहासिक ढालपुर मैदान जय श्रीराम की ध्वनि और रघुनाथजी के जयकारों से गूंज उठा। ढालपुर मैदान में उपस्थित हर कोई बस एक बार रघुनाथजी के रथ की रस्सी को हाथ लगाना चाह रहा था। इससे पहले कुल्लू घाटी के सभी देवी-देवताओं ने सर्वप्रथम सुल्तानपुर स्थित भगवान रघुनाथजी के मंदिर में पहुंचकर हाजिरी लगाई और राजमहल जाकर अधिष्ठाता देव के छड़ीबरदार महेश्वर सिंह व राजपरिवार को आशीर्वाद दिया। बाद में ये सभी उनकी पालकी के साथ ढालपुर मैदान में शोभायात्रा के लिए पहुंचे।

जूते सहित देवता के शिविर में घुसने पर हंगामा

कुल्लू के ढालपुर में चल रहे दशहरा उत्सव के दौरान तहसीलदार कुल्लू हरि सिंह यादव और देवता भृगु ऋषि के देवलूओं के बीच झड़प हो गई। इसका वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। वीडियो के आधार पर देवलू तहसीलदार कुल्लू को खींचकर ले जाते हुए नजर आ रहे हैं और देवता भृगु ऋषि के समक्ष भी तहसीलदार के द्वारा माफी मांगी गई। बुधवार शाम के समय तहसीलदार कुल्लू की देवता के देवलू के बीच किसी बात को लेकर बहस हुई। जिसके चलते देव समाज से जुड़े लोग नाराज थे। ऐसे में आज दोपहर के समय जब तहसीलदार कुल्लू ढालपुर का निरीक्षण कर रहे थे। तो इस दौरान काफी संख्या में लोग आए और उन्हें देवता के शिविर तक ले गए। इस दौरान तहसीलदार को देवता से माफी मांगने की भी बात कही।

पहले चरण के बाद 6500 को फ्लैट दिए जाएंगे, आठ शहरों में चल रहा है सर्वे

हरियाणा में गरीबों को 7 हजार फ्लैट मिलेंगे धनतेरस से पहले 509 को मिलेगा अपना घर

सुशील भार्गव | चंडीगढ़

प्रदेश सरकार पहली बार हरियाणा में गरीब लोगों को फ्लैट बनाकर देगी। पहले चरण में 509 फ्लैट दिए जाएंगे। इनके लिए आठ अक्टूबर को ड्रा होगा। यह ड्रॉ ऑनलाइन किया जाएगा। इसके लिए सोनीपत के पांच डेवलपर्स ने फ्लैट ऑफर किए हैं। इन सभी में गरीबों को 17 अक्टूबर को फ्लैट मिल सकते हैं। सूत्रों का कहना है कि अभी तारीख तय होनी बाकी है। सोनीपत के अलावा प्रदेश के अन्य शहर गुड़गांव, फरीदाबाद, झज्जर, पलवल, पानीपत, रेवाड़ी, रोहतक में भी सर्वे किया जा रहा है, यहां भी डेवलपर्स ने करीब 6500 फ्लैट ऑफर किए हैं। इनकी प्रक्रिया दूसरे चरण में होगी। हालांकि आवेदन मांगे जा चुके हैं। हाउसिंग फॉर आल पिछले काफी दिनों से इसकी तैयारी में जुटा हुआ था। अब इसकी सरकार से मंजूरी मिल चुकी है। हाउसिंग फार आल के डीजी डॉ. जे गणेशन ने इस संदर्भ में कई बार विभागों और प्रदेश के अफसरों के साथ बैठक की हैं। टाउन कंट्री प्लानिंग की ग्रुप हाउसिंग योजना के तहत यह फ्लैट मुहैया कराए जाएंगे। सोनीपत के पांच डेवलपर्स ने 509 फ्लैट ऑफर किए हैं। सरकार की ओर से पहले ही गरीबों को प्लाट दिए जाने की योजना बनाई जा चुकी है, इसी माह यह प्लाट भी गरीबों को दिए जाएंगे।

2023 में हुए थे आवेदन

इन फ्लैट के लिए सरकार की ओर से वर्ष 2023 में आवेदन मांगे गए थे। यह आवेदन मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के तहत हुए थे। इनके लिए 815 लोगों ने बुकिंग कराई थी। जिनमें से 794 योग्य पाए गए। क्योंकि हाउसिंग फॉर आल की ओर से इन सबकी वेरीफिकेशन कराई गई थी।

1.50 लाख रुपए होगी फ्लैट की कीमत

जिन लोगों ने आवेदन किया था, उन्होंने 10 हजार रुपए देकर आवेदन किया है। फ्लैट का एरिया 200 स्क्वेयर फीट होगा, इसका दाम 750 रुपए स्क्वेयर फीट होगा। फ्लैट के लिए सरकार की ओर से कमेटी का गठन किया गया है। जो ड्रा निकाला जाएगा वह एचएसवीपी की साइट से ऑनलाइन होगा।

पहले घुमंतू जाति के लोगों को तवज्जो

योजना के अनुसार ड्रॉ में सबसे पहले घुमंतू जाति के लोगों को तवज्जो दी जाएगी। इसके बाद विधवा महिला, इसके बाद अनुसूचित जाति के लोगों, यदि फ्लैट शेष रह जाते हैं तो उन लोगों को मिलेंगे जिनकी आय परिवार पहचान पत्र के अनुसार एक लाख रुपए तक है, इसके बाद जिनकी आय एक से 1.40 लाख तक है और इसके बाद 1.40 से 1.80 लाख रुपए तक आय वालों को यह फ्लैट दिए जाएंगे।

6500 अन्य फ्लैट की वेरीफिकेशन जारी

गुड़गांव, फरीदाबाद, झज्जर, पलवल, पानीपत, रेवाड़ी, रोहतक में फ्लैट दिए जाने हैं, उनमें भी बड़ी संख्या में लोगों ने आवेदन किए हुए हैं। इनमें करीब 22 हजार की वेरीफिकेशन हो चुकी है। पांच हजार की चल रही है, जबकि 42 हजार की बाकी है। यानी करीब 69 हजार ने आवेदन किया है। इन शहरों में 6500 फ्लैट दिए जाने हैं।

छात्र के पिता बोले-उम्मीद थी आईआईटी से इंजीनियरिंग के बाद सुधर जाएंगे हालात

आईआईटी कानपुर में महेंद्रगढ़ के छात्र की संदिग्ध मौत, शव पंखे से लटका मिला

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

परिवार को यह उम्मीद थी कि बेटे की नौकरी लगते ही अच्छे दिन शुरू हो जाएंगे। मैंने उसे पढ़ाने के लिए बहुत मेहनत की थी। शादी में हलवाई के साथ मजदूरी करता था। वो मेरे सपने तोड़ गया। ये कहना है आईआईटी कानपुर के हॉस्टल में बुधवार को फंदा लगाने वाले इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष के छात्र धीरज के पिता का। गुरुवार को शव लेकर उसके पिता सतीश सैनी, बड़ा भाई नीरज व अन्य परिजन देर रात महेंद्रगढ़ पहुंचे। आज शव का अंतिम संस्कार किया जाएगा। सतीश बोले–"मैंने मजदूरी कर बेटे को पढ़ाया था। मेरे सपने उसी पर टिके थे। आईआईटी कानपुर ने मेरा बेटा निगल लिया। मेरा बच्चा हीरा था।"

पढ़ाई में होनहार था धीरज... धीरज का बड़ा भाई नीरज महेंद्रगढ़ में एक किरयाणा स्टोर पर काम करता है। परिवार के सपने धीरज पर टिके थे। आसपास के लोगों ने बताया कि धीरज पढ़ाई में होशियार था। उसके पिता व भाई किसी तरह घर का खर्च चला रहे थे। सतीश हलवाई का काम करते हैं। बहन मोनिका की शादी हो चुकी है। धीरज तीनों भाई-बहनों में सबसे छोटा था।

जल्द प्लेसमेंट की थी उम्मीद

घटना की सूचना मिलने के बाद पिता-भाई व अन्य परिजन गुरुवार को कानपुर पहुंचे। घर में बैठी धीरज की मौत से अनभिज्ञ दादी ने कहा कि सब काम से बाहर गए हैं। धीरज के पिता सतीश ने फोन पर बताया कि धीरज ने कुछ दिन पहले बहन से फोन कर कहा था कि वह दिसंबर में घर आएगा।

रिपोर्ट से स्पष्ट होगा कारण

बता दें कि घटना की जानकारी बुधवार को तब मिली थी, जब धीरज के कमरे से बदबू आने लगी। हॉस्टल के अन्य छात्रों ने प्रशासन को सूचित किया। कैलाशपुर के असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस (एसीपी) रंजीत कुमार ने बताया कि पुलिस मौके पर पहुंची और दरवाजा तोड़कर अंदर गई।

बरातियों की कार गहरी खाई में गिरी, 2 की मौत, 3 घायल

नाहन | पच्छाद विधानसभा क्षेत्र में नैनाटिक्कर-ढंगयार मार्ग पर बरातियों की एक कार गहरी खाई में जा गिरी। हादसा सुबह करीब 9 बजे हुआ। इस कार में सवार 5 लोगों में से 2 की मौके पर ही मौत हो गई, गंभीर रूप से तीनों घायलों को एमएमयू मेडिकल कॉलेज सुल्तानपुर अस्पताल रेफर किया है। सोलन जिला के अर्की उपमंडल के घेणा भूमती गांव से एक बरात पच्छाद विधानसभा क्षेत्र के ढंगयार जा रही थी। जब बरात नैनाटिक्कर -ढंगयार सड़क पर निकली तो किला कलांच के पास कार अनियंत्रित होकर करीब डेढ़ सौ मीटर गहरी खाई में जा गिरी। इस हादसे में वीरेंद्र दत्त और लीला दत्त की मौके पर ही मौत हो गई, घायलों में गाड़ी चालक केशव, जयदेव और कमलचंद शामिल है। इसमें जयदेव और केशव की हालत काफी गंभीर बताई जा रही है।

दसूहा में राइफल साफ करते पूर्व सैनिक को लगी गोली, मौत

दो दिन पहले जालंधर में बैंक से ड्यूटी कर लौटा था

दसूहा | दशमेश नगर में वीरवार को घर में राइफल साफ करते समय चली गोली से पूर्व सैनिक की मौत हो गई। गोली गले में लगी और सिर को दो फाड़ करते हुए बाहर निकली। पूर्व सैनिक कुलविंदर सिंह (44) पुत्र गुरदेव सिंह अढ़ाई साल पहले ही रिटायर हुआ था। घटना की जानकारी मिलते ही दसूहा पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया। वहीं मृतक के परिजनों के बयान दर्ज कर 174 तहत कार्यवाही शुरू कर दी है। डीएसपी बलविंदर सिंह जोड़ा ने बताया कि मृतक की पत्नी परमजीत कौर के बयान दर्ज किए हैं। पति कुलविंदर अढ़ाई साल पहले ही सेना से रिटायर हुआ था। वह बैंक में जरूरत पड़ने पर सिक्योरिटी गार्ड की जगह ड्यूटी देने जाता था और 2 दिन पहले ही जालंधर में ड्यूटी करके आया था। वीरवार दोपहर अपनी लाइसेंसी राइफल को घर के बरामदे में साफ कर रहा था, तभी गोली चलने की आवाज आई।

मृतक की फाइल फोटो

घर में जांच करने पहुंची दसूहा पुलिस।

भास्कर खास डीएसजीएमसी के प्रधान और पूर्व प्रधान एक-दूसरे पर लगा रहे आरोप

एसजीपीसी और डीएसजीएमसी शताब्दी समारोह को लेकर आमने-सामने, साझे कार्यक्रम की संभावना घटी

गुरमीत लूथरा | अमृतसर

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की 350वीं शहीदी शताब्दी को समर्पित देशभर में 23 से 25 नवंबर तक होने वाले धार्मिक समागमों के आयोजनों को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी आमने-सामने हो गई हैं। डीएसजीएमसी एवं एसजीपीसी द्वारा शताब्दी को समर्पित दिल्ली में सांझे तौर पर नगर कीर्तन आयोजित करने की संभावनाएं भी अब क्षीण हो गई हैं। डीएसजीपीसी के प्रधान हरमीत सिंह कालका ने इसकी वजह डीएसजीपीसी के पूर्व प्रधान एवं शिरोमणि अकाली दल बादल के दिल्ली इकाई के प्रधान परमजीत सिंह सरना को बताया है। कालका ने बताया किया कि एसजीपीसी प्रधान हरजिंदर सिंह धामी के साथ अभी तक उनकी निरंतर फोन पर जारी बातचीत के तहत नवंबर 2025 में दिल्ली स्थित गुरुद्वारा रकाब गंज से इकट्ठे नगर कीर्तन निकालने का कार्यक्रम तय किया गया था। लेकिन हाल ही में एसजीपीसी के अधिकारियों ने डीएसजीपीसी को सौंपे पत्र में हवाला दिया कि 13 अक्टूबर 2025 को संगत धार्मिक समागम एवं नगर कीर्तन के तहत गुरुद्वारा साहिब में ठहराव करना चाहती है, इसलिए लखा शाह वंजारा हाल में ठहराव के लिए उचित प्रबंध करने के साथ साथ इजाजत प्रदान की जाए।

सरना जैसे स्वार्थी लोग शिअद प्रधान को गुमराह कर सिख पंथ को विभाजित करने में जुटे :कालका

कालका ने बताया किया कि इसी दौरान शिअद बादल के लेटर पैड पर परमजीत सिंह सरना ने भी समागमों व नगर कीर्तन का हवाला देते हुए ठहराव एवं अन्य प्रबंध करने की मांग डीएसजीपीसी से की है। शिअद के पैड पर लिखे आवेदन के तहत सरना ने अलग समारोह आयोजित करने का संकेत भी दिया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में धामी नहीं बल्कि सरना जैसे स्वार्थी लोग शिअद प्रधान सुखबीर बादल को गुमराह कर सिख पंथ को विभाजित करने में जुटे हुए हैं। उन्होंने कहा कि सरना नहीं चाहते कि इकट्ठे समागम आयोजित होने की आड़ में पंथ तथा प्रबंधक कमेटियों में एकजुटता व एकता हो। उधर, सरना ने इन आरोपों को निराधार बताते हुए कहा कि कालका राजनीतिज्ञों की हाथ की कठपुतली हैं। वह नहीं बल्कि कालका अन्य पार्टियों के इशारे पर सिख पंथ में विभाजन करने को प्रयासरत हैं।

स्वास्थ्य मंत्री पर श्वेता जिंदल के लगाए आरोप निराधारःआप

चंडीगढ़| आम आदमी पार्टी की महिला नेताओं ने वीरवार को पटियाला में पूर्व जिला अध्यक्ष श्वेता जिंदल द्वारा स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह के खिलाफ लगाए गए आरापें को झूठे और निराधार बताया। प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, महिला विंग जोन प्रमुख (पटियाला पूर्व) वीरपाल कौर चहल ने कहा कि पूर्व जिला अध्यक्ष श्वेता जिंदल के आरोप बिल्कुल निराधार हैं। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह जैसे स्वच्छ छवि वाले नेता के खिलाफ झूठे आरोप लगाकर उन्होंने पार्टी को अपमानित करने की कोशिश की है। सच यह है कि उन्होंने एक गरीब दुकानदार के साथ एक छोटे से विवाद में अपने पद का दुरुपयोग किया, यहां तक कि अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए मामला दर्ज कराने तक चली गईं। जब पार्टी ने अनुशासनिक कार्रवाई की और उन्हें पार्टी से निलंबित कर दिया, तो उन्होंने डॉ. बलबीर सिंह के खिलाफ बेतुके आरोप लगाना शुरू कर दिया। चहल ने कहा कि अगर श्वेता जिंदल को वास्तव में लगता था कि उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है, तो उन्हें यह मुद्दा पहले पार्टी की महिला विंग के भीतर उठाना चाहिए था, जो मुसीबत में फंसी महिलाओं के साथ हमेशा खड़ी रहती है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में आरोपों को निराधार बताती आप की महिला नेता।

प्रेरणा

जो लोग कहते हैं कि ये नहीं किया जा सकता, उन्हें उन लोगों को नहीं टोकना चाहिए जो ये कर रहे हैं।- **जॉर्ज बर्नार्ड शॉ**

संपादकीय

अपराध के आंकड़े हमें क्या संकेत दे रहे हैं?

एनसीआरबी के ताजा आंकड़ों से कुछ सामाजिक-राजकीय गुण-दोष की झलक मिलती है। देश में हत्या की दर जो आजादी के बाद कुछ वर्षों में 2.6 प्रति लाख आबादी थी, लगातार बढ़ते हुए वर्ष 1990 में दूनी हो गई। लेकिन इसके बाद के 33 वर्षों में लगातार घटती हुई 2.3 हो गई। अमेरिका में यह दर भारत से तीन गुनी है। फिर भी फिर भी भारतीय समाज में लम्पटता और आवारगी (नशे में तेज रफ्तार गाड़ी चलाकर लोगों को कुचलना या मारपीट करना) बढ़ी हैं। मोबाइल में गंदे वीडियो और नशे की सहज उपलब्धता से महिलाओं और बच्चों के प्रति आचरण आपराधिक होता गया है। साइबर क्राइम में भी उफान आया। आमतौर पर हत्या की घटना पुलिस छुपा नहीं पाती, लेकिन महिलाओं (और बच्चों) पर अत्याचार, दुष्कर्म या अन्य आपराधिक कृत्यों में कई राज्यों में पुलिस रिपोर्ट दर्ज नहीं करती या रिपोर्ट लिखने में उनकी जघन्यता कम कर देती है। एक अन्य उदाहरण देखें। रिपोर्ट के अनुसार आईपीसी क्राइम संख्या (प्रति एक लाख आबादी) में दिल्ली सबसे अव्वल है और केरल दूसरे स्थान पर, जबकि झारखण्ड सबसे नीचे। लेकिन स्थिति उलट जाती है जब हत्या की दर झारखण्ड में दिल्ली से डेढ़ गुना और केरल से तीन गुना पाई गई। बाल-विवाह, भ्रूण हत्या, स्त्री-प्रताड़ना आदि सामाजिक दोष हैं, जो कानून से ज्यादा बच्चों में संस्कार देने से खत्म हो सकते हैं।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

जिससे अपमान हुआ, उसी को सफलता में बदल दें

अपमान सभी का होता है। कभी हम किसी का अपमान कर जाते हैं और दूसरों के द्वारा तो अपमानित होते ही रहते हैं। अपमान का भी जवाब दिया जा सकता है। दो तरीके हैं। पहला, सम्मान प्रकट कर दें। और दूसरा, जिस घटना के कारण अपमान हुआ, उसको सफलता में बदल दें। यह भी अपनी बेइज्जती का बड़ा जवाब बन जाएगा। क्योंकि, जैसे ही कोई हमारा अपमान करता है तो करने वाला तो अहंकार से प्रेरित था ही, हमारे भी अहंकार को चोट लगती है। और अगर हम अहंकार को सहलाने में ऊर्जा लगाएंगे तो अपमान का जवाब ठीक से नहीं दे पाएंगे। रावण ने अपनी सभा में हनुमान जी का जमकर अपमान किया। हनुमान जी ने दोनों रास्ते अपनाए। पहले तो रावण को सम्मान दिया। सुंदरकांड में उसका वर्णन है। और उसके बाद देखा कि रावण को सम्मान देने का कोई फायदा नहीं है तो उन्होंने लंका जला दी। लंका दहन सफलता के सर्वोच्च मापदंड में गिना जाता है। और रावण को जवाब मिल गया। हम भी अपमान के प्रति ये दो काम कर सकते हैं। • Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

बामुलाहिजा • ट्रम्प, मुनीर और शरीफ की ओवल ऑफिस तस्वीर में हमारे लिए है एक बड़ा संकेत...

अमेरिका और पाक के बीच क्या चल रहा है?

कूटनीति

शेखर गुप्ता
एडिटर-इन-चीफ, 'द प्रिन्ट'
@ShekharGupta

बीच में ट्रम्प, उनके एक तरफ शाहबाज शरीफ और दूसरी तरफ आसिम मुनीर- यह तस्वीर भारत में हम लोगों के लिए भू-राजनीति की सबसे महत्वपूर्ण छवि है। इसमें कई बातें हैं। एक तो यह कि भारत-अमेरिका रिश्ते के मुकाबले पाकिस्तान-अमेरिका रिश्ता ज्यादा पुराना और औपचारिक रूप से ज्यादा मजबूत रहा है। एबटाबाद में लादेन को ढूंढ निकालने और उसकी हत्या के बाद पाकिस्तान के प्रति अमेरिका का जज्बा भले ठंडा पड़ गया हो लेकिन दोनों में संबंध बना रहा।

अमेरिका ने पाकिस्तान को कभी अपने गैर-नाटो दोस्त देशों की सूची से हटाया नहीं। और भारत कभी इस सूची में दर्ज नहीं हो सका। चाहे अमेरिका का राष्ट्रपति कोई भी बने, वह भारत के आकार, हैसियत, आर्थिक वृद्धि की रफ्तार, स्थिरता के कारण उसे अहमियत देता रहेगा। लेकिन फिलहाल जो तस्वीर है, वह इस उपमहादेश के मामले में अमेरिका की सोच की वास्तव में पुरानी सामान्य स्थिति की ओर वापसी दर्शाती है। 2016 में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि पाकिस्तान को कूटनीतिक रूप से अलग-थलग कर देना चाहिए। आज, इस इरादे को टाल दिया गया है।

ज्यादा दिन नहीं हुए जब पाकिस्तान का एक सेनाध्यक्ष अपने प्रधानमंत्री के साथ व्हाइट हाउस पहुंचा था। यह बात जुलाई 2019 की है, जब जनरल कमर जावेद बाजवा इमरान खान के साथ वहां गए थे। लेकिन उस समय साफ दिख रहा था कि प्रधानमंत्री आगे थे और सेनाध्यक्ष उनके पीछे बैठे थे। आज, ऐसा हो ही नहीं सकता कि पाकिस्तान के निर्वाचित प्रधानमंत्री किसी सरकारी दौरे पर विदेश गए हों और उनके फील्ड मार्शल उनके बराबर में साथ न बैठे हों। यह हमने तियानजिन में देखा, रियाद और दोहा में भी देखा। पाकिस्तान को तीतर या बटेर में से एक को चुनना होता है कि वह फौज की हुकूमत चाहता है या चुनी हुई सरकार की। 1993 में, बहुमत में होने के बाद भी सत्ता से हटाए जाने के बाद रावलपिंडी से लाहौर लौटते हुए शरीफ ने कहा था कि थोड़ा यह भी, थोड़ा वह भी नहीं चलेगा। लेकिन आज, व्हाइट हाउस में त्रिमूर्ति की तस्वीर तीन बातें कहती हैं।

पहली : पाकिस्तान में 'सिस्टम' यह है कि नियंत्रण फौज का रहेगा और एक आज्ञाकारी प्रधानमंत्री होगा जिसे वह 'निर्वाचित' करवाएगी। पहले, फौजी तानाशाहों ने 'तयशुदा नतीजे' वाले चुनावों में पार्टी-विहीन सरकार बनाने के प्रयोग किए। जिया और जुनेजो, मुशर्रफ और शौकत अजीज को याद कीजिए। अय्यूब और याह्या ने भी भुट्टो को अपने गैर-फौजी मुखौटे की तरह रखा।

दूसरी : नवाज शरीफ साहसी तो थे मगर उनकी यह उम्मीद नेकनीयती भरा मुगालता था कि कई प्रयोगों के बाद एक दिन ऐसा आएगा, जब जम्हूरियत पाकिस्तान में

अमेरिका सभी को जिस 'निर्भर देश' वाले रूप में देखना चाहता है, वैसा भारत कभी बन नहीं सकता। लेकिन पाक उसके लिए ऐसा ही देश रहा है। दोनों देश एबटाबाद के बाद सामान्य स्थिति बहाल करने में कामयाब हुए हैं।

भी उसी तरह कायम हो जाएगी, जैसे भारत में हुई है। वे भारत के साथ सामान्य रिश्ते की बहाली को इसकी कुंजी मानते थे। आज वे अपनी जिंदगी के सबसे दुखद दौर से गुजर रहे हैं और लाहौर के पास रायविंड में महलनुमा घर में अपने नाकाम सपने का गम मना रहे हैं। उनके भाई आज प्रधानमंत्री हैं और बेटी उस पंजाब सूबे की मुख्यमंत्री हैं, जहां पाकिस्तान की 60 फीसदी आबादी रहती है। यह सब उनमें हताशा और अकेलापन का वैसा ही भाव भरता होगा, जैसा तख्ता पलटने के बाद रंगून में पड़े बहादुर शाह जफर के मन में भर रहा था।

तीसरी : पाकिस्तान क्या सोचता है इसे समझने के लिए आप खुद से यह सवाल कीजिए कि वह अपने नेताओं को क्यों चुनाव जिताता रहा है (कभी-कभी बड़े बहुमत के साथ), और फिर फौजी जनरल जब उन्हें गद्दी से उतार देते हैं तब उसे कबूल क्यों कर लेता है, बल्कि इसका स्वागत क्यों करता है? यह मुल्क, इसकी विचारधारा, अपने वजूद के बारे में इसकी समझ, और राष्ट्रीय गौरव की इसकी भावना फौजी तानाशाही को कबूल करने के लिए ही बनी है। पाकिस्तान के लोग जिन्हें जिताते हैं, उन नेताओं के अधीन खुद को सुरक्षित नहीं महसूस करते। उनके सबसे चहेते नेता भी जब जेल में बंद किए जाते हैं, तब भी वे घरों में बैठे रहते हैं। हमने देखा है कि वहां फौज किस तरह अलोकप्रिय होती रही है लेकिन फिर नाटकीय रूप से वापसी भी करती रही है। वह एक साधारण-सा नुस्खा अपनाती रही है। भारत के साथ युद्ध जैसे हालात बना दो, फिर लोग यही कहेंगे कि उनकी रक्षा फौज के सिवाय और कौन कर सकता है। जैसा 26/11, और अब पहलगाम के साथ हुआ है। ऐसे हर मोड़ पर फौज की साख गर्त में रही है। भारत से खतरे की थोड़ी-सी भी आशंका पुरानी स्थिति या 'न्यू नॉर्मल' नहीं, बल्कि शाश्वत वास्तविकता को बहाल करती है।

इसके बाद यह भी नोट कीजिए कि पाकिस्तान में चुनाव जीतकर सत्ता हासिल करने वाले लगभग हर नेता ने भारत के साथ सुलह की एक कोशिश जरूर की। और ठीक इसी वजह से ऐसी हर सरकार को बरखास्त किया गया, देशनिकाला दिया गया, या जेल में डाल दिया गया। और एक नेता की तो दोबारा चुनाव जीतने की उम्मीद के कारण हत्या कर दी गई। बात मुनीर, मुशर्रफ, जिया या अय्यूब की नहीं है। एक संस्थान के तौर पर इस फौज को भारत के साथ अमन गवारा नहीं हो सकता। वह युद्ध नहीं जीत सकती, लेकिन जनता में असुरक्षा का स्थायी डर उसे सत्ता में तो रख ही सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मुद्दा • ताइवान को वैश्विक एविएशन समूह का सहभागी बनने का अधिकार है, चीन इसे रोक नहीं सकता...

आखिर कब तक ताइवान पर दादागिरी करता रहेगा चीन?

भू-राजनीति

चेन शि-काई
ताइवान के परिवहन एवं संचार मंत्री

अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (आईसीएओ) हर तीन वर्ष में अपनी बैठक आयोजित करता है, जिसमें वैश्विक नियमों और मानकों को स्थापित करने के लिए बहुपक्षीय चर्चा होती है। ये निष्कर्ष दुनिया भर में नागरिक उड्डयन के सुरक्षित और व्यवस्थित विकास को सुनिश्चित करते हैं। दुर्भाग्यवश, चीन के दबाव में ताइवान को इसमें शामिल नहीं किया जाता।

वर्तमान में इसका 42वां सत्र कनाडा के मॉन्ट्रियल में चल रहा है। आईसीएओ की दीर्घकालिक रणनीतिक योजना 'सुरक्षित आकाश, सतत भविष्य' इसी दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सहयोग, स्थिरता और समावेशन पर जोर देती है ताकि एक लचीली और टिकाऊ अंतरराष्ट्रीय विमानन प्रणाली बनाई जा सके।

हाल के घटनाक्रम जैसे भारत और चीन के बीच सीधी उड़ानों की घोषणा से पूर्वी एशियाई क्षेत्र में हवाई यातायात बढ़ेगा। इससे ताइपे सहित सभी उड़ान सूचना क्षेत्रों (एफआईआर) में निर्बाध समन्वय और सुरक्षा की आवश्यकता और बढ़ जाती है। ऐसे में हमारा आईसीएओ से आग्रह है कि वह ताइवान को अपनी बैठकों और क्षेत्रीय विमानन सुरक्षा तंत्र में शामिल करे।

ताइपे उड़ान सूचना क्षेत्र (एफआईआर) पूर्वी एशिया में हवाई यात्रा के सबसे व्यस्त क्षेत्रों में से एक को कवर करता है। यह आईसीएओ के 300 से अधिक एफआईआर नेटवर्कों का अनिवार्य हिस्सा है। ताइवान का नागरिक उड्डयन प्रशासन (सीएए) इसकी देखरेख करता है। सीएए सूचना सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है और इस क्षेत्र से गुजरने वाली सभी उड़ानों की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने हेतु हवाई मार्गों का प्रबंधन करता है।

जोखिम और सुरक्षा प्रबंधन- दोनों ही दृष्टिकोणों से- आईसीएओ को ताइवान के सीएए को अन्य एफआईआर एजेंसियों के समान भागीदारी देनी चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि ताइपे एफआईआर अन्य आईसीएओ इकाइयों से सीधे संवाद कर सके और सूचना का समय पर आदान-प्रदान बना रहे।

ताइपे एफआईआर पर अधिकार न होने के बावजूद, चीन ने हाल में अस्थायी खतरे वाले क्षेत्र घोषित किए हैं, हवाई क्षेत्र आरक्षित किया है और सैन्य अभ्यास क्षेत्र भी स्थापित किए हैं। यह आईसीएओ मानकों का उल्लंघन है, जिनके अनुसार ऐसे उपायों की सूचना कम से कम 7 दिन पहले देना आवश्यक है। इससे ताइपे और आसपास के एफआईआर में उड़ान सुरक्षा प्रभावित हुई है।

आज वैश्विक विमानन को जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, पावर बैलेंस और अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीतिक संघर्षों जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में ताइवान, जो बड़े पैमाने के हवाई यातायात का संचालन करता है, अंतरराष्ट्रीय विमानन समुदाय में सक्रिय भूमिका निभाने का प्रयास कर रहा है। वह ताइपे एफआईआर के महत्व की मान्यता और आईसीएओ में भागीदारी की भी मांग कर रहा है, ताकि उसकी सुरक्षा संरचना और मजबूत हो सके।

एविएशन सुरक्षा किसी एक देश की चिंता नहीं, बल्कि वैश्विक जिम्मेदारी है। दशकों से सीएए ने ताइपे एफआईआर में उच्चतम सेवा और सुरक्षा मानकों को बनाए रखा है और आईसीएओ के दिशा-निर्देशों का पालन किया है। ताइवान क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा की साझी जिम्मेदारी निभा रहा है। आईसीएओ में भागीदारी से वह अन्य देशों के साथ मिलकर सुरक्षा सहयोग को और मजबूत कर सकेगा।

अब समय आ गया है कि आईसीएओ ताइवान को भी अपने समूह में शामिल करे!

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

ब्रांड से सबक | अमेरिकी मल्टीनेशनल कॉफी चेन

2008 में 80% गिरे थे स्टारबक्स के शेयर, एक साल में 900 स्टोर हुए थे बंद, अब 86 देशों में कारोबार

2008, स्टारबक्स कंपनी के सीईओ हार्वर्ड शुल्ट्ज ने एक पत्र अपने कर्मचारियों को लिखा, जिसमें उन्होंने कहा- 'पच्चीस साल पहले, मैंने पाइक प्लेस मार्केट में हमारी पहली दुकान खोली थी। उस दिन से हमने हर दिन अपने ग्राहकों को नया अनुभव देने की कोशिश की। आज जब हम मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं तो मैं आप सभी से यही कहना चाहता हूं कि हमारी असली ताकत हमारी टीम में है। अगर हम अपने मूल्यों को याद रखें और ग्राहकों के अनुभव पर ध्यान दें, तो इस संकट से बाहर आ सकते हैं।' हार्वर्ड शुल्ट्ज का कर्मचारियों को लिखा गया यह पत्र स्टारबक्स में आए आर्थिक संकट की जीती जागती तस्वीर था। कंपनी लगातार घाटे में जा रही थी। यह घबराहट और डर था कंपनी के अंधाधुंध विस्तार से उपजे आर्थिक संकट का। स्टारबक्स के आउटलेट्स लगातार घाटे में जा रहे थे। नतीजा यह हुआ कि कंपनी ने 2008 और 2009 में 900 से ज्यादा आउटलेट्स बंद कर दिए। उस समय कंपनी करीब 43 देशों में व्यापार कर रही थी। यह बताता है कि अगर सही योजना न हो तो बड़ी कंपनियां भी डूबने लगती हैं। हालांकि रीस्ट्रक्चरिंग, कर्मचारियों का प्रशिक्षण और डिजिटलाइजेशन जैसे आधुनिकीकरण से कंपनी ने न केवल खुद को डूबने से बचाया बल्कि फिर शीर्ष पर पहुंची। आज ब्रांड से सबक में पढ़िए कहानी स्टारबक्स की।

सबक क्यों- आर्थिक संकट ऐसा था कि कंपनी आउटलेट्स बंद करने लगी थी। अब हर दिन करीब 10 करोड़ ग्राहक यहां आते हैं।

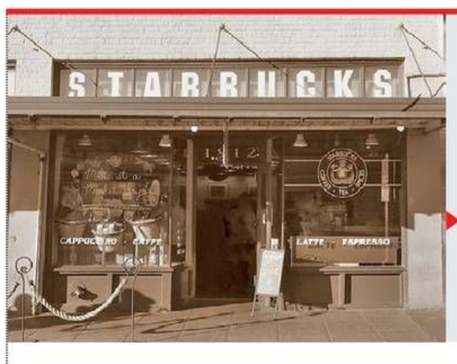

3.61 लाख कर्मचारी हैं दुनियाभर में स्टारबक्स के। 4500 से अधिक भारत में हैं।

94 हजार डॉलर प्रति कर्मचारी के हिसाब से राजस्व पैदा किया था स्टारबक्स ने 2023 में।

स्टारबक्स की पहली शॉप अमेरिका के सिएटल में 1912-पाइक प्लेस नामक स्थान पर 1971 में खुली थी। शुरू में यह दुकान केवल उच्च गुणवत्ता के कॉफी बीन्स बेचती थी।

ऐसे पिछड़ी थी स्टारबक्स

1. **ओवर एक्सपांशन-** कंपनी ने 2007 तक करीब 13 हजार आउटलेट्स दुनियाभर में खोल दिए थे। इस जल्दबाजी में कई बार तो स्थान ही गलत चुन लिए या बहुत पास-पास आउटलेट्स खुल गए, जिससे उसकी बिक्री खासी प्रभावित हुई।
2. **वैश्विक मंदी-** 2008 की आर्थिक मंदी ने कॉफी की खपत 29% तक कम कर दी। कंपनी के शेयरों में करीब 80% की गिरावट आ गई। स्टारबक्स का 37 डॉलर का शेयर 8 डॉलर से नीचे पहुंच गया।
3. **प्रतिस्पर्धा का दबाव-** इस दौरान डंकिन डोनट्स और मैककैफे जैसी कंपनियों ने सस्ती कॉफी ऑफर की, जिससे स्टारबक्स का प्रीमियम मार्केट प्रभावित हुआ। इसका मार्केट शेयर 5% तक गिर गया।
4. **कर्मचारियों में असंतोष-** आउटलेट्स बंद करने और छंटनी के कारण कर्मचारियों में असंतोष बढ़ा, जिससे कार्यक्षमता और गुणवत्ता प्रभावित हुई।

इस तरह की वापसी

1. **हार्वर्ड शुल्ट्ज की वापसी-** 1987 में स्टारबक्स को खरीदकर उसके सीईओ बनने वाले हार्वर्ड शुल्ट्ज 2000 में पद छोड़कर बोर्ड के चेयरमैन बन गए, लेकिन कंपनी की खराब हालत को देखते हुए 2008 में दोबारा सीईओ के रूप में कंपनी संभाली।
2. **कर्मचारियों का प्रशिक्षण -** शुल्ट्ज ने 2008-09 में करीब 977 स्टोर्स बंद किए। 1.35 लाख कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया, 2009 में बिक्री 10 प्रतिशत तक बढ़ गई।
3. **डिजिटल इनोवेशन-** कंपनी ने 2011 में मोबाइल से ऑर्डर लेने शुरू किए। मोबाइल एप और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बड़ी संख्या में ग्राहक जुड़ने लगे, जिससे कंपनी का राजस्व बढ़ने लगा।
4. **ग्लोबल एक्सपांशन-** स्टारबक्स ने 2010 में चीन और भारत में विस्तार किया। इससे मार्केट शेयर करीब 20 प्रतिशत तक बढ़ गया।

उपन्यास के पात्र से चुना गया था स्टारबक्स का नाम

शुरुआत : तीन दोस्तों ने मिलकर रखी की थी स्टारबक्स की नींव

स्टारबक्स की स्थापना 1971 में गॉर्डन बॉवकर, जेरी बाल्डविन और जेव सिगल ने सिएटल, वॉशिंगटन में की थी। तीनों ने पाइक प्लेस मार्केट में एक छोटी-सी दुकान खोली, जहां गुणवत्ता वाली कॉफी बींस बेची जाती थीं। उनका उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली कॉफी प्रदान करना और कॉफी संस्कृति को बढ़ावा देना था। 1987 में हार्वर्ड शुल्ट्ज ने इसे खरीद लिया।

गिरावट : 2006 में 2200 आउटलेट्स खोले, शुरू हुआ घाटा

स्टारबक्स ने तेजी से विस्तार किया। 2006 में ही इसने 2,199 आउटलेट दुनिया भर में खोल दिए। 2008 में इनकी संख्या 16,680 हो गई जो कि 2006 में 12,440 थी। इतनी बड़ी संख्या में आउटलेट्स खुलने से गुणवत्ता घटी। इसके बाद 2008 में आई मंदी ने ब्रिकी को और घटाया, जिसके चलते कंपनी तेजी से घाटे में जाने लगी।

ऐसे पड़ा नाम : स्टारबक्स नाम अमेरिकी उपन्यासकार हरमन मेलविल के प्रसिद्ध उपन्यास 'मॉबी-डिक' के पात्र से लिया गया था।

सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी : स्टारबक्स के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी डंकिन डोनट्स, मैककैफे और कोस्टा कॉफी हैं, ये स्थानीय सस्ती कॉफी से इसे चुनौती देते हैं।

वर्तमान स्थिति

आज 8.5 लाख करोड़ रुपए मूल्य की कंपनी

2025 में स्टारबक्स का मार्केट कैप करीब 8.50 लाख करोड़ रुपए है। वर्तमान में कंपनी के 86 देशों में 40,199 से अधिक आउटलेट्स हैं, जिनमें करीब 500 भारत में हैं। कंपनी का राजस्व करीब 3500 करोड़ डॉलर है। स्टारबक्स के इन आउटलेट्स में रोजाना करीब 10 करोड़ ग्राहक आते हैं। कंपनी की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार स्टारबक्स ने 2030 तक आउटलेट्स की संख्या 55 हजार और राजस्व 5000 करोड़ डॉलर करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

पीपुल भास्कर | अभिषेक शर्मा | भारतीय क्रिकेटर

सुबह 4 बजे ध्यान लगाते हैं, स्विमिंग पसंद, पढ़ाई में भी 90 फीसदी से ज्यादा अंक लाते थे अभिषेक

लगभग 12 साल पुरानी बात है। पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन ने एक कैंप लगाया, जिसमें अंडर-12 और अंडर-14 की दो टीमें बनाई गईं। इसका मकसद था नए बच्चों को आगे लाना। इसके हेड थे डीपी आजाद जो कपिल देव के गुरु थे। इसके लिए पूरे पंजाब से कुल 30 बच्चों को सिलेक्ट किया गया था। कैंप के दौरान इन 30 बच्चों में से केवल दो बच्चे ऐसे निकले, जिनके बारे में डीपी आजाद ने भविष्यवाणी की कि ये दोनों भारत के लिए खेलेंगे और ओपनिंग करेंगे। उन्हीं दो बच्चों में से एक हैं अभिषेक शर्मा, जो आज विस्फोटक बल्लेबाजी से चर्चा का विषय बने हुए हैं।

अभिषेक के पिता राज कुमार बताते हैं कि जब अभिषेक अंडर-14 में थे वे उन्हें 130-140 की रफ्तार वाली गेंदें खिलाते थे। पर अभिषेक बोलते कि और तेज गेंद फेंको। राजकुमार बताते हैं चूंकि वे खुद क्रिकेट खेलते थे। ऐसे में उनकी किट और अन्य सामान घर पर पड़ा रहता था। अभिषेक जब तीन-चार साल के थे तो उनका बैट उठाने की कोशिश करते, लेकिन उठा नहीं पाते। ऐसे में उन्होंने प्लास्टिक का बैट लाकर दे दिया, जिससे वे खूब शॉट लगाते। अभिषेक तोतली आवाज में बोलते पापा बॉल फेंको।

अभिषेक मैच के दौरान अपनी एकाग्रता को बनाए रखने के लिए सुबह 4 बजे उठकर ध्यान लगाते हैं। इसके लिए जल्दी सोते हैं। उन्हें तैराकी पसंद है। क्रिकेट के अलावा वे गोल्फ खेलना पसंद करते हैं। फैशन में नए ट्रेंड अपनाते हैं, खासकर स्नीकर्स। उन्हें डॉग्स पसंद हैं। घर पर एक डॉग भी पाल रखा है। खाने में राजमा-चावल उनका पसंदीदा है।

चर्चा में क्यों- एशिया कप 2025 में मैन ऑफ द सीरीज चुने गए हैं उन्होंने 200 के स्ट्राइक रेट से कुल 314 रन बनाए हैं।

अभिषेक को खाली समय में गोल्फ खेलना पसंद है।

अभिषेक की बहन कोमल शर्मा बताती हैं कि उन्होंने अपनी शादी के गिफ्ट के रूप में भाई से एशिया कप ट्रॉफी मांगी थी। कोमल की 3 अक्टूबर को लुधियाना में शादी है।

जन्म : 4 सितंबर 2000 (25 वर्ष) अमृतसर, पंजाब
शिक्षा : डीएवी कॉलेज अमृतसर से स्नातक
सम्पत्ति : 15 करोड़ रु. (विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स)

शुरुआत
क्रिकेटर रहे पिता, पहले कोच भी वही

अभिषेक शर्मा का जन्म अमृतसर में राज कुमार शर्मा और मंजू शर्मा के घर हुआ था। पिता क्रिकेटर थे, जिन्होंने फर्स्ट क्लास क्रिकेट खेला है। अभिषेक को क्रिकेट की शुरुआती कोचिंग भी उन्होंने ही दी। अभिषेक ने शुरुआती पढ़ाई दिल्ली पब्लिक स्कूल, अमृतसर से की है। उनकी दो बहनें कोमल और सानिया शर्मा हैं। कोमल फिजियोथेरेपिस्ट हैं।

युवराज से मुलाकात
रणजी ट्रॉफी की वजह से दोनों आए साथ

युवराज सिंह अपनी बीमारी को हराकर भारतीय टीम में वापसी के लिए रणजी खेल रहे थे। अंडर-19 से अभिषेक और शुभमन को उनके पास भेजा गया। एक मैच में उनकी टीम के तीन-चार खिलाड़ी जल्दी आउट हो गए। तब अभिषेक बैटिंग के लिए पहुंचे। युवराज 40 पर खेलते रहे और उन्होंने तेज-तर्रार 100 जड़ दिए। यहीं युवराज ने उन्हें ट्रेनिंग देने की इच्छा जताई।

करियर
डेब्यू के पहले-दूसरे मैच में ही किया कमाल

2015-16 की विजय मर्चेंट ट्रॉफी में पंजाब के लिए खेले पहले मैच में ही शतक जमा दिया था। 2018 में आईपीएल खेलना शुरू किया। दिल्ली डेयरडेविल्स के लिए पहले मैच में ही 19 गेंदों में 46 रन जड़ दिए। अभी वे सनराइजर्स हैदराबाद के लिए खेल रहे हैं। भारतीय टीम के लिए 2024 में जिम्बाब्वे के खिलाफ टी-20 सीरीज में डेब्यू किया। दूसरे मैच में शतक जड़ा।

रोचक : लिस्ट-ए क्रिकेट में मध्य प्रदेश के खिलाफ 42 गेंदों में शतक जड़ चुके हैं

खास : म.प्र. के खिलाफ बनाया है सबसे तेज शतक

- क्रिकेट के अलावा अभिषेक पढ़ाई में भी होनहार थे। वे हर क्लास में 90 प्रतिशत या अधिक अंक लाते थे।
- 28 फरवरी 2021 को मध्य प्रदेश के खिलाफ लिस्ट-ए क्रिकेट में 42 गेंदों में शतक बनाया था, जो कि किसी भी भारतीय खिलाड़ी द्वारा बनाया गया सबसे तेज शतक है।

उपलब्धि : आईसीसी रैंकिंग में सर्वाधिक पॉइंट वाले खिलाड़ी

- एशिया कप के दौरान अभिषेक के टी-20 में 931 रेटिंग पॉइंट्स हो गए थे, जो किसी बल्लेबाज के सर्वाधिक पॉइंट्स हैं। आईसीसी ने 14 साल पहले रेटिंग शुरू की थी। वर्तमान में अभिषेक टी-20 के नंबर एक बल्लेबाज हैं।
- 2018 में अंडर-19 वर्ल्डकप जिताने में महत्वपूर्ण भमिका निभाई।

विवाद भी : रिलेशनशिप में रही मॉडल ने कर लिया था सुसाइड

- 20 फरवरी 2024 को तान्या नाम की एक मॉडल ने सूरत, गुजरात में सुसाइड कर लिया था। पुलिस ने जांच में पाया कि तान्या ने आखिरी कॉल अभिषेक को की थी।
- 19 मई को आईपीएल में एलएसजी से मैच के दौरान विपक्षी खिलाड़ी दिग्वेश सिंह राठी से भिड़ने पर उन्हें 25% मैच फीस गंवानी पड़ी थी।